Registration No. : UPHIN/2013/64893

रोहिताश्व पत्र

खण्ड 10 | अंक 39 | त्रैमासिक | जनवरी–मार्च 2023 | पौष–फाल्गुन 2079

सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र जयन्ती समारोह, लखनऊ 2023 विशेषांक

मा0 ब्रजेश पाठक जी, उपमुख्यमंत्री, उ.प्र.

मा0 राजनाथ सिंह जी, केन्द्रीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार

मा0 मुकेश शर्मा जी, एम.एल.सी.

मा0 नीरज बोरा जी, विधायक

मा0 संयुक्ता भाटिया जी, मेयर

श्रीमती रिचा रस्तोगी, IRS

हरिश्चन्द्र वंशीय रस्तोगी समाज, लखनऊ द्वारा गत 12 जनवरी 2023 को सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द जयंती का आयोजन ''हमारा अपना उत्सव'' के रूप में अटल बिहारी बाजपेई साइन्टिफिक कन्वेंशन सेंटर में अत्यंत भव्य रूप में गरिमापूर्ण ढ़ग से आयोजित किया गया।

(कार्यक्रम का पूर्ण विवरण एवं उत्सव को कैमरे की नजर से अंदर के पृष्ठों पर देखें)

हरिश्चन्द्र दर्पण समिति, लखनऊ

पंजीकृत (संख्या 598/2012–13) द्वारा प्रकाशित

''एक संकल्प, एक आवाज – संगठित, विकसित हरिश्चन्द्र वंशीय समाज''

हरिश्चन्द्र दर्पण समिति संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती अलका 'धर्मेन्द्र' रस्तोगी, अशर्फाबाद, लखनऊ
2. श्री रतनदीप रस्तोगी, आगामीर ड्योढ़ी, लखनऊ
3. डा. विनोद चन्द्र रस्तोगी, कानपुर
4. श्री मदन मोहन रस्तोगी, राजाजीपुरम्, लखनऊ
5. स्व0 प्रो. उमेश प्रसाद रस्तोगी, महानगर, लखनऊ
6. श्रीमती मीनाक्षी 'गोविंद' रस्तोगी, मुकुन्द विलास, न्यू रस्तोगी टोला
7. डा. स्वतंत्र 'नीलम' रस्तोगी, गोमती नगर, लखनऊ
8. श्री बृजेश कुमार रस्तोगी, बाग मक्का, लखनऊ
9. श्रीमती अंजली 'कृष्ण जीवन' रस्तोगी, न्यू रस्तोगी टोला, लखनऊ
10. श्रीमती मंजू 'श्याम' रस्तोगी, रस्तोगी टोला, राजाबाजार, लखनऊ
11. डॉ. अश्वनी रस्तोगी, बाबूगंज, डालीगंज, लखनऊ
12. श्री कैलाश नाथ रस्तोगी, अलीगंज, लखनऊ
13. स्व0 श्री प्रेम कुमार रस्तोगी, ठाकुरगंज, लखनऊ
14. स्व0 प्रो0 राम बहादुर रस्तोगी, मेरठ
15. श्री आलोक रस्तोगी, सुपुत्र स्व0 प्रताप कृष्ण रस्तोगी उर्फ लल्लन बाबू, दुगांवा, लखनऊ
16. श्रीमती सुनीता रस्तोगी (लाल दुकान वाली) खुर्रमनगर, लखनऊ
17. श्री नवनीत लाल रस्तोगी, सुभाष मार्ग, लखनऊ
18. स्व0 प्रो0 रघुनाथ प्रसाद रस्तोगी, अशर्फाबाद, लखनऊ
19. श्री दीपक रस्तोगी, हैवलक रोड, लखनऊ
20. श्रीमती बाला 'भूपेन्द्र' रस्तोगी, मनोहरनगर, ठाकुरगंज, लखनऊ
21. श्री सलिल रस्तोगी, मॉडल हाउस, लखनऊ
22. श्री प्रदीप कुमार रस्तोगी, प्रभू आश्रम, राजाबाजार, लखनऊ
23. श्री सुधाकर रस्तोगी, शास्त्री नगर, लखनऊ
24. श्रीमती मीरा 'कमल कृष्ण' रस्तोगी, अलीगंज, लखनऊ
25. स्व0 मथुरेश रस्तोगी, अशर्फाबाद, लखनऊ
26. श्री राजीव रस्तोगी, गुरूमुख भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ
27. श्री श्याम कुमार रस्तोगी, भवाना सिंह शिवाला मार्ग, लखनऊ
28. श्री एस.के. रस्तोगी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
29. डा. पाली–डा. दीप्ति रस्तोगी, कृष्णा नगर, इन्दौर
30. विकास रस्तोगी, गढ़ी पीर खाँ, ठाकुरगंज, लखनऊ
31. मयंक रस्तोगी राजेश रस्तोगी 'वास्तुखण्ड', गोमती नगर, लखनऊ
32. स्व0 गिरराज रस्तोगी, 222/4च,न्यू रस्तोगी टोला, राजा बाजार, लखनऊ
33. श्री सुनील कुमार रस्तोगी } सपुत्र स्व. कुसुम एवं स्व. बाबू राम
34. श्री राजेश रस्तोगी } रस्तोगी, दारागंज, इलाहाबाद
35. श्री विमर्श रस्तोगी, सब्जी मंडी, चौक, लखनऊ
36. श्रीमती पुष्पा 'अजय' रस्तोगी, अलीगंज, लखनऊ
37. डा. श्रीप्रकाश रस्तोगी, ऐशबाग, लखनऊ
38. स्व0 जगजीवन लाल रस्तोगी, नादान महल रोड, लखनऊ
39. श्रीमती बीना ''गौरीशंकर'' रस्तोगी, अशर्फाबाद, लखनऊ
40. श्री प्रमोद रस्तोगी सु. श्री प्रयाग नारायन, अशर्फाबाद, लखनऊ
41. श्री प्रकाश चन्द्र रस्तोगी, 17 समर विहार, आलमबाग, लखनऊ
42. डा. उज्जवल पुत्र डा. विनोद चन्द्र रस्तोगी, कानपुर
43. श्रीमती राजश्री 'सुनील कुमार रस्तोगी' नोयडा
44. डॉ. मीना रस्तोगी पत्नी स्व.उमेश प्रसाद रस्तोगी,महानगर, लखनऊ
45. श्री गिरीश कुमार रस्तोगी, कटारी टोला, चौक, लखनऊ
46. मे. नवनीत लाल बालकृष्ण ज्वैलर्स, सर्राफा बाजार, चौक, लखनऊ
47. श्री विजय रस्तोगी, पुरानी सब्जी मंडी, चौक, लखनऊ
48. श्री पुनीत रस्तोगी, पुत्र श्री काशीनाथ, ठाकुरगंज, लखनऊ
49. श्री अविरल रस्तोगी पुत्र श्री अनिल रस्तोगी, ठाकुरगंज, लखनऊ
50. श्रीमती उर्मिला 'सुशील कुमार'संते' रस्तोगी, राजाबाजार, लखनऊ
51. श्री अनुज रस्तोगी पुत्र विनय कुमार, गड़बड़झाला, अमीनाबाद, लखनऊ
52. श्रीमती शैल 'सुधीर चन्द्र' रस्तोगी, अशर्फाबाद, लखनऊ
53. श्री कृष्ण रतन रस्तोगी, CA, जॉपलिंग रोड, लखनऊ
54. श्री तन्मय रस्तोगी, तनु विहार, पुराना हैदरगंज, लखनऊ
55. श्रीमती कुमकुम 'अशोक' रस्तोगी, सोंधी टोला, चौक, लखनऊ
56. श्री धनंजय रस्तोगी, C/o नन्द किशोर रस्तोगी, 57, सुभाषमार्ग, लखनऊ
57. डॉ. राजीव रस्तोगी, शालीमार गैलेन्ट, महानगर, लखनऊ
58. श्री रोहित रस्तोगी, शालीमार गैलेन्ट, महानगर, लखनऊ
59. श्री गिरीश रस्तोगी, शालीमार गैलेन्ट, महानगर, लखनऊ
60. श्रीमती कविता 'अजय कुमार रस्तोगी' अलीगंज, लखनऊ
61. कमोडोर अतुल रस्तोगी, वेलिंगटन नीलगिरीज
62. श्रीमती रंजना 'राम चन्द्र' रस्तोगी, भवाना सिंह शिवाला, लखनऊ
63. श्रीमती बीना 'जवाहर लाल' रस्तोगी, रस्तोगी टोला, लखनऊ
64. श्री किस्लय रस्तोगी (सिटी बैंक), विपुल खण्ड, लखनऊ
65. श्री बाल कृष्ण रस्तोगी, 216, अशर्फाबाद, लखनऊ Ph. : 8604496041
66. श्री विनय कृष्ण रस्तोगी, 216, अशर्फाबाद, लखनऊ Ph. : 9670130001
67. श्री कुमार संकल्प रस्तोगी, गोखले मार्ग, लखनऊ
68. श्री आलोक चन्द्र, चन्द्रा नगरी, ऐशबाग, लखनऊ

सम्माननीय लेखकों से अनुरोध

सभी लेखकों एवं समाचार भेजने वाले सज्जनों से अनुरोध है कि वे अपनी रचना या समाचार की मूल प्रति ही हमें प्रेषित करें । रचना/समाचार स्पष्ट लिखावट में हों, अन्यथा टाइप कराकर भेजें। समाचार पेंसिल से लिखकर कदापि न भेंजें। प्रेषक अपना नाम पूरा पता एवं टेलीफोन नम्बर अवश्य लिखें। उनके हस्ताक्षर भी आवश्यक है।

सभी रचनायें, समाचार, विज्ञप्ति सीधे सम्पादक को ही अग्रसारित करें। यह सभी सामग्री ई–मेल से भी प्रेषित की जा सकती है।

सम्पादक : E-mail: dharmendranath.rastogi@gmail.com

'हरिश्चन्द्र दर्पण समिति' का बैंक खाता नं.

'रोहिताश्व पत्र' पत्रिका के पाठक, विज्ञापन दाता, दान दाता एवं संयोजक–'हरिश्चन्द्र दर्पण समिति' के नाम से पी.एन.बी., चौक, लखनऊ में खोले गये खाता नं.: 08942191013112 में अपने शहर में धनराशि जमा कर सकते हैं। **IFSC Code : PUNB0089410**

पैसा जमा करने के पश्चात काउंटर फाइल की फोटो कापी विवरण के साथ निम्न पते पर प्रेषित करें:–

श्री विजय कुमार रस्तोगी
(कोषाध्यक्ष, हरिश्चन्द्र दर्पण समिति)
हसन बिल्डिंग पीरबुखारा, चौक, लखनऊ।

स0 हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति खाता संख्या

लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय समाज द्वारा संचालित 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति' की स्थापना के 13वर्ष पूर्ण हो गये हैं। निर्बल वर्ग को निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण की सेवायें एवं दवाईयाँ उपलब्ध कराने की दिशा में अपेक्षित सफलता मिली है। इस कार्य में सहयोग करने के इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर धनराशि प्रेषित कर सकते हैं :–

सत्यवादी हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति
313/21/1, आशीर्वाद भवन, खुनखुनजी रोड, चौक, लखनऊ. फोनः 0522–2258847

धनराशि **पंजाब नेशनल बैंक,** शाखा, चौक, लखनऊ में समिति के **खाता नं. 08942191010258 IFSC Code : PUNB0089410** में भी विश्व में कहीं भी जमा की जा सकती है।

अब धारा 80 जी के अंतर्गत भी पंजीकृत आयकर में छूट

हमें आपको सूचित करते हुये हर्ष हो रहा है कि **सत्यवादी हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति, (धर्मार्थ), पंजीकृत**, अब आयकर अधिनियम 1961 की धारा **80 जी (5) (VI)** के अंतर्गत आदेश संख्या आ0आ0–2/लख0/511/80 जी/2012–13 दिनांक 04.09.2012 द्वारा भी पंजीकृत हो गई है। अब दानदाता दान की हुई राशि के 50 प्रतिशत अनुभाग पर आयकर गणना में छूट प्राप्त कर सकते हैं।

अपनी बात

संपादकीय

पाकिस्तान विघटन की कगार पर

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में, सबसे शक्तिशाली दो राष्ट्रों में से एक सोवियत रूस का विघटन 26 दिसम्बर 1991 को हो गया था। उसके रूस सहित कुल 16 देश बन गये थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात 6 देशों ने मिलकर यूगोस्लाविया गणतंत्र की स्थापना की थी पर 1990 – 91 में यह पुनः 6 देशों में बट गया। आज के पाकिस्तान के हालात भी ऐसे ही नजर आ रहे हैं। सन 1947 में बलूचिस्तान एक आजाद देश था, वह अंग्रेजो के कब्जे में नही था। वह एक प्रथक राष्ट्र के रूप में रहना भी चाहता था। पर पाकिस्तान ने अपने सैन्य बल से उस पर कब्जा करना चाहा तब उसने भारत में मिलने की इच्छा व्यक्त की। पर नेहरू ने पता नही क्यों उसे भारतीय गणतंत्र में सम्मलित होने की अनुमति नही दी। पाक ने चालबाजी से उस पर अधिकार कर लिया। अब फिर बलूचिस्तान में आजादी की मांग उठने लगी है। विश्व के अनेक शहरो में इसके लिये प्रदर्शन हो रहे हैं। पाकिस्तान दिवालिया होने की कगार पर है। एक डालर के लिए 285 रुपये देने पड़ रहे हैं। विदेशी मुद्रा भंडार शून्य होने वाला है। आई एम एफ की कर्जे की शर्तें इतनी कड़ी हैं कि 10 दिन तक वार्ता के पश्चात भी कोई हल नही निकला है। पाक के हाल भी लंका के जैसे होने वाले है। ऐसी विकट स्थिति में पाक के लिए बलूचिस्तान पर कब्जा बनाये रखना बहुत कठिन होगा। खान अब्दुल गफ्फार खॉ जिन्हें फ्रंटियर गांधी भी कहा जाता था, ने पाकिस्तान में रहने का निश्चय किया, पर उन्होंने पख्तून अल्पसंख्यकों के स्वायत्त पख्तूनिस्तान (या पठानिस्तान) के लिए लड़ाई जारी रखी। यह भी कंगले कमजोर नापाक से टूटकर अलग हो सकता है।

आधारभूत संरचनाओं में वृद्धि

आधारभूत संरचना के लिये वर्ष 2023–24 के बजट में 10 लाख करोड़ रुपए (जीडीपी का 3.3) का आबंटन किया गया है, जो वर्ष 2019 की तुलना में तीन गुना अधिक है। किसी भी राष्ट्र के विकास में बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रीढ़ की हड्डी साबित होता है। इससे यातायात सुगम होता है। इसके निर्माण से श्रमदिवसों का सृजन होता है। रोजगार मे वृद्धि होती है। सीमा पर सड़क, पुल, बंकर आदि के बन जाने से राष्ट्र को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है। हेलीपैड बन जाने से सेना से संपर्क में तीव्रता आ जाती है। पिछले नौ वर्ष में आधारभूत संरचनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। एयर पोर्टस की संख्या दोगुनी हो गई है। नितिन गडकरी द्वारा मंत्रालय का कार्यभार संभालने के पश्चात राज मार्गों के निर्माण में बहुत तेजी आई है। सभी प्रकल्प समय से पूरे हो रहे हैं। गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मुम्बई देहली राज मार्ग/एक्सप्रेस वे ने आकार लेना प्रारंभ कर दिया है। कुछ ही माह के पश्चात देश की राजधानी से देश की वित्तीय राजधानी की यात्रा मात्र 12 घंटे में सम्पन्न हो जायेगी। महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश के अनेक शहर इस राजमार्ग से जुड़ जायेंगे। यातायात के लिये जल मार्ग में भी वृध्दि की जा रही है। जनधन योजना के अंतर्गत लगभग सभी के बैंक खाते खुल जाने से उनके खातों में राशि का आबंटन त्वरित रूप से हो पा रहा है। सभी क्षेत्रों में निवेश से होने वाली आर्थिक प्रगति से हमें 5 ट्रिलियन की अर्थ व्यवस्था बनने के लक्ष्य में भी सहायता मिलेगी। इस बार के बजट ने सरकारी खर्च को ग्रामीण आधारभूत संरचना योजनाओं की ओर उन्मुख करने के लिए भी अच्छा काम किया है।

प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध

आप पत्रिका के प्रत्येक अंक में विभिन्न सामाजिक, राष्ट्रीय एवं राजनीति से संबन्धित सामयिक घटनाओं पर सम्पादकीय पढ़ते हैं।

आप उनसे सहमत या असहमत हो सकते हैं।

यदि सहमत हैं तो भी उस विषय को विस्तार देने के लिए कलम उठाइये और अन्य पाठकों को अपने विचारों से अवगत कराइये। असहमत होने पर अपने विचारों को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत कर अन्य प्रबुद्ध पाठकों को विषय के दूसरे पक्ष को जानने का अवसर दीजिये।

आपके पत्रों को प्रकाशित कर हमें प्रसन्नता होगी।

–सम्पादक

खतरे की घंटी

महाराष्ट्र एटीएस ने पिछले सप्ताह एक स्थानीय कोर्ट में पीएफआई के 5 सदस्यों के विरुध्द चार्जशीट दायर करते हुये दावा किया है कि उन्होने "भारत 2047–इस्लाम शासन की ओर" नामक दस्तावेज जब्त किया है। यह आशंका तो पहले से ही थी कि गजवा–ए–हिंद का प्रयास किया जा रहा है, अब इस आशंका को बल मिला है। दरअसल गलती वहीं पर हुई जब धर्म के आधार पर पाक के बनने पर पूरी जनसंख्या की अदला बदली नही हुई। 95% मुस्लिमों ने पाक के समर्थन में वोट दिया था। पर नेहरू गांधी ने सभी मुस्लिमों को वहॉ भेजने में रुचि नही दिखलाई। काफी मुस्लिम यहॉ पर रह गये। सन 1951 में उनकी संख्या 3.4 करोड़ थी जो सन् 2023 में सरकारी आकड़े के अनुसार 19 करोड़ के ऊपर है, जबकि वास्तविकता में यह संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है। अगले 25 वर्षों में वे भारत को इस्लामिक मुल्क बनाने की योजना बना रहे हैं। इस आसन्न संकट से बचने के लिए सभी गैर मुस्लिम भारतीयों को सचेत होना पड़ेगा। गैर भाजपा दलों को तुष्टीकरण से बाज आना होगा। केन्द्र सरकार को 5 सूत्री कार्य योजना पर अमल करना सोगा। प्रथम जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी रोक लगानी होगी। दूसरा प्रलोभन एवं लोभ के द्वारा मतांतरण कराने को गैर कानूनी घोषित करना होगा। तीसरा लवजिहाद कराने वाले को दंडित करना होगा। चौथा बांग्लादेशीय लोगो को बाहर निकालना होगा एवं पांचवॉ रोहिंग्याओं को उनके मुल्क वापस भेजना होगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक हिन्दू परिवार में कम से कम दो बच्चे अवश्य होने चाहिए। जनसंख्या का आनुपातिक संतुलन बिगड़ने नही देना चाहिए।

वसुधैव कुटुम्बकम मात्र नारा नहीं

सनातन के लिए जीवन सूत्र वसुधैव कुटुम्बकम मात्र नारा नही है वरन जीवन पद्धति है। हम धरा पर रहने वाले मानव मात्र को अपने कुटुम्ब का सदस्य मानते हैं। उनके दुखों से द्रवित हो जाते हैं। तुर्किये, सीरिया, लेबनान आदि देशों में आये भयानक भूकंप से हुई तबाही से सभी भारतीय अत्यंत दुखी हैं। भूकंप से डेढ़ करोड व्यक्ति प्रभावित हुये है। मृतकों की संख्या 50,000 तक

हो सकती है। करेले पर नीम चढ़ा, वहॉ एक ओर मूसलाधार बारिश हो रही थी तो दूसरी ओर तापमान शून्य पर पहुँच गया था। अपनी परंपरा के अनुरूप भारत ने इस विकट स्थिति में उन्हें तुरंत सहायता पहुचाना प्रारंभ कर दिया है। एन डी आर एफ की 51–51 सदस्यों की 2 टीमें तुर्किये के लिए रवाना हो गई हैं। आर्मी ने अपनी 89 सदस्यीय मेडिकल टीम वेन्टिलेटर, अस्थाई बिस्तरों एवं अन्य मेडिकल उपकरणों के साथ भेजी है। कुछ ही घंटे के अंदर भारत द्वारा सहायता उपलब्ध कराने से अभिभूत होकर भारत में तुर्किये के राजपूत ने सहायता की सराहना करते हुए कहा "जरूरत में काम आने वाला दोस्त ही सच्चा दोस्त होता है। दोस्त ही एक–दूसरे की मदद करते हैं।" संयोग से तुर्की को स्वतंत्रता भारत से मात्र 10 दिन पूर्व 5 अगस्त 1947 को मिली थी। मूलतः तुर्किये पाकिस्तान का हमदर्द है पर यह तथ्य आपातकाल में भारत को उसकी सहायता करने से नही रोक सका। छह टन आपातकालीन राहत सहायता लेकर IAF का एक विमान सीरिया के लिए भी रवाना हो गया है। खेप में जीवन रक्षक दवाएं और आपातकालीन चिकित्सा वस्तुएं शामिल हैं। बहुत ही उच्च प्रशिक्षित कुत्ते भी गये हैं, जिनकी सहायता से अनेक जानें बचाई जा सकी हैं।

कांग्रेस पर प्रतिबंध लगे

संविधान प्रदत्त स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के अंतर्गत मैं यह मांग करता हूँ कि भारत की सुरक्षा एवं अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए, देश के लिए घातक, कांग्रेस पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है। निर्वाचन आयोग एवं सुप्रीम कोर्ट को स्वतः संज्ञान में लेकर इस दिशा में त्वरित कार्रवाई करनी चाहिए। ज्ञातव्य है कि इन पर यूपीए के शासनकाल में 12 लाख करोड़ के घोटाले के आरोप लगे थे, इन्होने सदैव तुष्टीकरण को प्रश्रय दिया, सेना पर अविश्वास किया, प्रमुख संवैधानिक पदों पर आसीन राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के लिए अपमान जनक भाषा का इस्तेमाल किया, विभाजनकारी टुकड़े टुकड़े गैंग का समर्थन किया, भारत माता के प्रति अत्यंत अपमान जनक बातें करने वाले पादरी का अपनी यात्रा के प्रारंभ में साथ लिया। इसके नेता केवल अनर्गल प्रलाप करते हैं, दिग्विजय सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगते हैं तो थरूर मुशर्रफ को "शांति की ताकत" बताते हैं। असत्य भाषण में आगे रहते हैं। सन 1948 मे ब्राह्मणों एवं 1984 में सिखों का कत्लेआम किया। पटेल के स्थान पर नेहरू को चुनकर एवं 1975 में इमर्जेंसी लगाकर लोकतंत्र की हत्या की, अभी भी परिवारवाद चल रहा है। ये पाक एवं चीन के हमदर्द हैं। संसद की कार्रवाई में निरंतर बाधा पहुँचा कर, राष्ट्रपति मूर्मू के संसद में दिये गये प्रथम अभिभाषण पर बहस न होने देकर, कांग्रेसी संसद का बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे है। लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष होना चाहिए पर यह पिछले 2 बार से विपक्ष की मान्यता प्राप्त करने में विफल रहे हैं। ये देश की प्रगति में अवरोधक हैं।

अप्रासंगिक संयुक्त राष्ट्र संघ

संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष के अनुसार संरासं पूर्ण रूप से प्रभाव हीन हो गया है। वह यूक्रेन के ऊपर रूस के हमले को रोकने में विफल रहा। अपने विरुद्ध सभी प्रस्तावों पर रूस ने वीटो कर दिया। 77 वर्ष पूर्व स्थापित संघ में उपस्थित, 5 बड़ी शक्तियो ने ही महत्वपूर्ण मसलों पर कभी निर्णायक निर्णय नही होने दिया। यहॉ तक कि भारत के ऐसे शक्तिशाली देश को भी सुरक्षा परिषद में चुने जाने के प्रति वे गंभीर नहीं हैं। वैसे तो आम सभा एवं सुरक्षा परिषद के अनेकानेक सदस्य भारत को सुरक्षा परिषद का सदस्य बनाने की बात करते है पर महा सभा ने कभी इसके पक्ष में प्रस्ताव पारित नही किया। जबकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्रिक राष्ट्र है। संभवतः अगले वर्ष के अंत के पूर्व सर्वाधिक जनसँख्या वाला राष्ट्र भी हो जायेगा। 28 माह से 80 करोड़ जनता को मुफ्त में अनाज देने की हैसियत है उसकी। कोविड आपदा काल में सवा दो सौ करोड़ वैक्सीन लगवाई है एवं अनेक राष्ट्रों को उपलब्ध भी कराईं। पूरे विश्व में अब भारत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। प्रधान मंत्री मोदी धरती के सबसे शक्तिशाली नेता माने जा रहे हैं। भारत एक तरफ, विश्व की सबसे बड़ी 5वीं अर्थ व्यवस्था है तो दूसरी ओर परमाणु बम से सम्पन्न है। विश्व में दूसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है। सौर ऊर्जा एवं डिजिटल पेमेंट के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रगति की है। सुरक्षा परिषद में भारत के साथ साथ जर्मनी एवं जापान को सदस्य बनाकर एवं वर्तमान वीटो की पद्धति को समाप्त कर उसको फिर से प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

कब्र खोदना प्राचीन प्रवृत्ति

कांग्रेसी प्रवक्ता पवन खेड़ा द्वारा मोदी जी के पिता श्री के लिए अपमान जनक टिप्पणी करने पर, 23 फरवरी को पुलिस द्वारा उनको गिरफ्तार करने पर, धरने पर बैठे कांग्रेसियों ने नरेन्द्र मोदी हाय हाय के साथ "मोदी तेरी कब्र खुदेगी, कब्र खुदेगी" के नारे लगाये। कब्र खोदना कांग्रेसियों की प्राचीन प्रवृत्ति है। वह केवल कहते ही नही हैं बल्कि शिद्दत से उसे कार्यान्वित भी करते हैं। सन 1947 में उन्होने अखंड भारत की कब्र खोदकर उसको दो भागों में खंडित कर दिया। विभाजन के समय 20 लाख लोगो की कब्र खोद दी। उसी वर्ष कश्मीर के एक हिस्से पर पाकिस्तानी कबाइलियों का कब्जा होने दे कर एवं सन 1962 में भारत की सार्वभौमिकता की कब्र खोद कर, एक बड़े भूभाग पर चीन का कब्जा होने दिया। सन 1975 में इंदिरा ने लोकतंत्र की कब्र खोदकर, आपात काल लगाकर, लाखों विपक्षी नेताओं को जेल में ठूस दिया था। राजीव गांधी ने शहनाज बानो केस पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को पलटकर मुस्लिम महिलाओ के हितों की कब्र खोदी थी। मनमोहन सिंह ने राष्ट्र के सभी संसाधनों पर मुस्लिमों का प्रथम अधिकार है, कहकर धर्म निरपेक्षता की कब्र खोदी तो अपने समय में 12 लाख करोड़ रु. के घोटाले हो जाने देने पर सरकारी खजाने की कब्र खोदी। सन 2013 में 81 वर्षीय प्र. मं. के नेतृत्व में कैबिनेट द्वारा पारित बिल को 43 वर्षीय राहुल ने सार्वजनिक रूप से फाड़कर लोकतंत्र की मर्यादा एवं संस्कारो की कब्र खोदी थी। उनके इसी कृत्य के कारण सूरत में 23 मार्च को उनकी लोकसभा की सदस्यता की कब्र भी खुद गई।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी

(संपादक)

सम्पादकीय कार्यालय :
धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी (सम्पादक, रोहिताश्व पत्र)
जुगल किशोर भवन, 292/145, विक्टोरियागंज, लखनऊ–226004
मो0: **9336848181,**
Whatsapp: 7800402886
E-mail: dharmendranath.rastogi@gmail.com

सम्पादक का सर्वाधिकार सुरक्षित है।

सम्पादक के नाम पत्र

मन्थन :

रोहिताश्व पत्र अंक अक्तूबर –दिसंबर–22

जैसे किसी दैनिक समाचारपत्र का मनस्वी संपादक समसामयिक विषयों, घटनाचक्रों व वृत्तांतों पर अपनी रची रमी लेखनी निर्बाध गति से चलायमान रखता है वैसे ही त्रैमासिक पत्रिका रोहिताश्व पत्र के संपादक माननीय धर्मेंद्रनाथ जी रस्तोगी की प्रखर लेखनी भी अंतरराष्ट्रीय,राष्ट्रीय व सामाजिक घटनाक्रमों पर निरंतर प्रवाहमान रहती है। चाहे खेल जगत हो, व्यापार हो, कूटनीति हो, रणनीति हो, राजनीतिक उठापटक हो, शैक्षिक क्षेत्र हो, सिनेमा जगत हो, विपक्ष के षड्यंत्रकारी दांवपेंच हों, कपटी भिखमंगा प्रतिवेशी देश हो, पठान फिल्म में भगवा का अपमान हो,राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आक्रामक नीति हो, कांग्रेसी सरकार में निष्प्रभावी सी.बी.आई.हो, विश्व में श्रेष्ठ बनने का अवसर हो, कांग्रेसी शास्त्री जी की शहादत को भूले हों,जी–20की अध्यक्षता का भारत के पास बड़ा अवसर हो,ऊंट के मुंह में जीरा बजट हो, गरिमामय इच्छामृत्यु हो, प्रभावशाली बने राष्ट्रसंघ हो अथवा अप्रासंगिक संयुक्त राष्ट्र संघ हो। शायद ही कोई समसामयिक विषय उनकी लेखनी से अस्पृश्य रह पाता हो। उनके सभी आलेख चिंतन परक व पठनीय होते हैं। उनके ऐसे सारगर्भित व सार्थक लेख सुप्रसिद्ध समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' के प्रायः सभी संस्करणों में नियमित स्तंभ 'पाठकनामा' के अंतर्गत प्रायः नित्यप्रति ही प्रकाशित होते रहते हैं। उनकी ऐसी ऊर्जस्वित लेखनी को नमन और उनके व्यक्तित्व में समाहित स्वाध्यायशील मनस्वी लेखक को अनेकानेक बधाइयां।

सेवानिवृत्त शिक्षिका श्रीमती रंजना रस्तोगी का लेख 'संस्कारों की महत्ता' अत्युपयोगी एवं ज्ञानवर्धक है। जीवन को आनंदमय बनाने में संस्कारों की महती भूमिका है। धनदौलत तो क्षरणशील है किंतु संस्कारों का क्षरण कभी नहीं होता। शैशवकाल में रोपे गए संस्कार जीवन भर पल्लवित पोषित होते रहते हैं।

'आभार' सुश्री सुरभि रस्तोगी की बहुत सुंदर व हृदय स्पर्शी काव्य रचना है। अपने जन्मोत्सव का स्मरणीय दिवस के रूप में अभिव्यक्तिकरण प्रशंसनीय है। हार्दिक शुभकामनाएं सुरभि जी को।

'दुर्योधन'... वाह भई वाह! एक अनूठी कल्पना...संस्कारित काव्य...शिक्षाप्रद भी...कवयित्री विनोदनी रस्तोगी को हार्दिक बधाई इस सुंदर रचना के लिए।

'यम से मुलाकात' वाह आनंद आ गया...व्यंग्य भी, गीता का ज्ञान भी और आजकल के चकाचौंध भरे जीवन का यथार्थ भी। प्रशंसा करता हूं सुप्रसिद्ध कवि व लेखक भ्रातृवर आदरणीय प्रकाशचंद जी रस्तोगी की चिंतनशीलता की। उनका गीत 'कलियुग' भी रोचक व सरस प्रतीत हुआ...बहुत बढ़िया भाव व्यंजना...एक– एक पंक्ति पठनीय। सहृदय शुभकामनाएं।

'मानव प्रगति में सहयोगी विज्ञान' एक ऐसी लेख श्रंखला है जो विज्ञान के नये–नये आविष्कारों से पाठकों का साक्षात्कार कराती है। संकलनकर्ता इ.सुशांत रस्तोगी के इस सतत प्रयास को बधाइयां।

डॉ. अशोक रस्तोगी
अग्रवाल हाइट्स,
राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद।
मो. : 9411012039, 8077945148

दुष्कर्म घृणास्पद

दुष्कर्म के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। कुछ लोग इसकी वजह लड़कियों के पहनावे को दे रहे हैं। इस बात का श्रीमती सुरभि रस्तोगी तीव्र विरोध करते हुये लिख रही हैं कि ––

माफ कीजिएगा

.....मैं इसके लिए ''पुरूषों'' की ''विकृत मानसिकता'' को 'दोषी' मानती हूं, जो ''दुष्कर्म'' जैसा ''जघन्य अपराध'' करते हैं।

माना शालीन पहनावा आपका ''प्रथम रक्षासूत्र'' है, लेकिन ''मनुष्य की खाल में छुपे इन भेड़ियों'' से ''रक्षा'' तो खुद इनके ही घर की बहु– बेटियां नही कर पाती हैं.....ऐसी विकृत मानसिकता वाले ना तो ''उम्र तक का लिहाज'' करते हैं, ''ना ही धर्म का'' ....आप सब भी न्यूज पेपर में आये दिन पढ़ते रहते होंगे, कि ''चार महीने'' की मुस्लिम बच्ची, ''पांच साल'' की बच्ची, ''45 साल'' की ''क्रिस्चियन लेडी'' व ''पैसठ साल'' की बुजुर्ग महिला जो हमेंशा साड़ी पहनती थीं ,वो भी इनका शिकार बनीं.....''तो यहाँ यह साबित हो गया कि ''ना उम्र ,ना धर्म ,और ना ही पहनावा दोषी'' हुआ, ''दोषी हवस से भरी मानसिकता हुई''....

..... जिस व्यक्ति ने यह पोस्ट लिखी है,उसनें ''हिन्दुओं'' पर ही ''करारा प्रहार'' किया है, कि वह ''अपने समुदाय की महिलाओं की ''रक्षा'' के प्रति ''उदासीन'' हैं''....कोई कट्टरता नही उनमें कि वह ऐसा करनें वालों की आंखें नोंच लें, हाथ– पैर काट कर अपंग कर दें....

इस पोस्ट में दो समुदाय (मुस्लिम व राजपूत– राजस्थानी) का उदाहरण दिया गया है.....''हिन्दु भाइयों आप क्या कर रहे हैं ????

.....आप पर यह ''कटाक्ष'' किया गया है.....आप सिर्फ पोस्ट पढ़कर फारवर्ड कर रहे हैं, और ''दुष्कर्म होने पर दोष पहनावे को देकर ,पल्ला झाड़ रहे हैं''.....इस पोस्ट के मुताबिक मर्यादित व्यवहार 'दूसरा रक्षासूत्र'' कहा गया है, तो मुझे कोई ये बताये कि चार महीनें व पांच साल की बच्ची ने व पैसठ साल की बुजुर्ग महिला ने कौन सा अमर्यादित व्यवहार किया होगा.....??? उन छोटी बच्चियों को तो अपनें ''स्त्री'' होने तक का भी एहसास नही होगा.... .''तो दोषी कौन हुआ''....????

.....पहनावा, मर्यादित व्यवहार या फिर ''पुरूषों की गंदी नियत स्त्री के प्रति''.....सबसे पहले पुरूषों को अपनी सोच को बदलना होगा....

असली प्रश्नचिन्ह पुरूषों की मानसिकता पर है, जो स्त्री को सिर्फ भोग्या के रूप में ही देखता है और उनके शील को भंग करता है।

सुरभि रस्तोगी
रीवर बैंक कालोनी, लखनऊ

चतुर्थ शतक

आपकी शुभकामनाओं एवं प्रेरणा से, वर्ष 2023 में दैनिक जागरण के विभिन्न संस्करणों में मेरे प्रकाशित पत्रों की संख्या 24 मार्च 2023 को 401 तक पहुँच गई है। विवरण निम्नवत है :–

रोहतक 41, पानीपत 41, जम्मू 51, प्रयागराज 40, हमीरपुर 25, लखनऊ 41, कानपुर 31, पटना 16, दरभंगा 16, सिलीगुड़ी 16, लुधियाना 12, जालंधर 12, चंडीगढ 12, देहली 9, मधेपुरा 11, राष्ट्रीय 6, मेरठ 2, मुरादाबाद 6, बरेली 2, आगरा 4, अलीगढ 4, अन्य 3 ।

–धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी

उद्‌बोधन : प्रदीप रस्तोगी, महामंत्री

जय श्री कृष्ण

मंचासीन सभी माननीय महानुभावों, उत्सव में पधारे सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र वंशीय समाज के मेरे अग्रज, समकक्ष भाइयों एवम् बहनों, युवा युवक–युवतियों एवम् बच्चों का मैं समिति व स्वयं की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। लखनऊ के बाहर से इतनी सर्दी में आए स्वजातिय बन्धुओं का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। मुझे यह बताने में अपार खुशी है कि समिति के अध्यक्ष श्री राजन जी द्वारा दी गयी टैंग लाइन 'हमारा अपना उत्सव' ने बहुत अच्छा इम्पैक्ट दिया है और लखनऊ के स्वजातीय बन्धुओं को आपस में करीब लाने का कार्य किया है। यूं तो समिति द्वारा समाज के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए जा रहे है परन्तु सत्यवादी हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति द्वारा संचालित रस्तोगी स्वास्थ परीक्षण केन्द्र विशेष उल्लेखनीय है। 14 अगस्त 2008 को समाज के उत्साही कार्यकताओं एवम् भामाशाहों द्वारा यह प्रकल्प किराए के भवन से शुरू किया गया जिसके प्रेरणाश्रोत स्व. श्री राधा बल्लभ जी (गाढ़ा भण्डार वाले) स्व. श्री प्रेम जी (प्रेम मिलन वाले), स्व. राजेन्द्र कुमार रस्तोगी एवम् श्री हरी जीवन जी रहे। देखते ही देखते इस परामर्श केन्द्र ने एक विशाल रूप ले किया और 5 वर्ष में औसत 400 मरीज प्रतिदिन देखे जाने लगे। अब निवर्तमान अध्यक्ष श्री दीपक जी, उपाध्यक्ष श्री विष्णु बल्लभ जी पुत्र स्व0 श्री राधा बल्लभ जी, एवम् हमारी समिति के अध्यक्ष श्री राजन जी ने अपना स्वयं का परामर्श केन्द्र का भवन बनाने का संकल्प लिया और करोना काल के बीच ही 2 अप्रैल 2022 को 4500 वर्ग फुट जमीन पर लगभग 12000 वर्ग फुट के तीन मंजिला भवन में परामर्श केन्द्र का शुभारम्भ किया। मुझे खुशी है कि आज लगभग 300 मरीज प्रतिदिन यहाँ स्वास्थ लाभ लेने आ रहे हैं।

आपको विदित हो कि करोना काल में हमारे समाज के अध्यक्ष श्री राजन जी के नेतृत्व में समाज के सहयोग से लगातार 55 दिन तक 30 किलोमीटर के क्षेत्र में प्रतिदिन 5000 खाने के पैकेट जिसमें बदल–बदल कर भोजन सामग्री वितरित की गई। इसके साथ प्रतिदिन 500 राशन के पैकेट आटा, दाल, घी, सब्जी, मसाले आदि भी वितरित किए गये। इस कार्य के लिए श्री राजन जी को जिलाधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। इसके साथ–साथ हवेली श्री गोर्वधन नाथ जी के माध्यम से भी 500 पैकेट खाने के भी 55 दिन तक वितरित किए गये और अन्त में 3,02,002/– प्रधानमंत्री कोष में भी दिये गये।

सहर्ष अवगत कराना चाहूँगा कि हरिश्चन्द्र दर्पण समिति द्वारा त्रैमासिक पत्रिका रोहिताश्व पत्र का प्रकाशन 12 वर्ष पूर्व शुरू किया गया जिसमें समाज की गतिविधियों के प्रकाशन के साथ ज्ञान वर्धक व रोचक पाठ्य सामग्री भी पाठको को पढ़ने को मिलती है। समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश जी व सम्पादक श्री धर्मेन्द्र नाथ जी के अथक प्रयास से आज इस पत्रिका का circulation 1000 प्रति पर पहुंच गया है जो लखनऊ में वितरित की जाती है। हमारा प्रयास है इस पत्रिका को पूरे देश में पहुंचाया जाए। यहाँ यह बताने में और भी हर्ष एवम् गर्व हो रहा है कि पत्रिका के सम्पादक श्री धमेन्द्र नाथ जी जो SBI के retired AGM है, के द्वारा समाज व देश से संबन्धित विषयों पर लिखे 1145 पत्र देश के अग्रणी समाचार पत्र दैनिक जागरण आदि में पिछले वर्ष 2022 में प्रकाशित हुए जो औसत 3 पत्र प्रतिदिन से भी अधिक है। स्वास्थ व शिक्षा के क्षेत्र में समाज द्वारा किए जा रहे अभूतपूर्व कार्यो के बाद सितम्बर 2022 में स्वजनों की आर्थिक प्रगति में सहयोग विशेषकर बेरोजगार नव युवकों को रोजगार परक बनाने के उद्‌देश्य से एवम् आज के most demanding-startup के लिए candidate को mentoring giving etc. के उद्‌देश्य से श्री सुधान्शु जी की अध्यक्षता में Rastogi 5 kill development & start up Committee का गठन किया गया। अभी कमेटी ने computer Training course शुरू किया है जिसमें Basic Computer Knowledge, MS Office, Tally & Data Entry की ट्रेनिंग दी जाती है। आशा है इस ट्रेनिंग को करने के बाद candidate को नौकरी मिलने की सम्भावना बढ़ जायेगी। कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधाशुं प्रदेश में start up को बढ़ावा देने के लिए पिछले 5 वर्षों से जुड़े है वे स्वयं भी अपना अनूठा startups May Place के नाम से चला रहे है इसके साथ यू.पी. में Ecosytem को मजबूत करने के लिए वे लखनऊ विश्वविद्यालय, ए.के.टी.यू. व सभी Professional, Enginering Institution के साथ मिल कर कार्य कर रहे हैं।

समाज की बेटी रूपिका पुत्री श्री नीरज, हमारे अध्यक्ष श्री राजन जी की भतीजी 'चरखा' के नाम से 2016 से start up चला रही है। अभी तक लगभग 25 महिलाओं को रोजगार देकर उन्हें स्वालम्बी बनाया है। इसी कड़ी में सुश्री कुशादास भारत आश्रम की बहू Empowering vision के नाम से लगभग 10 वर्षों से Personal sucess programme चला रही है। जिसमें वे Personal excellence, casees coaching Leadership development, effective communication पद English आदि पर ट्रेनिंग कराती है वे स्वयं भी Professionally Certified Coach है।

जहाँ तक समिति की भावी योजनाओं का प्रश्न है माननीय श्री हरी जीवन जी विस्तृत चर्चा करेंगें। संक्षेप में एक विशाल प्राणंगन में Multispeciality Hospital, old age Home, अन्नपूर्णा भोजनानालय जिसमें 10 रु. में भरपेट भोजन, मनोरंजन पार्क, इष्टदेव श्री नाथ जी की हवेली व महाराजा हरिश्चन्द्र के जीवन पर मूर्तियों द्वारा स्थायी प्रस्तुति की स्थापना करने की प्रबल इच्छा है।

महामंत्री होने के नाते मेरा परम दायित्व है कि इस उत्सव को सफल बनाने में जुटे सभी सहयोगियों के प्रयासों को acknowledge करूँ और उनको इस मंच से धन्यवाद भी दूँ।

सर्व प्रथम मैं चर्चा करना चाहूँगा श्री प्रमेश जी की जो इस कार्यक्रम के संयोजक भी है, समिति में बिना कोई पद लिए उन्होंने इस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने से लेकर क्रियान्वयन तक इस ठिठुरती ठण्ड में दिन रात काम किया। आज के इस उत्सव की सफलता में श्री प्रमेश जी का विशेष योगदान है। उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने वाले श्री विनीत जी व श्री बृजेश जी का योगदान भी समतुल्य है। जिन्होंने योजना एवम् निष्पादन में पूर्ण सहयोग दिया। इनके साथ सैकड़ो अन्य नाम भी है पर जिनका विशेष सहयोग रहा उनमें सर्व श्री बाल कृष्ण, बृजेन्द्र, अभिनव, मुदित, प्रमोद, सार्थक, सचिन व संजय 'लाला' को नाम से प्रस्तुत करना आवश्यक मानता हूँ। श्री प्रमेश जी एवम् उनकी पूरी टीम को मेरा साधुवाद है। स्टेज के कार्यक्रम व प्रतियोगिताओं के आयोजन में श्री प्रकाश जी व श्रीमती सीमा जी के अथक प्रयासों के लिए उनका भी विशेष धन्यवाद है।

मैं उपाध्यक्ष श्री संजीव जी को धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके मार्ग दर्शन में उत्कृष्ट च्तपदजपदह ूवताए उंजजमत कतंजिपदह आदि का कार्य सम्पन्न हुआ। च्तंबजपबंससल पिछले 15 दिन से उनका कार्यालय लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय समाज का कार्यालय बना गया था और उनके कार्यालय एवम् कारखाने में इस उत्सव संबंधी कार्ययोजना व कार्य होते थे। अन्त

में मैं श्री हरी जीवन को समाज की ओर से और अपनी ओर से धन्यवाद देना चाहूँगा। आज लखनऊ समाज द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्प, योजनाएं, बजपअपजपमे की परिकल्पना उनके द्वारा की गयी है। जिस तल्लीनता से पिछले 40 वर्षों से वे समाज में अपना योजदान दे रहे है उन्हें महर्षि दधीचि की संज्ञा देना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

आप सभी के पूर्ण स्वास्थ्य, सुख समृद्धि की कामना के साथ–

जय हिन्द

प्रदीप रस्तोगी
महामंत्री,
186, चन्द्रलोक, अलीगंज, लखनऊ।
मो. : 9918404777

उद्‌बोधन : संजीव रस्तोगी, उपाध्यक्ष

सभागार में उपस्थित आप सभी सम्माननीय महान विभूतियों, अतिथियों व सपरिवार पधारे हमारे हरिश्चन्द्र वंशीय रस्तोगी बन्धुओं का मैं, हार्दिक वंदन व स्वागत करता हूँ।

मंच पर आसीन हमारे लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय रस्तोगी समाज के अध्यक्ष श्री राजन रस्तोगी, श्री दीपक रस्तोगी, श्री गिरीशजी व हमारे प्रमुख मार्गदर्शक डॉ. विनोद चन्द्र रस्तोगी जी कानपुर का भी मैं हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ।

अपने समाज के वरिष्ठजनों का भी स्वागत करना चाहूँगा जिन्होंने अपने ज्ञान एवं अनुभव के प्रकाश से इस समाज के विकास में अपना विशेष योगदान किया है।

रस्तोगी समाज का व्यवसाय मुख्यतः व्यापार होने के कारण यद्यपि इसकी गणना आज हिन्दू वैश्य समाज में की जाती है, किन्तु वास्तव में रस्तोगी समाज सूर्यवंशीय क्षत्रिय समाज है हम लोग उत्तर भारत के विभिन्न जिलों बनारस, फर्रुखाबाद, कानपुर, मेरठ, गाजियाबाद, मुरादाबाद, बरेली, लखनऊ आदि में तथा दिल्ली, कलकत्ता, राजस्थान एवं हरियाणा क्षेत्रों में बसे हुये हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहता है। जिस प्रकार अपने परिवार के प्रति मनुष्य के कर्तव्य होते हैं उसी प्रकार समाज के प्रति भी उसके कुछ कर्तव्य होते हैं। समाज के इन कर्तव्यों को करना ही समाज सेवा है हमारे समाज में श्री हरि जीवन रस्तोगी जी जैसे कुछ व्यक्ति हैं जो सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता हैं। एक सच्चा सामाजिक कार्यकर्ता सभी लोगों के साथ एक समान भलाई का कार्य करता है, वह स्वार्थ रहित होता है और उसे अपनी सेवा के लिये किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं होती और न ही वह इसका लाभ लेना चाहता है।

सामाजिक एकता से ही समाज की जड़ मजबूत होती है। यदि हम सभी लोग मिलकर एकजुट होकर चलें तो हमारे समाज की जड़ मजबूत हो जाती है। यह कार्य सामूहिक रूप से ही सम्भव है बस लोगों के जागरूक होने की आवश्यकता है।

मनुष्य के जीवन में संगठन का बड़ा महत्व है। अकेला मनुष्य शक्तिहीन है, जबकि संगठित होने पर उसमें शक्ति आ जाती है और वह बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से कर सकता है। संगठित परिवार, समाज व संस्था कभी असफल नहीं होते। आपसी आत्मीयता, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य और एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना से समाज उन्नति कर सकता है। किसी अच्छे कार्य के लिये संगठन वरदान साबित होता है। इसी उद्देश्य से हमारे समाज में एक स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र की स्थापना की गयी है जिसमें बिना किसी भेद–भाव के बिना जाति–बन्धन के प्रतिदिन लगभग 300 मरीजों का न्यूनतम शुल्क में इलाज किया जाता है तथा उन्हें मुफ्त में दवा वितरण की जाती है।

कोरोना काल में भी इस समाज द्वारा परस्पर सहयोग से एक कॉम्युनिटी किचेन का भी संचालन किया गया जिसमें प्रतिदिन भोजन के 5000 पैकेट तथा राशन के 500 पैकेट की व्यवस्था निःस्वार्थ की गयी।

कहना चाहूँगा कि यदि आप किसी भी तरह से किसी की मदद करने में सक्षम हैं तो यकीन मानिये आप सौभाग्यशाली हैं। हर किसी के पास दूसरों की मदद करने या कुछ देने का साहस नहीं होता, परन्तु यदि हो सके तो हममें से सभी को थोड़ा सा समय निकालकर समाज की मदद करनी चाहिये। आप अपनी क्षमता के अनुसार कई तरह से मदद कर सकते है। यह एक असाधारण संतुष्टि देता है। यकीन मानिये कि यह बहुत ही अच्छा लगेगा जिस तरह प्रत्येक फूल अपनी–अपनी विशेषता एवं विविधता से किसी बगीचे को सुन्दर व आकर्षक बना देते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी अपनी–अपनी विशेषता एवं योग्यता से किसी भी कार्य को नया आयाम प्रदान कर सकता है।

मैं उन लोगों को सम्बोधित करने में खुशी अनुभव करता हूँ जो आज के युवा हैं, जिन्होंने कंधे से कंधा मिलाकर इस समाज और संगठन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने की जिम्मेदारी ली है। अपने सभी साथियों का एक बार फिर स्वागत करना चाहता हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इस समारोह में भाग लेकर अपने प्रयासों से इसे सफल बनाने के लिये अपना अमूल्य योगदान किया।

धन्यवाद

संजीव रस्तोगी
उपाध्यक्ष,
हरिश्चन्द्र वंशीय समाज, लखनऊ

कोषाध्यक्ष से सम्पर्क

श्री विजय कुमार रस्तोगी

त्रैमासिक पत्रिका 'रोहिताश्व पत्र' का संरक्षक सदस्य या वार्षिक सदस्य बनने के लिये तथा पत्रिका में विज्ञापन देने हेतु कृपया कोषाध्यक्ष श्री विजय रस्तोगी जी से संपर्क करें। पत्रिका का कोई अंक न प्राप्त होने पर भी कृपया उनको सूचित करें। कोषाध्यक्ष श्री विजय कुमार रस्तोगी का मोबाईल नंबर 8604921509 है।

सभी बन्धुओं से निवेदन

रोहिताश्व पत्र में हम समाज की उदीयमान प्रतिभाओं, विवाह योग्य युवक–युवतियों की सूची, विवाह समाचार, शोक समाचार आदि प्रकाशित कर रहें है। अतः सभी बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु उपरोक्त सामग्री के अतिरिक्त लेख कहानियाँ, यात्रा वृतांत, प्रेरक प्रसंग, संस्मरण, कवितायें आदि भेजने का कष्ट करें। धार्मिक विषय, खान–पान, सिलाई–बुनाई पर भी लेख आमंत्रित हैं। अपने समाज के महापुरुषों का जीवन परिचय पाकर भी प्रसन्नता होगी। साथ ही साथ अपने समाज द्वारा संचालित संस्थाओं के विवरण का भी हम स्वागत करेंगे।

–सम्पादक

हरिश्चन्द्रवंशीय गौरव

Under the leadership of **Sri Atul Kumar Rastogi, Deputy Director General, NCC (TN, P & AN) Directorate**, their unit came second overall at all India level, winning various competitions held during recently concluded Republic Day Camp at Delhi. Atul Jee felicitated Hon'ble Governor Thiru R N Ravi of Tamil Nadu.Hearty Congratulations.

पदमश्री स्व. बाबा योगेन्द्र जी जन्म शताब्दी वर्ष में ' भरत मुनि जयंती उत्सव – 2023 का आयोजन संस्कार भारती, लखनऊ इकाई द्वारा दिनांक 26 फरवरी 2023 को हनुमंत धाम मंदिर परिसर, लखनऊ में किया गया। इस अवसर पर 'ललक' नाटक का मंचन किया गया। कार्यक्रम में संस्था के संरक्षक एवं मार्गदर्शक हरिश्चन्द्र वंशीय **श्री धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी** को संस्था के अध्यक्ष श्री पुनीत स्वर्णकार द्वारा सम्मानित किया गया। उपरोक्त चित्र में अन्य महानुभाव हैं- बायें से संस्था के महामंत्री डॉ. अशोक सह गौतम, श्री प्रशांत भाटिया, विशेष संपर्क प्रमुख, अवध प्रांत रा स्वं से सं एवं डा राजेश शुक्ला, संस्थापक निदेशक रेस आइएएस।

ऐशबागवार्ड, पीली कालोनी चौराहे पर 16 मार्च को 7 बजे होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय विधायक श्री पंकज सिंह जी सुपुत्र श्री राजनाथ सिंह जी ने कोविड आपदा के समय सेवा कार्य के लिए **डा मंजू चौरसिया, डा द्विवेदी, डा निवेदिता रस्तोगी** को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया।

गत 8 मार्च को गाँधीभवन लखनऊ में आयोजित एवार्ड ए तिरंगा कार्यक्रम में **सत्यवादी हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति** को सम्मानित किया गया। समिति के प्रतिनिधि **श्री रितेश रस्तोगी** एडवोकेट सम्मान ग्रहण करते हुए।

गत 8 मार्च को हमारे समाज की अग्रणी सदस्या **श्रीमती रागिनी रस्तोगी** को सनातन नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया

युवा हृदय सम्राट, भारत रत्न, भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेई जी के उन मित्रों को पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के यशस्वी **मुख्य मंत्री श्री आदित्य नाथ 'योगी' जी** द्वारा सम्मानित किया गया, जो कि अटल जी की राष्ट्र निर्माण की यात्रा में उनके सहयात्री रहे। **हरिश्चन्द्र वंशीय गौरव श्री हरिश्याम रस्तोगी** जी उनमें से एक थे। अटल जी से रस्तोगी जी की निकटता थी। सनातनी हिन्दू हरिश्याम जी प्रखर राष्ट्र भक्त हैं एवं बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े हुए हैं।

वरिष्ठ समाज सेवी रस्तोगी जी मूलतः राजा बाजार के रहने वाले हैं। अब अलीगंज में रहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान है। अनेक शिक्षण संस्थाओं को उनका मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। वर्तमान में वह हनुमान प्रसाद रस्तोगी गर्ल्स इंटर कालेज, (सुभाष मार्ग), लखनऊ की प्रबंध समिति के अध्यक्ष हैं।

हरिश्चन्द्र वंशीय समाज ऐसे वरिष्ठ स्वजन को, दीर्घायु होने की कामना के साथ सादर नमन करता है।

प्रस्तुति : हरीजीवन रस्तोगी, लखनऊ

''हमारा अपना उत्सव''

सत्यवादी महाराज हरिश्चन्द्र जयंती महोत्सव, लखनऊ

दिनांक 12 जनवरी 2023 को लखनऊ के अटल बिहारी बाजपेई साइंटिफिक कंवेशन सेन्टर, चौक से सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र जयंती महोत्सव को इस वर्ष ''हमारा अपना उत्सव'' शीर्षक से अत्यन्त भव्य तरीके से मनाया गया। समाज में स्वजातीय बन्धुओं के आपसी सामंजस्य व मेल–मिलाप को बढ़ाने की ओर एक सार्थक पहल के रूप में इस महोत्सव में लखनऊ शहर के कोने–कोने से जनसम्पर्क द्वारा लोगों को जागरूक किया गया और पूरे उत्तर प्रदेश के साथ ही साथ प्रदेश के बाहर से आमंत्रित अतिथियों ने भी पधार कर समारोह में उल्लास भर दिया।

महोत्सव के अवसर पर लखनऊ के बाहर से आये हुए सभी अतिथियों को सुबह 11.00 बजे रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र खाला बाजार पर ले जाया गया। स्वास्थ्य केन्द्र का अवलोकन करने के उपरान्त वहाँ पर सभी लोगों की एक संक्षिप्त बैठक हुई जिसमें समाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य की योजनाओं पर सभी ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये। परिसर में स्थापित महाराजा हरिश्चन्द्र जी की मूर्ति पर दीप प्रज्जवलन और माल्यार्पण के पश्चात् वहीं पर अतिथियों के जलपान की व्यवस्था की गई थी। तत्पश्चात् सभी अतिथिगण लगभग 12 बजे महोत्सव स्थल कन्वेंशन सेन्टर पर पहुचे। कन्वेन्शन सेन्टर के विशाल परिसर में लगभग 40 स्टालों पर समाज के युवाओं द्वारा बहुरंगी छटा बिखेरी गई थी। कुछ स्टाल व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के थे, कुछ खान–पान के, कुछ स्टार्ट अप और कौशल विकास के तथा कुछ परिधान, सजावटी, सामान व विविध मनोरंजन के भी थे जहाँ पूरे दिन जैसी चहल–पहल दिखाई दे रही थी।

वहीं दूसरी तरफ समाज के बच्चों ओर महिलाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता तथा बालिकाओं व महिलाओं के लिए रंगोली, कलश सज्जा व मेंहदी प्रतियोगिता थी जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों और महिलाओं ने भाग लिया। सभी प्रतियोगिताओं में विजेताओं को भी सहभागिता हेतु पुरस्कृत किया गया। सभी प्रतियोगिताओं का कुशलता पूर्वक संचालन करने में श्रीमती सीमा रस्तोगी, श्रीमती अंजलि रस्तोगी तथा श्री विनय कृष्ण जी का सहयोग रहा।

सायं 4 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं मंचीय प्रस्तुतियों का समय था। इस कड़ी में 21 महिलाओं द्वारा पीले वस्त्रों में सिर पर सुसज्जित कलश लेकर परिसर के भीतर ही कलश यात्रा का आयोजन था। यात्रा के अंतिम बिन्दु पर सभी कलशों को मंच पर प्रतिष्ठापित कर दिया गया। तत्पश्चात् महाराजा हरिश्चन्द्र जी तथा स्वामी विवेकानन्द जी के चित्रों पर पुष्पार्चन के बाद मंच स्थापना की गई। मंच पर आसीन थे लखनऊ हरि. वं. स. के अध्यक्ष श्री राजन जी, महामंत्री श्री प्रदीप जी, स्वास्थ्य परीक्षण समिति के अध्यक्ष श्री दीपक जी, रोहिताश्व पत्रिका समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश जी, लखनऊ समाज के उपाध्यक्ष श्री संजीव जी, होलिकोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री चन्द्र कृष्ण जी, श्रीमती संध्या रस्तोगी अध्यक्ष महिला समिति, मुरादाबाद से श्री काव्य सौरभ जैमिनी जी, लखनऊ से विशिष्ट अतिथि श्रीमती रिचा रस्तोगी, IRS एवं सह कमिश्नर आयकर, कानपुर से पधारे विशिष्ट अतिथि डॉ. विनोद रस्तोगी, जयपुर से पधारे विशिष्ट अतिथि श्री राकेश जी CA आदि। मंच स्थापना के बाद श्रीमती रागिनी जी द्वारा महाराजा हरिश्चन्द्र स्तुति का गायन किया गया। फिर लखनऊ नगर समिति के महामंत्री श्री प्रदीप जी द्वारा समिति का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इसके बाद मंचासीन पदाधिकारियों तथा अतिथियों को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् नगर उपाध्यक्ष श्री संजीव रस्तोगी द्वारा समाज की आधुनिक परिवेश में स्थिति पर अपना संबोधन किया गया। इसके बाद 5 से 10 वर्ष के बच्चों का फैन्सी ड्रेस शो प्रस्तुत किया गया जिसमें लगभग 15 बच्चों ने भाग लिया। भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

सायं 5.45 बजे समारोह के मुख्य अतिथि लखनऊ से सांसद और माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का आगमन होता है। श्री राहुल राज रस्तोगी उन्हें पुष्प गुच्छ देकर स्वागत करते हैं तथा उन्हें मंच पर आसीन कराते हैं। माननीय राजनाथ सिंह जी ने दीप प्रज्जवलन करके महाराजा हरिश्चन्द्र एवं स्वामी विवेकानन्द जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करके कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। माननीय रक्षामंत्री के साथ मंच पर आसीन थे श्री नीरज बोरा विधायक, श्री आशुतोष टण्डन विधायक, श्री मुकेश शर्मा MLC व नगर अध्यक्ष, श्रीमती संयुक्ता भाटिया मेयर। माननीय श्री राजनाथ सिंह जी के आगमन के कुछ समय पश्चात् माननीय उप मुख्य मंत्री श्री ब्रजेश पाठक जी का भी मंच पर आगमन हुआ। सभी समानित अतिथियों का मंच पर सम्मान किया गया।

तत्पश्चात् श्री हरिजीवन जी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुये अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने चिर परिचित अंदाज में समाज की भावी योजनाओं हेतु 10 बीघा जमीन की आवश्यकता बतलाई। विशाल मल्टी स्पेशियलटी अस्पताल, अनाथाश्रम, विधवाश्रम, अन्नपूर्णा भोजनालय आदि की रूप रेखा प्रभावी ढंग से रखी। इसके बाद बारी थी मुख्य अतिथि के संबोधन की। माननीय रक्षामंत्री जी खचाखच भरे हुए हाल तथा समाज की गरिमामयी छवि से इतने अभिभूत हो गये कि उन्होंने 10 मिनट के स्थान पर 30 मिनट तक संबोधित किया था समाज को 10 बीघा जमीन देने हेतु आशान्वित भी किया। इसके बाद माननीय उप मुख्य मंत्री श्री ब्रजेश पाठक जी ने भी समाज के सेवा कार्यो की भरपूर सराहना करते हुए शासन द्वारा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

माननीय मुख्य अतिथि के प्रस्थान के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा बाकी सम्मान के कार्यक्रम चलते रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रमुख थी महाराजा हरिश्चन्द्र जी के जीवन चरित्र पर प्रस्तुत लघु नाटिका जिसे प्रस्तुत किया था श्रीमती अंजली रस्तोगी के निर्देशन में यशोदा देवी बाल शिक्षा निकेतन के बच्चों ने। इसके बाद बेबी मिशिका ने देश भक्ति के गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया। नृत्य ''कान्हा सो जा'' प्रस्तुत किया अनुष्का, प्रिया,

आसिया और काश्वी ने। एक सुन्दर नृत्य संरचना–''जय भारतम्'' प्रस्तुत की गई जिसका संयोजन किया था श्रीमती आरती नातू ने और कलाकार थे–नवनीत, अनन्त, स्मृति, सारिया, चारू, नीलान्जन, अंशिका, प्रीति, प्रिया और माही। नृत्य ''शिव स्तुति'' प्रस्तुत किया–अनुष्का, प्रिया, आश्रिया ने।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच–बीच में मेधा सम्मान, विशिष्ट प्रतिभा सम्मान, 50 वर्ष से अधिक दाम्पत्य जीवन निर्वाह वाले युगलों का सम्मन, युवा दम्पत्ति सम्मान, वरिष्ठ जन सम्मान आदि कार्यक्रम भी चलते रहे जिसमें उपस्थित सभी प्रतिभागियों को अंगवस्त्र उढ़ाकर और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

समस्त कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन किया श्री प्रकाश चन्द्र जी ने। महोत्सव के आयोजन में सर्व श्री विष्णु बल्लभ जी, प्रमेश जी, ब्रजेश जी, दिनेश जी, विनीत जी, ब्रजेन्द्र जी, सुधांशु जी, मनोज जी, रितेश जी, विनय कृष्ण जी, बाल कृष्ण जी, सत्य प्रकाश जी, विजय जी, कृष्ण जीवन जी, अभिनव जी, सुधीर जी, रवि जी, श्रीमती विभा, श्रीमती रागिनी, श्रीमती सीमा, श्रीमती प्राची आदि का सहयोग सराहनीय रहा। इसके अतिरिक्त लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय समाज, हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति, हरिश्चन्द्र दर्पण समिति तथा समाज के समस्त कार्यकर्तागण इस अत्यन्त सफल आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं।

अन्त में नगर महामंत्री श्री प्रदीप जी द्वारा आये हुए समस्त अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। महोत्सव में आये हुए समाज के समस्त परिवारीजनों के लिए रात्रिभोजन की व्यवस्था थी। इस प्रकार हंसी–खुशी और हर्षोल्लास के बीच रात्रि लगभग 10 बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रकाश चन्द्र रस्तोगी
समर बिहार, आलमबाग, लखनऊ

''हमारा अपना उत्सव''लखनऊ में बाहर से पधारे प्रमुख अतिथिगण

कानपुर से –
डॉ. विनोद चन्द्र रस्तोगी
श्री इन्द्र मोहन रस्तोगी
श्री अनिल रस्तोगी कौड़िया
श्री राम बाबू

प्रयागराज से –
श्री हरि ओम
श्री राजेश

जयपुर से –
श्री राकेश रस्तोगी, श्री सूर्येन्द्र रस्तोगी
श्री सुनील रस्तोगी

गोन्डा से –
राजीव रस्तोगी 'चेयरमैन'

बहराइच से –
यज्ञ प्रकाश

मुरादाबाद से –
काव्य सौरभ जैमिनी

हरिश्चन्द्र शिरोमणि सम्मान–

श्री चन्द्र किशोर रस्तोगी (बाबू जी)
31 जनवरी 2023 को आपकी इस लोक की यात्रा समाप्त हो गई।

विशिष्ट प्रतिभा सम्मान

1 . **डॉ. अनिल रस्तोगी**
विज्ञान, कला एवं रंगमंच, अभिनय, नाटक
2. **श्री कृष्ण रतन रस्तोगी–सी.ए.**
3. **श्री प्रकाश चन्द्र रस्तोगी**
जूडो विश्व रिकार्ड धारक, साहित्यकार
4. **श्री राघव रस्तोगी**
सेठ विशम्भरनाथ तकनीकी संस्थान के चेयरमैन
5. **मास्टर अथर्व किशोर** – स्केटिंग खिलाड़ी
6. **मास्टर आर्य किशोर** – स्केटिंग खिलाड़ी
7. **मास्टर प्रणव रस्तोगी**
राष्ट्रीय स्तर के शतरंज खिलाड़ी
8. **बेबी काव्या रस्तोगी** – ताईक्वानडू ब्लैक बेल्ट
9. **श्री अमित रस्तोगी** – हनीमैन साइंटिफिक लैब
10. **श्री प्रेम किशोर रस्तोगी** – मार्क्स लैबोरेटरीज
11. **श्री अतिन रस्तोगी**
अन्तर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस खिलाड़ी
12. **कु. उत्सवी रस्तोगी** – राष्ट्रीय टेबल टेनिस खिलाड़ी
13. **कु. ताश्वी रस्तोगी** – राष्ट्रीय टेबल टेनिस खिलाड़ी

मेधा सम्मान

1. **श्रेय रस्तोगी** – एम.टेक. उत्तीर्ण (2021)
2. **शातुल्य रस्तोगी** – एम.बी.ए. उत्तीर्ण (2020)
3. **श्रेया रस्तोगी** – कक्षा–10 97.2 प्रतिशत अंक
4. **सक्षम रस्तोगी** – कक्षा–10 99.4 प्रतिशत अंक
5. **मुस्कान रस्तागी** (बदायूं) कक्षा–10 98 प्रतिशत अंक
6. **अनुराग रस्तोगी** – सी.ए. उत्तीर्ण (2021)
7. **शिवांश रस्तोगी** – कक्षा – 10 98.2 प्रतिशत अंक
8. **देवांग रस्तोगी** – कक्षा – 10 99.6 प्रतिशत अंक

प्रतियोगिता में प्रथम

चित्रकला प्रतियोगिता – **कु. पाखी रस्तोगी** प्रथम
रंगोली प्रतियोगिता – **श्रीमती रुचि रस्तोगी** प्रथम
कलश सज्जा प्रतियोगिता – **श्रीमती गीता रस्तोगी** प्रथम
मेंहदी प्रतियोगिता – **श्रीमती रचना रस्तोगी** प्रथम

वरिष्ठजन सम्मान

1. श्री विजय कुमार जी
2. श्री सत्य प्रकाश रस्तोगी
3. श्री चन्द्र कृष्ण रस्तोगी
4. श्री नवनीत लाल रस्तोगी
5. श्रीमती प्रेमा "नगेन्द्र" नाथ
6. श्रीमती मांडवी रस्तोगी
7. श्री प्रयाग नारायण रस्तोगी
8. श्रीमती जूही रस्तोगी
9. श्री राजकृष्ण रस्तोगी (गैलेन्ट)
10. प्रो. राजशरण रस्तोगी
11– श्रीमती विजय लक्ष्मी जी (गैलेन्ट)
12. श्रीमती सन्तोष रस्तोगी
13. श्री हरि नारायण रस्तोगी
14. श्री विजय कुमार रस्तोगी
15. श्री राम कुमार रस्तोगी
16. श्री सुभाष चन्द्र रस्तोगी
17. श्री बाबूराम रस्तोगी
18. श्री चन्द्र प्रकाश रस्तोगी
19. श्री हरि श्याम रस्तोगी
20. डॉ. सरला रस्तोगी
21. श्रीमती चुन्नी देवी रस्तोगी
22. श्री बालकृष्ण रस्तोगी
23. श्री नवनीत रस्तोगी (मंगल)
24. श्रीमती चन्द्रमणि रस्तोगी
25. श्री राज किशोर रस्तोगी (पनामा वाले)

दाम्पत्य जीवन की स्वर्ण जयंती

1. डॉ. नवजीवन एवं श्रीमती सुधा जी
2. श्री चिरंजन दास एवं श्रीमती अरुणा दास
3. श्री कमल किशोर एवं श्रीमती उर्मिला देवी
4. श्री जवाहर लाल एवं श्रीमती बीना रस्तोगी
5. श्री नवनीत लाल जी एवं श्रीमती कुसुम रस्तोगी
6. डॉ. अमरनाथ एवं डॉ. सरोज
7. श्री मदन मोहन जी एवं श्रीमती कंचन जी
8. श्री फूल चन्द्र जी एडवोकेट एवं श्रीमती शैल रस्तोगी
9. श्री सुशील रस्तोगी एवं श्रीमती प्रभा जी
10. श्री अजीत जी एवं श्रीमती रंजना जी
11.श्री सतीश जी एवं श्रीमती चेतना
12. श्री तेज नारायण एवं श्रीमती सुमन
13. श्री ओम प्रकाश एवं श्रीमती रागिनी
14. श्री लखन एवं श्रीमती पुष्पा
15. श्री जमुना दास एवं श्रीमती पुष्पा
16. श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्रीमती शोभा
17. श्री भूपेन्द्र नाथ एवं श्रीमती चित्रा
18 .श्री सुशील कुमार एवं श्रीमती उर्मिला जी
19. श्री कैलाश नाथ एवं श्रीमती पुष्पा (डॉ. मनु)
20. श्री जगदीश रस्तोगी एवं श्रीमती मधुलिका
21. श्री गंगा कांत रस्तोगी एवं श्रीमती उमा
22. श्री राज किशोर एवं श्रीमती रानी
23. श्री विजय कुमार एवं श्रीमती कृष्णा देवी
24. श्री गोविन्द रस्तोगी एवं श्रीमती विजय लक्ष्मी रस्तोगी
25. श्री शरद कुमार रस्तोगी एवं श्रीमती प्रमोदिनी
26. श्री श्याम रस्तोगी एवं श्रीमती सुनील रस्तोगी
27. श्री रामकृष्ण रस्तोगी एवं श्रीमती ममता रस्तोगी
28. श्री जगदीश शरण एवं श्रीमती किरण
29. श्री सुरेश कुमार रस्तोगी एवं श्रीमती उषा
30. श्री विजय कुमार रस्तोगी एवं श्रीमती उर्मिला रस्तोगी
31. श्री हरि मोहन रस्तोगी एवं श्रीमती कविता रस्तोगी
32. श्री कीर्ति किशोर रस्तोगी एवं श्रीमती उषा रस्तोगी
33. श्री राजेन्द्र श्याम रस्तोगी एवं पुष्पा देवी

शौक या हाबी

शौक या हाबी से मेरा मतलब है कि प्रसन्नता और मनोविनोद के लिए कोई काम बार–बार खाली समय के दौरान करने की तीव्रता या प्रबल लालसा। शौक में थीम वाली वस्तुओं को इकट्ठा करना, रचनात्मक और कलात्मक गतिविधियों में संलग्न होना ,खेलना या चित्रकला बनाना, नृत्य करना, पेंटिंग करना, बागवानी करना, फिल्म देखना या पशु–पक्षी पालना, शायरी, कविता या लेख लिखना या अन्य मनोरंजन करना शामिल है। शौक से हमें खुशी मिलती है और आंतरिक प्रसन्नता भी मिलती है, जिससे हमारे जीवन में जीवंतता बनी रहती है।

हर एक व्यक्ति में कोई न कोई शौक जरूर होता है किसी को जानवरों से तो किसी को पशु पक्षियों से प्यार होता है जैसे कुत्ता बिल्ली खरगोश तोता मैना आदि। कुछ लोगों को बागवानी का शौक होता है। यह लोग फूल साकभाजी के पौधे लगाने में अपना समय व्यतीत करते हैं। कुछ लोग अपनी छत पर या बालकनी में या किचन गार्डन में पौधे लगा लेते हैं। कुछ लोगों का शौक संगीत से होता है। वह अपना समय संगीत अथवा नृत्य में व्यतीत करते हैं। किसी को लेखन कविता नाटक या शायरी का शौक होता है तो किसी को चित्रकला का शौक होता है। कुछ लोगों को डिजाइनर कपड़े, गहने, मोबाइल या बाल बनाने का शौक होता है। कुछ लोगों को डाक टिकट या पुरानी करेंसी इकट्ठा करने का शौक होता है। कुछ लोगों को खेलने या तैरने का शौक होता है। कुछ लोगों को driving का शौक होता है। कुछ लोगों को दोस्त बनाने का, कुछ लोगों को अपनी तारीफ सुनने का बड़ा शौक होता है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि शौक हर एक मनुष्य के पास विद्यमान रहती है जो समय के साथ प्रस्फुटित हो जाती है। शौक से मनुष्य को आनंद व शांति का अनुभव होता है। वह तनाव से मुक्त रहता हैं और दूसरों को प्रेरणा भी देते हैं। ऐसे लोग हंसमुख मिलनसार होते हैं तथा समाज में जल्दी ही घुल मिल जाते हैं और जहां भी जाते हैं एक खुशबू बिखेर देते हैं

अंत में मैं यही कहूंगा
वक्त की सीढ़ियों पर उम्र तेज चलती है
जवां रहोगे कोई शौक पाल कर रक्खो।

डॉ. स्वतंत्र कुमार रस्तोगी
गोमती नगर विस्तार लखनऊ

होलिकोत्सव : विशाल होली मिलन एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय होलिकोत्सव समिति लखनऊ ने गत 16 मार्च को सुभाष मार्ग, राजाबाजार निकट हवेली श्री गोवर्धन नाथ जी, विशाल होली

मिलन एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्य अतिथि–परमपूज्य गोस्वामी 108 श्री श्याम मनोहर जी महाराज एवं उनके युवराज गोस्वामी 105 श्री प्रियुन्दु महाराज श्री काशी विराजते के आगमन से हुआ। उनको श्रध्दासुमन अर्पित करने पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ हुये। श्रीमती आरती नाटू द्वारा निर्देशित, सांस्कृतिक संस्था– निनाद नृत्य कला केन्द्र एवं तिलकधारी झांकी गुप–लखनऊ द्वारा अनेक मनोरंजक भक्तिपूर्ण झॉकियॉ प्रस्तुत की गईं। जिनकी अत्यधिक

सराहना की गई। जिनमें गणेश वन्दना, राधाकृष्ण नृत्य नाटिका, निनाद कला केन्द्र की सांस्कृतिक प्रस्तुति, शिव–पार्वती नाटिका आदि प्रमुख थीं। ज्योति ठाकुर एवं अभिनव रस्तोगी ने बहुत ही सुंदर एंकरिंग की। पूरा कार्यक्रम सुव्यवस्थित, मनोरंजक, सनातन धर्म की मान्यताओं के अनुरूप था, जो कि गत वर्षों में प्राप्त अनुभव की परिणति था। सबसे विशेष अवसर तब आया जब स्टेज से उतर कर राधा–कृष्ण प्रांगण में आ गये और समस्त होरियारों को भी नृत्य करते हुये पुष्पों की होली खेलने का अवसर मिला। कार्यकारणी के सदस्यों का अभिनन्दन किया गया।

किसी राज नेता का न आना भी नही खला उनके आने से कार्यक्रम की तारतम्यिता प्रभावित होती है।

चाट, भोजन आदि का प्रबंध अति उत्तम था।

निमंत्रण पत्र के विज्ञापन दाता, संरक्षक समिति के सदस्य एवं वार्षिक सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सहयोग के कारण ही कार्यक्रम का आयोजन हो पाता है।

पूर्व में 7 मार्च को विशाल होली बारात निकाली गई। जो कि श्री राम किशोर जी के हाते से प्रातः 11 बजे प्रारंभ हुई। ज्ञातव्य है कि गत 90 वर्षों से बारात निकाल कर होली के उत्सव

का आनंद लिया जाता है। इस वर्ष होली की बारात में 5 ऊँट, 11 रथ, 2 डीजे बैन्ड, राधाकृष्ण नृत्य मन्डली, गुलाल अमीर, आशा

बास बैन्ड आदि थे।

इस वर्ष होली की तिथि में भ्रम रहने के कारण बारात में होरियारो की संख्या अपेक्षाकृत कम रही। समाज के अन्य संगठनों द्वारा मार्ग में बारात का स्वागत करने की परंपरा पर भी विचार होना चाहिए।

प्रस्तुति

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी
मीडिया प्रभारी
हरिश्चन्द्र वंशीय रस्तोगी समाज,
लखनऊ

अभिनव रस्तोगी
एंकर एवं सहमंत्री
होलिकोत्सव समिति

विनम्रता सभी गुणों की आधार शिला

सज्जनता का चिह्न है विनम्रता । इसी को सभ्यता और शिष्टाचार भी कहते हैं। हमारे विचारों में जो कुछ है, वह हमारे विचारों की ही देन है। अच्छे विचार ही अच्छे आचरण के रूप में प्रकट होकर हमारी आदत बन जाते हैं। अच्छी आदतों से ही हमारा चरित्र बनता है। हमारा चरित्र ही हमारा व्यक्तित्व है, ऐसा व्यक्तित्व ही हमारी पहचान है। हमारे कार्य और व्यवहार से हमारे भीतर संजोए गए सद्‌गुण ही प्रकटित होते हैं। विनम्रता ऐसा ही सद्‌गुण है तभी तो 'गुरुग्रन्थ साहिब' में भी विनम्रता जैसे श्रेष्ठ गुण को धारण करने पर बल दिया गया है।

'विनय' शब्द दो प्रमुख अर्थों में प्रयुक्त होता है – एक तो विनम्रता के अर्थ में, दूसरा अनुशासन के अर्थ में। वस्तुतः यह दोनों अर्थों में एक जैसा हो जाता है। यदि कोई "व्यक्ति विनम्र है, तो वह अनुशासित भी अवश्य होगा ही, साथ ही एक अनुशासित व्यक्ति विनम्र भी अवश्य होगा। वस्तुतः विनम्रता का संबंध वाणी और कर्म दोनों से है। वाणी की विनम्रता उच्च शिष्टाचार की द्योतक है, तो विनम्र व्यवहार से अपयश, अपकीर्ति समाप्त हो जाती है। जो विनयशील होते हैं उनकी सर्वत्र प्रशंसा होती है, यदि कभी भ्रमवश ऐसे व्यक्तियों के प्रति कोई भ्रामक प्रचार करता है, तो वह विनयशीलता के आधार पर समाप्त हो जाता है। विनम्रता को इसी महत्ता का " प्रतिपादन इस सूक्ति में किया गया है।

"अकीर्तिं विनयो हन्ति।"

विनम्रता ही शिक्षा का सबसे उत्तम परिणाम है क्योंकि विद्या से प्रथमतः विनय प्राप्त होता है, विनय से प्राप्त होती है योग्यता और योग्यता से धन की प्राप्ति होती है। धन के होने से व्यक्ति उस धन को धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में लगाता है, तब उससे जो संतुष्टि मिलती है वही सच्चा सुख है। इसी तथ्य का उल्लेख इस श्लोक में किया गया है–

" विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मस्ततः सुखम् ।'

कहने का आशय है कि व्यक्ति में जैसे–जैसे विद्या का विकास होता है, वह उतना ही नम्र हो जाता है, किन्तु इससे इतर जिसके पास ज्ञान व बुद्धि का अभाव होता है, वह दिखावा करके अपने आपको ज्ञानी एवं बुद्धिमान प्रदर्शित करना चाहता है। 'थोथा चना बाजे घना' इस उक्ति को अहं कारिता पर चरितार्थ होते देखा जाता है। ऐसे लोग जैसे होते हैं उससे कहीं अधिक बढ़ चढ़कर अपने को व्यक्त करते हैं, बड़ी–बड़ी डींग हाँकते हैं, शेखी बघारते हैं। 'आधी भरी गगरी" जैसे छलकती जाती है वैसे वह मी इतराता फिरता है। इसी संदर्भ में श्रीमद्‌भागवत् में कहा गया है –

"अपनी विद्वता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है ?''

लचक विनम्रता का जीवंत गुण है तभी तो विनम्र व्यक्ति की तुलना इलास्टिक से की जा सकती है, जो अत्यंत लोचदार होती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए इलास्टिक की भाँति लोचदार होना अत्यावश्यक है। जो व्यक्ति अपने जीवन में इलास्टिक के सदृश लचीलापन लाते हैं, वे सारे संसार में परिवर्तन कर देते हैं। विनम्रता तो एक आध्यात्मिक शक्ति है, दुर्बल स्वभाव के लोग इसे नहीं पा सकते। नम्रता जो शांति के तेज से उज्ज्वल है तथा त्याग और संयम की कठोर शक्ति से दृढ़ प्रतिष्ठित है। जो विनम्र है, वही जगत विजयी है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उचित कहा है.

"एक विनम्र तरीके से आप पूरी दुनिया को हिला सकते है।

"वेदों में ऐश्वर्य के दो प्रकार बताए गए हैं–धन ऐश्वर्य और सद्‌गुण। धन ऐश्वर्य से जीवन सुखी बनता है और सद्‌गुण से जीवन दैवत्व से परिपूर्ण होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह ज्ञान से धन से अथवा शक्ति से सम्पन्न हो नम्र होना चाहिए क्योंकि अहंकार अनेक दुर्गुणों का कारण 'है। रामचरित मानस में त्रिजटा रावण से इसी विनम्रता की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहती है –

"प्रीति विनय विनु मद ते गुनी।
नासहिं वेगि नीति अस सुनी।।"

अर्थात नम्रता न होने से प्रीति और मद से गुणवान शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। लंका का विनाश हो रहा था परन्तु रावण को विनाश कहाँ दिखा ? रावण विद्वान् एवं शक्तिशाली होते हुए भी भगवान राम के हाथों मारा गया क्योंकि उसे अपनी विद्वता और शक्ति पर अत्यंत गर्व था। विनम्रता के अभाव में निन्दित, अपमानित एवं कुलसहित सर्वनाश को प्राप्त हुआ।

जो व्यक्ति जितना अधिक विनम्र होगा वह उतना अधिक सीख पायगा। इसका सटीक उदाहरण हमें महा भारत के उस प्रसंग में दिखाई देता है जब कुरुक्षेत्र का युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व अर्जुन और दुर्योधन दोनों भगवान कृष्ण के पास सहायता मांगने जाते है। अर्जुन ने विनम्र भाव से भगवान का वरण किया जबकि दुर्योधन ने भगवान की सेना का, जिसके परिणाम से सभी अवगत हैं। अर्जुन भगवान से जितना सीख पाए वह आज सारी मानवता के लिए वरदान है जबकि अहंकारी दुर्योधन का विनाश हुआ।

प्रकृति के उपादान बादल एवं वृक्ष भी विनम्रता की महिमा से अछूते नहीं हैं। जल विहीन बादल आकाश में ऊँचे ही मंडराते रहते हैं किन्तु जब वे जल से भरे होते हैं, भारी होते हैं, तो धरती के निकट आकर वर्षा कर जन–जीवन को तृप्त कर देते हैं। इसी तरह वृक्ष में जब तक फल नहीं आते वे गर्व से सीना ताने खड़े रहते हैं किन्तु जैसे ही वृक्ष की शाखाएँ फलों से लद जाती है, उसकी शाखाएँ फलों के भारस्वरूप नीचे की ओर झुक आती हैं। सूक्ति कहती है.

" भवन्ति नम्राः तरवाः फलोद्‌गमैः।"

कहने का आशय है कि झुकने वाला कभी छोटा या कमजोर नही होता बल्कि वह बड़ा या भारी होता है। तराजू का वही पलड़ा भारी होता है, जो नीचे झुकता है। संत कबीर के अनुसार–

''कविरा नवै सो आपको, पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तौलिये, नवै सो भारी होय ।।"

इस संपूर्ण सृष्टि का जनक परमपिता परमेश्वर है। जब सभी लोग एक ही परमब्रह्म की सन्तान है, तो सभी के प्रति हमारे व्यवहार में समानता होनी चाहिए, किन्तु यह तभी संभव है जब हमोर हृदय में नम्रता की पवित्र भावना का विकास हो। आत्मिक नम्रता का विकास होते ही हमारे अंदर विद्यमान धन, मान, प्रतिष्ठा और सत्ता जैसे दुर्गुणों का अहंकार स्वतः समाप्त हो जायगा। ऐसी स्थिति में व्यक्ति न तो किसी को हानि पहुँचायेगा न पीड़ा। इन्हीं विशेषताओं के कारण हमारे ऋषियों और मुनियों ने नम्रता को मनुष्यों का भूषण कहा है। यह वह अनमोल रत्न है, जिसकी चमक–दमक कभी फीकी नहीं पड़ती। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संत तिरुवल्लुवर के अनुसार'–

'नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं, शेष सब नाममात्र के भूषण हैं।"

विनम्रता की भावना भारतीय संस्कृति तथा भारतीय विचारधारा 'के सर्वथा अनुकूल है। विनम्र व्यक्ति का जीवन आदर्श रूप होता है और उसके जीवन से समाज के अन्य व्यक्तियों को प्रेरणा मिलती है। अनेक महापुरुषों के ऐसे दृष्टान्त है जिनसे उनकी विनम्रता प्रकट होती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का संपूर्ण जीवन विनम्रता का जीवंत उदाहरण है। विनम्रता की प्रतिमूर्ति व शिखर हैं। अनेक संसाधनों और वैभव से परिपूर्ण होने पर भी उनको रंचमात्र भी आहं न था। उन्होंने बड़े–छोटे सभी के साथ सदैव विनम्र आचरण किया । धनुष भंग होने पर परशुरामजी ने श्री राम के प्रति सीता स्वयंवर के समय कठोर वचनों का प्रयोग किया, किन्तु उन्होंने अपनी नम्रतापूर्ण मृदुवाणी से उनके क्रोध एवं अहं को निर्मूल कर दिया क्योंकि विनम्रता सदैव उग्रता से उत्तम होती है।

योगेश्वर कृष्ण तो शिष्टता एवं विनय की साक्षात् मूर्ति ही हैं। पाण्डवों के राजसूय यज्ञ के समय अन्य सभी लोगों को बड़े–बड़े काम सौंपे किन्तु स्वयं जिन कार्यों का चयन किया वे थे अतिथियों का पद–प्रक्षालन और जूठे पत्तल उठाना। यह थी श्रीकृष्ण की महानता व विनम्रता।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्रप्रसाद जब कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए थे, उस समय यह पद अत्यंत सम्मानीय एवं गौरवशाली हुआ करता था। एक बार 'वे'लीडर' समाचार पत्र के सम्पादक से मिलने गए। चपरासी को कार्ड दिया। चपरासी ने कार्ड सम्पादक की मेज पर रखकर उनसे प्रतीक्षा करने को कहा। राजेन्द्र बाबू के कपड़े वर्षा से भीग गए थे अतः वे पास बैठे मज़दूरों की अँगीठी में अपने हाथ सेकने तथा कपड़े सुखाने लगे। थोड़ी देर बाद सम्पादक की दृष्टि कार्ड पर गई तो वह हड़बड़ाकर उनके स्वागत के लिए स्वयं दौड़े आए और जब उन्होंने राजेन्द्र बाबू को मज़दूरों की अँगीठी पर हाथ सेकते और कपड़े सुखाते देखा तब उन्होंने उनसे क्षमा भाँगी, किन्तु राजेन्द्रबाबू ने हँसते हुए बड़ी सरलता से उत्तर दिया। खाली समय में कपड़े सुखाने का काम निपट गया। ऐसे थे विनम्रता की मूर्ति राजेन्द्र बाबू। भृतहरि का यह कथन उन पर सटीक उतरता है– ""नम्रता के सुमन में नम्रता का सौरभ ही शोभा पाता है।"

रामकृष्ण परमहंस की विनम्रता भी उल्लेखनीय है। एक वार कलकत्ते के एक प्रसिद्ध डाक्टर परमहंसजी से मिलने गए। उस समय परमहंसजी बगीचे में भ्रमण कर रहे थे। डाक्टर साहब ने उन्हें माली समझते हुए कहा– ओ माली। थोड़े से फूल लाकर देना। मुझे परमहंसजी को भेंट करना है। परमहंसजी ने बगीचे से फूल तोड़कर उन्हें दे दिया। थोड़ी देर बाद परमहंसजी सत्संग स्थल पर पहुँचे। डाक्टर साहब ने जैसे ही यह दृश्य देखा, उनको अपनी भूल ज्ञात हुई और इस भूल पर डाक्टर साहब बड़े लज्जित हुए।

सन्त कृपालसिंह का यह कथन परमहंसजी के लिए उचित प्रतीत होती है –

"नम्रता संतों का श्रृंगार है।''

जीवन मे सफल होना ही श्रेयस्कर है किन्तु सफलता के बाद अहंकार का नहीं अपितु विनम्रता के भाव को पोषित करना चाहिए। जिस प्रकार कठोर धातु से सुन्दर प्रतिमा की रचना हेतु धातु को पिघलाना अर्थात नम्र बनाना आवश्यक है, उसी प्रकार व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए उसमें नम्रता का होना अत्यावश्यक है। विनम्रता से ही व्यक्तित्व का आकर्षण बढ़ता है। विनम्रता व्यक्ति के जीवन का भूषण है और ये महापुरुष तो वस्तुतः विजयभूषण ही हैं। अतः इन महापुरुषों से प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। हमारा आचरण नम्र होना चाहिए उसमें स्वार्थ या दिखावे का कोई स्थान नहीं होना चाहिए अन्यथा यह मात्र एक ढोंग होगा। अपने को विशिष्ट और असाधारण मानकर विनय नहीं आ सकता अतः अपने अंदर विनय लाने के लिए अपने को बहुत साधारण और सामान्य समझना चाहिए। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कथन है–

''हम अत्यंत विनम्र होकर ही बड़ों की कुछ समता कर सकते हैं।"

विनम्रता की मधुर गोद में मानव समाज फलता–फूलता है। वैयक्तिक उन्नति परिवर्तित होकर सामाजिक उन्नति बन जाती है। सामाजिक उन्नति के लिए विनम्रता जैसे सद्गुण की अत्यन्त आवश्यकता है। मनुष्य के सभी गुणों का आधार विनम्रता है। इसके अभाव में सभी गुण फीके हैं। विनम्रता स्वयं में एक शक्ति है इसके आगे तो देवता भी झुक जाते हैं। विनम्रता का सबसे बड़ा लाभ आत्मसंतुष्टि होती है जिसके द्वारा हमारी आत्मा को परमसुख का अनुभव होता है। हमारे आंतरिक मन में विनम्रता का विकास आत्मिक विकास का होना माना जाता है फिर वह अंदर और बाहर एक जैसा होता है। उसके रोम–रोम में विनम्रता रूपी अमृत का रस टपकता दिखाई पड़ता है और प्रत्येक स्पन्दन विनम्रता के भावों से भूषित होता है। वस्तुतः विनम्रता ही जीवन की जीवंतता का सारतत्व है। हम सभी को अपने जीवन में विनम्रता जैसे सद्गुण को अवश्य धारण करना चाहिए।

महर्षि अरविन्द ने उचित ही कहा है –

"कोई भी व्यक्ति दूसरे को सद्गुण धारण करना नहीं सिखा सकता है। दूसरे के गुण लेने या सीखने की भूख जब मन में जगती है, तो सद्गुण अपने आप सीख लिए जाते हैं।"

श्रीमती रंजना रस्तोगी
से० नि० शिक्षिका
ल.न.भ.वि.म.ग.ई. कॉलेज
245/73 भवाना सिंह शिवाला रोड,
राजाबाजार, लखनऊ
मो. 7388372745, 775 2899278

गणतांत्रिक देश भारत

गणतन्त्र दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है । राष्ट्रीय पर्व वे होते हैं, जिनका सम्बन्ध जाति विशेष से नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र से होता है । दो सौ वर्षों की लम्बी गुलामी के बाद 15 अगस्त सन् 1947 को भारत दासता की बेड़ियों से मुक्त हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत गणतांत्रिक देश घोषित हुआ। भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रिया आसान नहीं थी। विश्व के प्रमुख संविधानों के अध्ययन और व्यापक विचार–विमर्श के बाद देश के महान विद्वानों ने इसे संविधान का रूप प्रदान किया। संविधान की प्रारूप समिति की 141 बैठकें हुईं। दो साल 11 माह और 18 दिन बाद एक प्रस्तावना , 395 अनुच्छेद एवं आठ अनुसूचियों के साथ स्वतंत्र भारत का मूल संविधान तैयार हुआ। भारत ने 26 नवम्बर , 1949 के दिन इसे अंगीकृत किया और 26 जनवरी 1950 को यह देश में लागू हुआ। हमारा संविधान लचीला है। देश के नागरिकों की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए उसमें परिवर्तन भी होते रहे हैं। लेकिन हम उसके मूल ढाँचे में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। अब तक संविधान में आवश्यकतानुसार 100 से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं। तब भी इसकी मूल भावना अक्षुण्ण बनी हुई है । आज हमारे संविधान में 12 अनुसूचियों सहित 400 से अधिक अनुच्छेद हैं। आज यदि भारतीय लोकतंत्र समय की अनेक चुनौतियों से टकरा रहा है तो इसका श्रेय हमारे संविधान द्वारा निर्मित सुदृढ़ ढाँचों और संस्थागत रूपरेखा को जाता है। संविधान में सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक लोकतंत्र के लिए एक संरचना निर्मित की गई , जिसमें शान्तिपूर्ण और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से विभिन्न राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने और उन्हें प्राप्त करने के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया है। हमारा संविधान केवल एक विधिक दस्तावेज नहीं है अपितु वह समाज के सभी वर्गों की स्वतन्त्रता को संरक्षित करते हुए बिना भेदभाव के समता का अधिकार देता है। इस संविधान के साथ चलते हुए देश ने सात दशकों में अनेकों उपलब्धियाँ हासिल कीं। विश्व का सबसे बड़ा और सफल लोकतंत्र होने का गौरव हमें प्राप्त है। सात दशकों की इस लोकतांत्रिक यात्रा के दौरान देश में लोकसभा के 17 और राज्य विधान सभाओं के तीन सौ से अधिक चुनाव हो चुके हैं , जिनमें मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी हमारे लोकतंत्र की सफलता को दर्शाती है । भारतीय संविधान के भाग तीन में अनुच्छेद –12 से 35 तक नागरिकों के मौलिक अधिकारों का वर्णन तथा अनुच्छेद 51 (ए) में मौलिक कर्तव्यों का वर्णन है । अधिकारों के साथ – साथ कर्तव्य इसलिए जोड़े गए, जिससे देश के लोग संविधान द्वारा प्राप्त अधिकारों से निरंकुश न हो जाएँ, उनमें कर्त्तव्यबोध की भावना बराबर बनी रहे। नए भारत के निर्माण की संकल्पना हो या आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य, ये लक्ष्य जब साकार होंगे, जब देश का हर नागरिक अपने संवैधानिक कर्तव्यों को लेकर पूरी तरह से सजग हो। संविधान की प्रतियाँ आज हर जगह उपलब्ध हैं, लेकिन सबसे पहले जिस संविधान को तैयार किया गया था उसकी मूल प्रति संसद भवन में सुरक्षित है। उसकी छायाप्रति मेरठ कॉलेज , मेरठ में आज भी संरक्षित है। मेरठ कॉलेज में अंग्रेजी में हस्तलिखित संविधान की छायाप्रति है। होल्डर और निब से प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने बहुत सुन्दर तरीके से लिखा है। हर पन्ने पर भारतीय संस्कृति, परम्परा, इतिहास को चित्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। संविधान के पन्नों पर रामायण, महाभारत, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि के चित्र उकेरे गए हैं। संविधान सभा के रहने वाले लोगों के वास्तविक हस्ताक्षर को भी उसमें देखा जा सकता है!

नन्दिनी रस्तोगी 'नेहा'
सम्पादक हरिश्चन्द्र बन्धु

एक परिचय : बुलाकी दास राम स्वरूप विद्या मंदिर

तहसीनगंज, हरदोई रोड, लखनऊ।

विष्णु स्वरूप रस्तोगी
प्रबन्धक

रस्तोगी समाज का 40 वर्ष प्राचीन विद्यालय की स्थापना माण्टेसरी शिक्षा पद्धति के आधार पर सन् 1982 में की गयी थी। इस विद्यालय का नाम प्रबन्धक महोदय के बाबा एवं पिता जी के नाम पर रखा गया था, तभी से लगातार इस विद्यालय में माण्टेसरी से कक्षा आठ तक अंग्रेजी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम द्वारा शिक्षण कार्य चल रहा है किन्तु समाज की मांग के अनुसार इसे आगामी वर्ष 2023–24 में 1 अप्रैल से अंग्रेजी माध्यम द्वारा शिक्षण कार्य होगा।

शिक्षा के साथ–साथ विद्यालय में खेलकूद तथा व्यायाम आदि की भी शिक्षा नियमित दी जाती है। जिनकी प्रतियोगिता विद्यालय स्तर पर आयोजित कर बच्चों को उत्साहित करने हेतु पुरस्कृत भी किया जाता है।

दिनांक 6 जुलाई 2022 को ''भारत विकास परिषद'' महिला शाखा चौक, लखनऊ द्वारा आयोजित कार्यक्रम गुरू वंदन छात्र अभिनन्दन में दो बच्चों कक्षा प्रथम के मयंक तथा कक्षा पंचम की अंशिका को पुरस्कृत किया गया। 5 सितम्बर को शिक्षक–दिवस पर शिक्षिकाओं को प्रोत्साहित करने के लिए श्री विष्णु जी की पत्नी नीता जी द्वारा उपहार देकर उनका उत्साह वर्धन किया गया।

इस वर्ष के अक्टूबर सन् 2022 को गांधी भवन में आयोजित, हिन्दी निबन्ध लेखन नृत्य एवं कला प्रतियोगिता में बच्चों ने भाग लिया। प्राइमरी विभाग के कक्षा प्रथम के पाँच बच्चों ने समूह नृत्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा कक्षा आठ की सानिया ने हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

प्रस्तुति :
श्रीमती नीरज रस्तोगी

हमारा प्यारा गणतंत्र दिवस

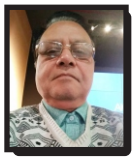

आओ सब मिलकर गणतंत्र दिवस मनाए ,
इसे विश्व का हम सबसे बड़ा गणतंत्र बनाएं,
लागू हुआ था इस दिन नव निर्मित संविधान,
जिसमे है नागरिकों के सब अधिकार समान,
भेदभाव की इसमें कहीं कोई नहीं है नीति,
चाहे हो वह किसी प्रकार की भी हो नीति।
दिल्ली के कर्तव्यपथ पर हम सब इसे मनाते ,
सब मिलकर हम हंसी खुशी से इसे है मनाते ,
सेना के तीनों अंग सलामी देते जाते,
देश के राष्ट्रपति जी इसे लेते ही जाते,
राष्ट्रीय धुन सबके बैंड बाजे है बजाते,
जिसके आगे सबके पैर थिरकते जाते,
गगन में अनेक हवाई जहाज उड़ाए जाते
तरह तरह के वे अपने करतब भी दिखाते,
साथ में तिरंगे के तीनो रंग छोड़ते है जाते,
देखकर सभी देश वासी ताली है बजाते,
होता है इस दिन अनुपम परिदृश्य आसमान में,
देखा नहीं ऐसा दृश्य हमने कभी भी ब्रह्मांड मे ।
तरह–तरह की झांकियां निकलती जाती,
राष्ट्रपति जी को सब सलामी देती जाती,
जल थल नभ की अनेक टुकड़ियां भी आती,
अपने सब हथियारों के साथ सजकर है आती,
सारे विश्व को अपने पराक्रम भी है दिखाती,
इस तरह सेना भी गणतंत्र दिवस हैमनाती।

आर के रस्तोगी
गुरुग्राम

कालेज की जिंदगी का अपना मजा है

कच्ची उम्र का राज था वो,
एक सुनहरा राज था वो,
इमली के स्वाद सा था वो,
हां वो स्कूल का दिन था –2
छूट गए सभी मन की यादें ।।
याद आयेगा मुझको कॉरिडोर की बातें
असेंबली की डर से स्कूल देर से जाना,
और हां टीचर का हौले से ये कहना
इंटर कर लो फिर मौज ही मौज है,
हां वो स्कूल का दिन था – 2,
छूट गईं सभी मन की सारी यादें ।।
बिछुड़ गए कुछ यार पुराने
मिले कुछ यार नए
सब कुछ नया है क्योंकि
कालेज की शुरुआत है
शिक्षा की नयी दुनिया है,
गुरुओं का नया समा है
घबराहट है सीने में,
एक अजीब–सा डर है क्योकि
कॉलेज की शुरुआत है
दिन गुजरने लगा,घबराहट खत्म होने लगी –2
कुछ नए दोस्त ,कुछ गुरु मिले पुराने जैसे
हम भी घुलने लगे माहौल में,
अब समझ आया वो डर,
था कॉलेज में रैग्गिंग का – 2
कॉलज आये तो समझ आया
वो तो टेलेविजन की बातें है
कॉलेज की जिंदगी का भी अपना मजा है

अविरा रस्तोगी
महादेवन टोला, फतेहपुर

होली की सौगात

जो रूलाना है परवाने को,
रोता है शमा बनकर।
जो हसाँता है परवाने को,
हसँता है शमा बनकर।
एक बार एक कली से,
मुझको प्यार हो गया।
उसकी एक अदा में,
मेरा दिल खो गया।।
एक साज और श्रृंगार मिल गया,
खुदा से जैसा चाहा ताज मिल गया।
एक दिन एकान्त गली में,
उस नूर से मुलाकात हो गयी।
जैसे किसी शराबी को,
खोई होई शराब मिल गयी।।
वह नूर बोली इस अदा से,
आओ बात करें प्यार की।
मैने कहा रूठकर इस समय,
खाक प्यार को बदनाम न कर।।
वह कहने लगी मुस्कारे के,
के प्यार ? जिसका दिल दार न हुआ।
मैने कहा बेरूखी से वो दृश्य क्या ?
जिसका हुश्न दार न हुआ।।
नूर से इस तकरार में,
प्यार का एक सुराग मिल गया।
जैसी किसी राह को अपनी,
खोई हुई मंजिल मिल गयी।।
वो नूर इस अदा से,
सब कुछ कह गयी।
जैसे 'दास' को किसी की खोई हुयी,
'होली की सौगात' मिल गयी।।

चतुर्भुज दास रस्तोगी
223 / 168, रस्तोगी टोला
राजाबाजार, लखनऊ
मो. : 7474784230

।। श्री कृष्णाय नमः ।।

ग्यारहवाँ अध्याय विश्वरूप दर्शन योग
ग्यारहवें अध्याय का सार

प्रभु ने पहले शब्दरूप से ब्रह्मरूप को बतलाया।
फिर विभूतियों के वर्णन से कुरुश्रेष्ठ को समझाया।।
नहीं समझ पाया अर्जुन जब इस प्रकार से प्रभु का रूप।
बोला प्रभु से मुझे दिखाओ अब तुम अपना ब्रह्मस्वरूप।।
प्रभु ने तब स्वीकार किया पुरुषर्षभ के अभिनन्दन को।
विश्वरूप दर्शन प्रभु का फिर हुआ तभी कुरुनन्दन को।।

अर्जुन बोले–

गूढ़ वचन अध्यात्म विषय पर कहा प्रभु ने देकर ज्ञान।
प्रभु के अनुग्रह के माध्यम से दूर हुआ मेरा अज्ञान ।। 1
आदि अन्त सब जड़ चेतन का कमलनयन तुमसे जाना।
और सुनी है प्रभु तुम्हारी अविनाशी महिमा नाना।। 2
वर्णन जैसा किया आपने रूप आपका वैसा है।
दर्शन दो प्रत्यक्ष मुझे वह रूप आपका कैसा है ।। 3
योगेश्वर वह रूप आपका यदि देखा जाना संभव ।
अविनाशी स्वरूप के दर्शन का मुझको होवे अनुभव ।। 4

श्री भगवान बोले–

नाना रंगों आकृतियों के दिव्य रूप तुम देखो पार्थ।
शत सहस्त्र रूपों का मेरे दर्शन तुमको मिले यथार्थ ।। 5
वसु आदित्य अश्विनीकुमारों मरुद्गणों को भी तू देख।
जो पहले हों कभी न देखे बहुविध अचरज मुझमें देख।। 6
एक साथ मेरे शरीर में जड़ चेतन सृष्टि सब देख।
गुडाकेश तू जो कुछ चाहे मेरे इस शरीर में देख ।। 7
सक्षम नहीं ये नेत्र तुम्हारे विश्वरूप के दर्शन को ।
दिव्य चक्षु मैं तुम्हे दे रहा योगशक्ति दिग्दर्शन को।। 8

संजय धृतराष्ट्र से बोले –

परम दिव्य ऐश्वर्ययुक्त वह रूप दिखाया माधव ने।
महायोगियों के ईश्वर और पापविनाशक यादव ने ।। 9
अगणित मुख और नेत्रयुक्त वह अद्भुत दर्शनवाला था।
दिव्य अस्त्र और आभूषण से प्रभु का रूप निराला था।। 10
दिव्य वस्त्र और मालाधारी दिव्य गन्ध लेपन से युक्त।
था विराट वह विस्मयकारी रूप सभी सीमा से मुक्त।। 11
भरे हजारों रवि की आभा एक साथ नभमंडल को।
वह भी शायद ही छू पाये प्रभु के आभामंडल को ।। 12
तब विभक्त सम्पूर्ण जगत को अर्जुन ने प्रभु में देखा।
देवों के भी देव कृष्ण में एक जगह स्थित देखा ।। 13
शीश झुकाकर परमेश्वर को कर प्रणाम तब मुँह खोला ।
अचरज से रोमॉच सहित फिर हाथ जोड़ अर्जुन बोला।। 14

अर्जुन बोले–

सभी देवता और प्राणियों को मैं तुममें देख रहा।
कमलासन पर बैठे ब्रह्मा दिव्य सर्प ऋषि देख रहा ।। 15
विश्व विधाता रूप अनंता उदर नेत्र मुख भुजा अनेक।
आदि मध्य और अंत न जिसका सारे जग का स्वामी एक ।। 16
मुकुट चक्र और गदा सुशोभित तेज सूर्य और अग्नि समान।
अमित अपार तेज से जिसके चकाचौंध नेत्रों को जान।। 17
अक्षरब्रह्म ज्ञान के दाता तुम्ही सनातन पुरुष विधाता।
तुम्ही अनादि धर्म के रक्षक तुम्ही जगत के आश्रयदाता ।। 18
आदि मध्य और अंत नहीं है है असीम जिसकी सामर्थ्य।
सूर्य चन्द्र हैं नेत्र आपके भुजा गिनूँ मैं हूँ असमर्थ ।
मुख प्रज्वलित अग्नि सा तेजस नहीं और कोई वैसा है,
सारा विश्व प्रकाशित जिससे तेज आपका ऐसा है।। 19
पृथ्वी नभ के बीच व्याप्त तुम सभी दिशा तुमसे अभिनीत।
अद्भुत उग्र रूप यह पाकर तीनों लोक हुए भयभीत।। 20
सभी देवता आपमें ही कर रहे प्रवेश,
कर जोड़े भयभीत हो करते वन्दन शेष।
ऋषि महर्षि सिद्ध सब करते स्तुति गान,
सभी कामना कर रहे कर दो प्रभु कल्यान ।। 21
रुद्र वसु आदित्य असुर और सिद्धों के समुदाय,
विश्वेदेव और साध्यगणों को प्रभु का दरस सुहाए।
पितर यक्ष गंधर्व मरुद्गण और अश्विनीकुमार,
विस्मित हो कर देखते प्रभु को बारंबार ।। 22
नेत्र भुजा मुख हाथ अनेकों दॉत बहुत विकराल,
उदर चरण जंघा अनेक हैं और आकार विशाल।
देख देख इस विषम रूप को व्याकुल हैं सब लोक,
मैं भी अचरज से व्याकुल हूँ प्रभु के रूप विलोक ।। 23
जगमग जो देदीप्यमान है और नभ को छूने वाला,
खुले हुए मुख हैं विशाल और तेजस्वी नेत्रों वाला।
रूप देख कर प्रभु का ऐसा अन्तर्मन भयभीत है,
शान्ति नही है मन में मेरे धैर्य न मेरा मीत है।। 24
मुख प्रज्वलित प्रलय अग्नि सा जिसमें दॉत बड़े विकराल,
दिशा ज्ञान मैं भूल गया हूँ इसे देख यह मेरा हाल।
शाँति नहीं मुझको मिल पाती हे देवों के देव विधाता,
हो जाओ अब तुम प्रसन्न तुम ही हो जग के आश्रयदाता।। 25
मेरे बड़े प्रमुख योद्धा और भीष्म कर्ण संग द्रोणाचार्य।
राजाओं के झुंड सहित धृतराष्ट्रपुत्र होकर लाचार।। 26
वेगयुक्त करते प्रवेश विकराल दाढ़ वाले मुख में।
चिपक गये हैं चूर्ण हुए सिर पिसकर दाँतों से मुख में।। 27
ज्यों प्रचंड धारायें नदी की बहती सागर सम्मुख में।
वैसे ही समूह वीरों के खो जाते प्रदीप्त मुख में।। 28
वेगवान हो जल जाते हैं ज्यों अग्नि के बीच पतंग।
वैसे ही मिट जाने को करते प्रवेश सब तेरे अंग।। 29
अपने जलते हुए मुखों से निगल रहे सब लोकों को ।
उग्र तेज हे विष्णु आपका तपा रहा सब लोकों को।। 30
हो प्रसन्न और मुझे बताओ उग्र रूप वाले तुम कौन,
हे देवों के देव आपका नमन करूँ मैं होकर मौन ।
नहीं जानता हूँ स्वभाव को आदि पुरुष के मैं नादान,

ज्ञात करूँ मैं तत्व आपका चाह करूँ होकर अंजान ।। 31

श्रीभगवान बोले–

नाश करूँ मैं सब लोकों का महाकाल कहलाता हूँ,
लोकों का संहार करूँ मैं इसीलिए फिर आता हूँ।
नहीं करे तू युद्ध स्वयं तो भी ये मारे जायेंगे,
ये सब सेनाओं के योद्धा फिर भी ना बच पायेंगे।। 32
इसीलिए तू उठ जा अर्जुन विजय प्राप्त कर यश को भोग,
समृद्धि सम्पन्न राज्य के राजसुखों को तू भी भोग।
मार चुका हूँ पहले से ही इन सबको मैं कुरुनन्दन,
तो केवल साधन ही है दोष नहीं तेरा अर्जुन ।। 33
कर्ण जयद्रथ भीष्म द्रोण और अन्य वीर मैंने मारे।
उन्हें मारकर तू मत दुखकर शत्रु युद्ध तुझसे हारे।। 34

संजय धृतराष्ट्र से बोले–

सुन केशव के वचन मुकुटधारी अर्जुन भयभीत भया।
लगा कॉपने हाथ जोड़कर रुद्ध कंठस्वर भीग गया।। 35

अर्जुन बोले–

सब प्रसन्न और प्रेम मगन हैं जो करते तेरा गुणगान।
राक्षस भय से भाग रहे हैं करें सिद्धजन तुम्हें प्रनाम ।। 36
नमन योग्य तुम महान् आत्मा तुमसे बड़े न आदि ब्रह्म।
तुम देवेश जगत के आश्रय तुम्ही सच्चिदानंदघन ब्रह्म ।। 37
तुम्ही सनातन पुरुष तुम्हीं इस जग के आश्रयदाता हो,
रूप तुम्हारा है अनंत तुम आदि देव विधाता हो।
तुम्ही जानने योग्य सभी के तुम्ही जानने वाले हो,
सारा जगत व्याप्त है तुमसे परमधाम रखवाले हो।। 38
तुम्ही वायु हो तुम ही यम हो और अग्नि भी तुम ही हो,
तुम्ही वरुण हो तुम्ही चन्द्र हो प्रजापति भी तुम ही हो।
प्रजापति के पिता ब्रह्म हैं पिता ब्रह्म के कहें तुम्हें,
कोटि कोटि है नमन तुम्हारा बारंबार प्रणाम तुम्हें।। 39
है अनंत सामर्थ्य तुम्हारा सीमाहीन पराक्रम है,
सारा जगत व्याप्त है तुमसे सर्वरूप पुरुषोत्तम है।
आगे से भी नमन तुम्हारा और पार्श्व से नमन करूँ,
नमो नमो हे मधुसूदन सब ओर तुम्हारा नमन करूँ।। 40
अनजाने में कहा आपको सखा, कृष्ण, यादव हे मित्र ।
बिन जाने महिमा को मैंने कहा प्रेमवश, ना अन्यत्र।। 41
कभी हास परिहास मनोरंजन या भोजन के दौरान,
परिजन के संग या एकांत में या हो शय्या पर विश्राम।
किया आपको यदि अपमानित होकर मैंने सीमाहीन,
क्षमा माँगता हूँ मैं तुमसे हे अचिन्त्य तुम हो क्षयहीन।। 42
वैभवशाली, जगतपिता, गुरु, पूज्य, गुरू से भी तुम श्रेष्ठ।
तीन लोक में नहीं आपसा भला आपसे कैसे ज्येष्ठ।। 43
करूँ दंडवत और प्रार्थना सहन करो मेरे तम को।
पिता पुत्र को मित्र मित्र को जैसे प्रेमी प्रियतम को।। 44
प्रथम बार यह रूप देखकर हूँ प्रसन्न, भयभीत, उदास ।
देव रूप के दर्शन दो होकर प्रसन्न हे जगन्निवास ।। 45
मुकुट शीश पर, गदा लिए और चक्र हाथ में धारण कर।
दर्शन दो हे विश्वरूप तुम रूप चतुर्भुज धारण कर ।। 46

श्रीभगवान बोले–

हो प्रसन्न तुमको दिखलाया योगशक्ति से रूप अनन्त।
तेजोमय यह रूप किसी ने देखा होगा नहीं दिगंत ।। 47
कर्मकांड, तप, दान, अध्ययन या फिर वेद यज्ञ में ही।
रूप हमारा सिवा तुम्हारे देख सके ना जग में ही ।। 48
भ्रम में पड़कर व्याकुल मत हो रूप भयानक मेरा देख।
भय को तजकर हो प्रसन्न मन पूर्वरूप तू मेरा देख ।। 49

संजय धृतराष्ट्र से बोले–

ऐसा कहकर वासुदेव ने सौम्यरूप फिर दिखलाया।
भय से व्याकुल अर्जुन को केशव ने धीरज बँधवाया ।। 50

अर्जुन बोले–

देख आपका सौम्य रूप अब चित्त हमारा स्वस्थ हुआ।
मानस रूप देखकर फिर से मन मेरा आस्वस्त हुआ ।। 51

श्रीभगवान बोले–

देखा है जो रूप आज तुमने वह तो अति दुर्लभ है।
इच्छा करते सदा देवता फिर भी उन्हें न सुलभ है।। 52
वेद पाठ तप दान यज्ञ से भी दिखना ना संभव है।
रूप जो तुमने देखा वैसा सबके लिए असंभव है ।। 53
रूप देखने को मेरा एकनिष्ठ भक्ति अभिलाषा हो ।
भेद मिटे सब मय तुम का और मन में दृढ़ जिज्ञासा हो।। 54
कर्म करे मेरे निमित्त और रहे परायण मुझमें ही।
सर्वद्वेष आसक्ति हीन हो मिल जाता है मुझमें ही ।। 55
'विश्वरूपदर्शनयोग'' नामक ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

प्रकाश चन्द्र रस्तोगी
समर विहार कालोनी, आलमबाग, लखनऊ
दूरभाष : 9794863061

हृदय से प्रेम का उपहार देकर

द्वेष से कलुषित हवाएं
व्योम में छाने लगीं जब,
प्रकृति ने तब राग छेड़ा
प्रेम का ऋतुराज देकर।
इंद्रधनुषी रंग से आकाश
सतरंग हो गया है,
धड़कनों ने गीत गाया
सुरमई अहसास भरकर।
प्रीत के रंगों से रंगकर
हो गई चूनर गुलाबी,
मन बना कान्हा हमारा
राधिका की आस लेकर।
होलिका के रंग में रंगी
भावनाएं अनकही,
आ सनम लग जा हृदय
से प्रेम का उपहार देकर।

श्रीमती नीलम 'स्वतंत्र' रस्तोगी
लखनऊ

अपराध–अदालत का.....

बिरजू ग्राहक का सामान पैक कर रहा था, तभी 4–5 कान्सटेबल आये और उसे बालों से पकड़ कर मारने और घसीट कर ले जाने लगे। सभी ग्राहक और दुकानदार हतप्रभ रह गये। कई लोगों ने बचाने की कोशिश भी की, किन्तु उन पर असर नहीं पड़ा। दुकान मालिक कैलाशनाथ बिगड़ कर बोले,

''क्या कर रहे हैं आप लोग? क्या किया है इसने?''

''साहब मामला संगीन है हमें अपना काम करने दीजिये।''

कह कर सिपाही बिरजू को पुलिस वैन में बैठा कर ले गये।

कैलाश नाथ जी का समाज और राजनीति में अच्छा दबदबा था सम्मान था। बिरजू उनकी दुकान पर पन्द्रह साल की उम्र से काम कर रहा था। घर पर भी उसका आना जाना था, सबका मुँहलगा था। अतः कैलाश जी की पत्नी व बेटी को उसकी गिरफ्तारी का बहुत दुख हुआ। मानवता के नाते कैलाश जी ने जमानत की अर्जी दी और नरमी के व्यवहार के लिये प्रार्थना की। दरोगा ने कुछ आश्वासन तो दिया पर कह दिया,

''साहब यह कतल का केस है आप इस पचड़े में न पड़े तो बेहतर होगा।''

इतना हँसमुख और भोलाभाला लड़का कतल कैसे कर सकता है? उनके विश्वास के बाहर की बात थी फिर भी वे उसे जमानत पर रिहा करा लाये ।

बिरजू पूर्ववत काम में लग गया। कैलाश जी ने कई बार पूछा पर हर बार उसका एक ही उत्तर होता,

''साहब हम कतल नाय किये हन।''

मुकदमा चलता रहा। उसकी बातो से यही अंदाज लगता था मुकदमें में कोई दम नहीं है, बस हर बार पेशी आगे बढ़ जाती है। मुकदमें चलते रहते है। गांव में ऐसा कोई बड़ा आदमी नहीं जिस पर दो–चार मुकदमें न चलते हों। बल्कि ऐसे लोग ही समाज के ठेकेदार होते हैं।

बिरजू के पास सब कुछ था। सम्पन्नता थी चालीस बीघा खेती थी। पक्का मकान ट्रेक्टर–ट्राली थोड़े बहुत सुविधा के घरेलू सामान भी थे। परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त एक दुलारी–सी बहन थी। स्वयं उसका विवाह एक सुन्दर सुघढ़कन्या के साथ हो गया। दो प्यारे पुत्र भी हो गये हैं। बिरजू की जीवन धारा अबाध–गति से मंद–मंद चल रही थी पर धारा कब जानती है कि उसे आगे किन विकट पाषाणों से टकराना पड़ेगा।

आठ वर्ष बीत गये हैं। बूढ़ा बाप पानी की तरह पैसे बहा रहा है। पर हर बार पेशी आगे बढ़ जाती। पानी भले ही बहते–बहते जम जाय लेकिन मुकदमा द्रोपदी के चीर के समान खिंचता ही चला जाता है भले ही आदमी जवान से बूढ़ा हो जाय। आज भी वह पेशी पर आया है। स्थिति असमंजस की है। पिछली पेशी में ही लग रहा था मुकदमा अंतिम दौर से गुजर रहा है इसलिये वह बहुत से लोगों से मिल मिला कर आया था। 8–10 हजार का प्रबन्ध भी कर लिया था जिन कर्मचारियों पर वह पैसा लुटाता रहा वे ही उसे बहलाते रहे। उस गरीब को यह नहीं मालूम था कि कत्ल का मुकदमा और 8–10 हजार की घूस! लिप्सा का घड़ा भरने के लिये बूंद बराबर भी नहीं हैं नतीजा वही हुआ, उसे उम्र कैद की सजा हो गई।

जेल की सीलन भरी कोठरी है। छोटे से चबूतरे जैसी पट्टी पर जर्जर दरी और कम्बल है। सामने खाना पड़ा है बिरजू घुटने में सर देकर बैठा है। आंखे आंसुओं से भीगीं हैं। मौका पाकर पुराने कैदी सुमेर ने समझाया,

''देखो भैया! अब हम सब की यही दुनिया है। खूब खाओ पियो । व्यवहार अच्छा रखो, जल्द ही नये कैदियों की ड्यूटी पर लगा दिये जाओगे। भंडार घर का माल तुम्हारे हाथ में होगा, मजे करोगे। वरना घुटते–घुटते समय से पहले ही मर जाओगे। घर तो छूट गया घाट तो न छूटे।''

बिरजू की समझ में कुछ–कुछ तो आने लगा। उठा और बेमन खाना खा लिया। सोच रहा था–नवेली पत्नी के प्रेम रस में पका भोजन जरा सा बेस्वाद होने पर वह थाली फेंक देता था तब पत्नी कैसे–कैसे आंसुओं से भीगे आंचल से उसका मुंह पोछती, ''काहे दिक्कत हो, अबही हम तोहरे खातिर पूड़ी सब्जी बनाय लाइत हन।''

और जरा सी देर में भोजन की सुगंध से उसकी आत्मा तृप्त होने लगती। खाना खाकर बिरजू लेट तो गया पर नीद कहाँ? मच्छर अलग काट रहे थे वह उठ कर बैठ गया। वेदना आँसू की पतली धार के रूप में बह चली...। नाना प्रकार की स्मृतियाँ मूर्तिवत हो उठी...।

रजत मणियों से आच्छादित जीवन–नभ प्रसन्नता की ज्योति से और भी प्रदीप्त था। ऐसे में अचानक घने कुहासे ने घिर कर आनन्द–मण्डल को धूमिल कर दिया। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। अश्रुपूरित नेत्र बंद होने का नाम नहीं ले रहे थे। विचारों की श्रृंखला खुलने लगी...।

वह और जमुना दो ही भाई बहन थे। जमुना के शारीरिक सौंदर्य के साथ–साथ बौद्धिक सौंदर्य भी पूर्णता को लांघता था। यद्यपि बिरजू अधिक पढ़ा नहीं था पर दादा से चिरौरी करके जमुना की शिक्षा जारी रखी। दसवीं में थी जमुना। दो गांव पार इण्टर कालेज में पढ़ने जाती थी। प्यारी बहन के लिये उसने अपने दोस्त रामजीवन से रिश्ता भी तय कर दिया था। रामजीवन भी उसे पसंद करता था। परीक्षा समाप्त होने पर विवाह होना निश्चित था ।

तभी ऐसा घटित हो गया कि सब कुछ बदल गया। मलयजी शीतल वायु से सुगंधित उसके सपनों के आम्रकुंज को परिस्थितियों के अंधड़ ने तहस–नहस कर दिया....। उसके गांव का एक लड़का था मुरारी। जमुना के इर्द–गिर्द दिखाई देने लगा। उसे देखकर जमुना का हृदय धड़कने लगता। यौवन की आंधी आने पर हृदय की सांकल हिलने ही नहीं लगती वरन् जोर–जोर से बजने लगती है। जमुना के हृदय की घंटिया भी बजने लगी। जमुना दादा अम्मा द्वारा लगाई बंदिशें तोड़ कर मुरारी के साथ रंगरेलियाँ मनाने लगी। रामजीवन ने बिरजू से सब बातें बताईं। बिरजू के क्रोध का अंत नहीं रहा। आंखों से खून टपक रहा था। रामजीवन ने मुरारी को जमुना के साथ रंगे हाथ देख लिया। उसी दिन से वह मन ही मन कटार की धार तेज

करने लगा। उसे शीघ्र ही अवसर मिल गया।

मुरारी एक रिश्तेदारी में शहर आया था। पीछे–पीछे राम जीवन भी आ गया। बिरजू से मिलकर योजना बनाई। मुरारी से दोस्ती का स्वांग रचा। सिनेमा देखा तीनों ने मिल कर खूब शराब पी। टहलते हुये एक पार्क में आ गये। घटना को याद करते–करते बिरजू के मस्तक पर पसीने की बूंदे छलछला आई। उठकर पानी पिया। श्रृंखला की कड़ियाँ खुलने लगीं– वे दोनों मुरारी को पार्क के पिछवाड़े ले गये। बिरजू ने मुरारी का कालर पकड़ा, 2–4 झापड़ रसीद किये,

''कमीनें गांव मा कौनो लौडिया नाहीं मिली? हमरी ही बहिन संग मुंह काला किहौ। जीवनभर के वास्ते दाग लगाय दिहिस नासपीटा।'' रामजीवन ने दांत पीसे, ''अब ईका जिंदा नाहीं छाड़व।''

बिरजू कतल के पक्ष में बिल्कुल नहीं था, उसके पास हथियार भी नही था, पर रामजीवन ने देशी तमंचा निकाल लिया और देखते–देखते मुरारी के सीने में दो गोलियाँ उतार दीं। उसे तड़पता छोड़ कर दोनों भाग गये। बिरजू सेठ के यहाँ काम पर लग गया।

5 वर्ष सीखचों के पीछे बीत गये हैं। अब वह लखनऊ जेल में है। अब वह लखनऊ कोर्ट पुलिस कस्टडी में लाया जाता है। बिरजू के पिता ने पानी की तरह पैसा बहा दिया। 30 बीघा जमीन बिक गई। चमकता हुआ परिवार गरीबी की धुंध में धूमिल दिखने लगा। आज भी बिरजू पेशी पर आया था पर कुछ ही देर में उसने जो देखा उसकी आंखे फैली रह गई। दो हवलदार के साथ उसका बड़ा बेटा हथकड़ी पहने आ रहा था। पीछे–पीछे उसकी मां दीनहीन सी चली आ रही थी। पिता ने बताया मां के इलाज के लिये उसने गिरह कटी की थी। बेटे को देखकर उसका धैर्य समाप्त हो गया। सौगंध के लिये जब उसे धार्मिक पुस्तक गीता दी गई, तब वह उत्तेजित हो उठा,

''आज हम ई भगवान केर किताब बिल्कूल नाहीं छुअब। हमारा विस्वास उठ गवा, का नतीजा निकसा है कसम केर, कौनो पतियाव नाहीं करत हम कितनी बार कहेन हम कतल नाही कियेन! नाहीं कियेन! नाहीं कियेन!''

पुनः रोते हुये बोला,

''जज साहब! कौनौ ऐसी अदालत है जीमा कानून औ अदालत पर मुकदमा चला सकै! अगर ई केस का फैसला 8–10 साल पहले हुइ गवा होता तो हमार मेहरूआ और लरकन का ई हाल न भवा होता। हम लड़कन का अच्छे स्कूल माँ भेजित रहन, सोचे रहन पढ़ि–लिखि कै कुछ नीक नौकरी करि है, आदमी बन जई हैं, भला तकदीर का लिखा कौंन मेंट सका है। आज हमार मेहरूआ भिखारन जइस हुई गै है।''

बिरजू फूट–फूट कर रो रहा था। बोलते–बोलते वह लगभग चीख उठा, अदालत के कक्ष में उसकी दर्द भरी आवाज गूंज उठी,

''जज साहब! अदालत के कक्ष में सन्नाटा पसरा था.....।''

विनोदनी रस्तोगी
संस्कृति भवन, नई बस्ती,
सीतापुर मो. : 9839902720

जीवित होगी मानवता

जीवन के पथरीले पथ पर
सर्पीले पर्वत के पथ पर
चल पड़े हम इस आशा से
कभी तो मिलेंगी सुरम्य घाटियां
हरीतिमा बिखेरती
सुरम्य वादियां
देंगी आत्मिक आनन्द
समस्त चेतना को करायेंगी सौंदर्यबोध
उस परम सत्य का
उस अनन्त शीतलता का
जो
हर लेगी उस जलन को
हर लेगी उस पीड़ा को
जिसे
दे रहा मनुष्य–मनुष्य को
मानव पर दानव नें
रख दिया है क्रूर हस्त
मिटा दिया है अस्तित्व
मनुषत्व का
अतः
हम चले जा रहे हैं
इस आशा में
कभी तो मिलेंगे शिव
जहां मिलेगा विष्णु का मोहनी रूप
भस्म कर देगा भस्मासुर को
और तब जलकर दानवता
जीवित होगी मानवता।

विनोदनी रस्तोगी
संस्कृति भवन, नई बस्ती, सीतापुर
मो. : 9839902720

विशिष्ट उपलब्धि

हमारी पत्रिका के सम्पादक श्री धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी जी ने लेखन के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की है। उनके द्वारा लिखे गये पत्रों को दैनिक जागरण के विभिन्न संस्करणों ने 98 दिन तक निरंतर (रविवार एवं अवकाश के दिवसों के अतिरिक्त) प्रकाशित किया। यह अवधि 14/12/22 से 21/3/23 तक की थी। प्रतिदिन न्यूनतम दो पत्रों का प्रकाशन हुआ।

हम उनको इस विशिष्ट उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हैं। हरिश्चन्द्र वंशीय समाज उनकी इस उपलब्धि के लिये अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। भारत के सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र में रस्तोगी समाज के नाम को चिर परिचित बनाने के लिए आभार।

कृष्ण जीवन रस्तोगी
सह सम्पादक

पाँच नोबल जीतने वाला एकमात्र परिवार

मेरी क्यूरी फिजिक्स वर्ष 1903 और केमिस्ट्री वर्ष 1911 दोनों विषयों में नोबेल जीतने वाली दुनिया की पहली महिला थी वह पेरिस यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बनने वाली भी पहली महिला थी। यही उनकी मुलाकात पियरे क्यूरी से हुई जो बाद में उनके पति बने और दोनों ने मिलकर रेडिएशन की खोज की जिसके लिए नोबल कमेटी ने उनके पति को नोबल के लिए नामित किया। यहाँ महिला होने के कारण नोबेल कमेटी मेरी को नोबल के लिए नामित करना नही चाहती थी लेकिन पियरे के एतराज जताने पर विवश होकर कमेटी को मेरी को नोबल देना पड़ा। मेरी के दो बेटियां हुई 1897 में आइरीन और 1904 में ईव। ईव के जन्म के डेढ़ साल बाद (1906) में एक दुर्घटना में मेरी के पति की मृत्यु हो गई। कल्पना नही कर सकते कि लगातार अपनी प्रयोगशाला में व्यस्त रहने वाली मेरी के लिए दो बच्चियों की परवरिश करना कितना मुश्किल हुआ होगा। उस समय पेरिस में बच्चियों के लिए किस तरह की स्कूली शिक्षा उपलब्ध थी वो मेरी को नापसन्द थी उसने अपनी बच्चियों को घर में ही पढ़ाया। 1911 में दूसरी बार मेरी क्यूरी को रेडियम और पोलोनियम की खोज के लिए केमिस्ट्री का नोबल दिया गया। जिसका इलाज आज केंसर के इलाज में किया जाता है लगातार रेडियम के संपर्क में रहने के कारण मेरी की सेहत बिगड़ने लगी और 1934 में 66 वर्ष की आयु में मेरी का निधन हो गया। अमेरिका ने क्यूरी का सम्मान करते हुए उन्हें अपने देश में उपलब्ध एक ग्राम रेडियम दान करने की घोषणा की। मेरी ने कहा कि रेडियम उन्हें नहीं उनके संस्थान को दे दिया जाए ताकि उनकी मौत के बाद उस पर उनके परिवार का कब्जा न हो। माँ की छाया में पली–बढ़ी दोनों बेटियों ने भी असाधारण सफलताएं हासिल की। बड़ी बेटी आइरीन को 1935 में फिजिक्स का नोबल पुरस्कार मिला जबकि बचपन से ही कला और लेखन में दिलचस्पी रखने वाली छोटी बेटी हेव को युद्ध पत्रकारिता के पुलित्जर अवार्ड के लिए नामिनेट किया गया। बाद में वह युनिसेफ की ''फर्स्ट'' लेडी बनी। ईव को 1965 में शान्ति के लिए नोबल पुरस्कार मिला। इस प्रकार दुनिया में मात्र एक परिवार ऐसा था जिसके सभी सदस्यों को नोबल पुरस्कार मिला था। ऐसा परिवार दुनिया के इतिहास में दूसरा नहीं है। इस प्रकार दुनिया में पाँच नोबल पुरस्कार जीतने वाला एक मात्र परिवार बना।

बाल कृष्ण रस्तोगी
सोंधी टोला, चौक, लखनऊ

माँ की ममता

माँ की ममता मैं कैसे बताऊ
किन शब्दों में मैं बखान करूं
चरणों की रज जो मिल जाये
जीवन ही सफल बना जाये
अपने आँचल के साये में रख
खुद अग्नि पर चलती है।
हमको काँटा न चुभ जाय
वो खुद काँटों पर चलती है।
कितने कष्टो को सहकर भी
हमारी राहों में फूल बिछाती है।
हम देश के गौरव बन जाये
खुद बलि–बेदी पर चढ़ जाती है
लेकिन हम माँ को भूल गये
माँ के चरणों में सिर न झुका कर
माँ का अपमान हम करते गये।
माँ ने तो हमे दिल में बसाया
हमने उन्हें घर से ही निकाला
माँ के प्यार का बँटवारा कर
माँ के अरमानों का खून किया।
माँ की ममता न समझ सके।
हम कैसे भूल यह कर बैठे।

नीले गगन के तले

नीले गगन के तले
कुछ सपने है बुने।
आसमान के तारों में
कुछ जमीं कुछ बहारों में।
लेके सपने चले
नीले गगन के तले
भटक गयी हूँ
राह नही है
जाऊ कहाँ मैं
पता ही न चले
नीले गगन के तले
पुरवा से मैने
चलना है सीखा
गगन के जैसे
उठना है सीखा
धरती के जैसे
सहना है सीखा
शक्ति हाथों में भरे
नीले गगन के तले
स्वाती रस्तोगी
आकिल सराय, कौशाम्बी

हरिश्चन्द्र वंशीय गौरव

वरिष्ठ लेखिका विमला रस्तोगी

उ. प्र. हिन्दी संस्थान के सुभद्रा कुमारी चौहान प्रतिष्ठान बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित।

यह सम्मान पाने वाली अपने समाज की प्रथम महिला बनी विमला रस्तोगी 25 नवम्बर 2022 को उ. प्र. हिन्दी संस्थान के यशपाल सभागार में अपने समाज की वरिष्ठ बाल साहित्यकार विमला रस्तोगी को एक भव्य आयोजन में मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी तथा डॉ. संजीव जायसवाल तथा संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे जी ने अंगवस्त्र, प्रदशास्ति पत्र तथा 51000/– रुपए की राशि देकर सम्मानित किया।

विमला रस्तोगी गत कई दशकों से लगातार साहित्य की सभी विधाओं में विशेष रूप से बाल साहित्य में लेखन कर रही है तथा देश की सभी प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में लगातार रचनाएं प्रकाशित होती रहती है। बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में भी इनकी कविताएं व नाटक लगे है, इनके एक बाल कहानी संग्रह पर सीरियल भी बना। आकाशवाणी व दूरदर्शन से कहानी, नाटक तथा वार्ताएं प्रसारित होती रहती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान बाल साहित्य सम्मान के अतिरिक्त अब तक दो दर्जन संस्थाओं द्वारा इन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका है। इनकी एक पुस्तक ओपरेशन ब्लैक बोर्ड (म.प्र. सरकार) में चयनित हुई। और भी इनकी अनेकानेक उपलब्धियाँ है।

यशपाल सभागार, लखनऊ में हुए इस सम्मान सम्मेलन की विशेष बात यह रही कि कार्यक्रम में सर्वप्रथम विमला जी को सम्मानित किया गया और कार्यक्रम का अंत भी उन्हीं की कविता पाठ से हुआ।

विमला जी को इस बात की खुशी है कि इस सम्मान के द्वारा उन्होंने अपने समाज के नाम को ऊँचा किया। अपने समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने इस सम्मान के मिलने पर विमला जी को बधाई दी। उन्हें अपने समाज का गौरव कहा। इस कार्यक्रम की बहुत अखबारों में कवरेज हुई।

आशा करते है कि भविष्य में विमला जी अन्य सम्मान पाकर अपने समाज का गौरव बढ़ाएंगी।

शिवा रस्तोगी, दिल्ली।

'हमारा अपना उत्सव' कैमरे की नजर में

प्रतिभा सम्मान

उत्सव में उपस्थित दर्शकगण

मंच पर उपस्थित विशिष्टजन

'हमारा अपना उत्सव' कैमरे की नजर में

वरिष्ठजन सम्मान समारोह

प्रतिभा सम्मान

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम

'हमारा अपना उत्सव' कैमरे की नजर में

प्रदर्शनी में लगाए गये स्टाल एवं विभिन्न गतिविधियाँ

रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र

'हमारा अपना उत्सव' कैमरे की नजर में

वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती सम्मान

सम्मान समारोह

मानव की प्रगति में सहयोगी विज्ञान–क्रमांक 46

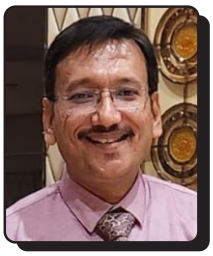

1. कोरोना संक्रमण के बाद आने वाली समस्याओं को लेकर शोधकर्ता लगातार नये–नये निष्कर्ष सामने लाते रहे है। कोरोना के कारण कई लोगों को फेस ब्लाइंडनेस का भी सामना करना पड़ा है। कोरोना कई न्यूरोलाजिकल समस्याओं का कारण भी हो सकता है, जिसमें गंध एवं स्वाद शामिल है। इसके साथ ही ध्यान, स्मृति, भाषण और भाषा संबंधी समस्यायें भी हो सकती है।
2. क्या आप जानते है कि आँख पर पट्टी बांध कर सोने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता बढ़ जाती है, क्योंकि इससे खिड़की आदि के जरिये आँख पर पड़ने वाले प्रकाश को रोकने में मदद मिलती है। इससे हमारी नींद में खलल नहीं पड़ता है। रात में भरपूर नींद से ही हमारा मस्तिष्क तेज होता है और वह सूचनाओं को तेजी से ग्रहण करता है। स्लीप जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि 'आई मास्क' या आँख पर पट्टी पहनकर सोने से हमारी याददाश्त और सजगता बढ़ती है।
3. एक अध्ययन में ज्ञात हुआ है ऐसे बच्चे जिनको माता–पिता की निगरानी में सुरक्षित माहौल मिलता है उन्हें बड़े होने पर स्वास्थ्य संबंधी परेशानी कम होती है। बचपन के अनुभव का असर मन और शरीर पर जीवन काल तक रहता है। उन्हें यह याद रहता है कि कितना प्रेम और समर्थन माता–पिता की ओर से मिलता था। बचपन में मिलने वाला तनाव प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित कर सकता है। जब बच्चों को पता होता है कि उनके मां बाप उनपर नजर रख रहे हैं तो वे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जोखिम से बचे रहते है।
4. एक शोध से ज्ञात हुआ है कि लम्बे समय तक कोरोना से संक्रमित रहे लोगो में संक्रमण के बाद छः महीने से एक वर्ष तक सीने में दर्द होने का खतरा बढ़ सकता है। यह भविष्य में हृदय संबंधी जटिलताओं को जन्म दे सकता है। वैसे मरीजों में दिल का दौरा या स्ट्रोक जैसी घटनायें नही पाई गई। शोध से पता चलता है कि पूर्व में 4 सप्ताह या उससे अधिक समय तक कोरोना के लक्षणों का अनुभव करने वाले लगभग 19 प्रतिशत अमेरिकी व्यस्कों में संक्रमण के बाद 6 महीने से एक साल तक सीने में दर्द की दर अधिक थी।
5. अल्जाइमर का पता लगाने में अब आर्टिफिस्यिल इंटेलीजेंस भी मददगार साबित होगा। अल्जाइमर का पता लगाने के लिये विकसित किये गये इस माडल के लिये रोग से पीड़ित और स्वस्थ लोगों की एम आर आई के आकड़ो का विश्लेषण किया गयां इस अध्ययन के बाद 90 प्रतिशत से अधिक मामलों में अल्जाईमर का पता लगाने में सफलता मिली है। यह रोग अधिकतर वृद्धों में होता है।
6. प्रत्येक बच्चे का माँ में जुडाव अपने आप में अनोखा होता है। वह उसके हर हाव भाव के प्रति बेहद संवेदनशील होता है। एक शोध के मुताबिक माँ का थोड़ा सा भी अलग तरीके का व्यवहार बच्चे पर प्रभाव डाल सकता है। 12 महीनों में अपने बच्चों के साथ माँ का तटस्थ या अजीब व्यवहार मिथाइलेशन नामक एपिजेनिटिक परिवर्तन से जुड़ा है। एपिजेनिटिक डी एन ए से स्वतंत्र एक प्रक्रिया है, जो जीन व्यवहार को प्रभावित करती है। सबसे पहले 12 माह के बच्चों पर और उनकी मां के व्यवहार पर अध्ययन किया गया।
7. विटामिन डी सप्लीमेन्ट लेने पर डिमेंशिया व विटामिन डी सप्लीमेंट से पीड़ित लोगों को फायदा मिल सकता है। शोधकर्ताओं ने डिमेंशिया और विटामिन डी सप्लीमेट के बीच के संबंधों का पता लगाया है। जिन लोगों ने सप्लीमेंट लिया था, उनमें डिमेंशिमा की सभावना 40 प्रतिशत तक कम हो गई थी, इसका प्रभाव हर वर्ग पर पड़ता है। महिलाओं में पुरुषों से अधिक फायदा देखा गया।
8. मात्र ग्यारह मिनट तक प्रतिदिन तेज चलकर आप अ न े क गम्भीर बीमारियों से दूर रह सकते है। यह मात्रा सप्ताह के लिये 75 मिनट है। इससे आयू में भी वृद्धि होगी। प्रतिदिन 11 मिनट टहलने से हृदय रोग, स्ट्रोक एवं कई तरह के कैंसर का खतरा कम हो जाता है। मध्यम तीव्रता की शारीरिक गतिविधि कैंसर और हृदय संबंधी रोगो की आशंका को कम करती है। इस गतिविधि के दौरान हृदय की गतिविधि बढ़ जाती है और व्यक्ति तेज सांस लेता है।
9. एक शोध से ज्ञात हुआ है कि हल्के रेडिएशन के सम्पर्क में आने वालों को भी जीवन भर हृदय रोग का खतरा बना रहता है। इसका पता लगाने के लिये अमेरिका में एक अन्तराष्ट्रीय टीम ने कार्डियो बैस्कुलर बीमारियों और विकरण के सम्पर्क के बीच संबंधों के मूल्यांकन वाले अध्ययनों के डेटा बेस की जांच की। इसमें उम्र जैसे अन्य महत्वपूर्ण कारकों को ध्यान में रखा गया था। विश्लेषण के लिये पिछले एक दशक के दौरान प्रकाशित 93 अध्ययनों का उपयोग किया था।
10. कमरे की लाइट बन्द करके सोने में गर्भवती महिलाओं को लाभ मिलता है। यदि गर्भवती महिला सोने से 3 घण्टे पूर्व कमरे की लाइट बन्द या मंद करती है तो गर्भावस्था के दौरान मधुमेह का खतरा बेहद कम हो जाता है। इसमें कम्प्यूटर एवं स्मार्ट फोन से आने वाली रोशनी भी शामिल है।

संकलनकर्ता
इं. सुशांत रस्तोगी
डोम्बीवली, मुम्बई

हिन्दी सिनेमा जगत की सबसे कमाई वाली ब्लाक बास्टर ''जय सन्तोषी माँ''

एक ऐसा वर्ष जिस साल इमरमेन्सी लगी, उसी से एक माह पूर्व 30 मई 1975 को भारतीय फिल्म जगत की एक ऐसी फिल्म रिलीज हुई, जिसकी कमाई का कीर्तिमान आज तक कोई भी फिल्म नही तोड़ पाई है। बात उस वक्त की है जब एक दिन फिल्म के अभिनेता आशीष कुमार ने इस फिल्म का आइडिया निर्देशक विजय शर्मा को सुनाया और उनसे फिल्म बनाने का अनुरोध किया, विजय शर्मा ने इस बात की चर्चा निर्माता सत राम रोहड़ा से की, जिसके बाद इस फिल्म का नाम ''जय सन्तोषी माँ'' रखना तय हुआ।

आखिरकार 30 मई 1975 का वह दिन आ गया जब केवल 5 लाख रुपये में बनी यह फिल्म रिलीज हो गई। फिल्म के मुख्य कलाकार की भूमिका में आशीष कुमार, अनिता गुहा, कानन कौशल, भारत भूषण थे। भाग्य लक्ष्मी चित्र मन्दिर के बैनर तले बनी यह फिल्म पहले महाराष्ट्र और बम्बई क्षेत्र में रिलीज की गई मेजदार बात तो यह रही कि इस फिल्म को प्रारम्भ में मुम्बई क्षेत्र में वितरक ही नही मिल रहे थे यह वही साल था जब बाक्स आफिस पर जी.पी. सिप्पी निर्देशित चली स्टार फिल्म ''शोले'' और यश चोपड़ा निर्देशित फिल्म ''दीवार'' प्रदर्शित हुई थी और दोनों ही फिल्मों ने बाक्स आफिस पर जबर्दस्त कमाई की थी। फिर भी कमाई के हिसाब से ''जय सन्तोषी माँ'' से यह पीछे ही थी।

''जय सन्तोषी माँ'' फिल्म 5 लाख के बजट में बन कर तैयार हो गई थी, जिसने कमाई की थी कुल 5.5 करोड़। ''जय सन्तोषी माँ'' ने पहले तीन दिन तक तो पूरी तरह निराश किया, पहला दिन इस फिल्म ने मात्र 318/– का टिकट खिड़की पर कारोबार किया। शनिवार का दिन केवल 284/– और रविवार का दिन 375/– का रहा। इस निराशाजनक माहौल में आशा का संचार एकाएक सोमवार से आया, जब एकाएक लोगो में फिल्म के प्रति उत्साह जागा या यों कहिए कि माता की कृपा बरसी। सोमवार सुबह से ही बम्बई से दूर दराज इलाकों विरार–फलघर, आदि से उपनगर ब्रांद्रा और कल्याण और भिबंडी से कुर्ला और घाटकोपर की तरफ बैलगाड़ियों में भर–भर कर आने लगे, टिकट न मिलने की स्थिति में वह वहीं बैठ कर अगले दिन के लिए टिकट का इंतजाम करते, फिर फिल्म देखकर वापस जाते। ऐसा दीवानापन जो शुरू हुआ वह खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

जोधपुर में मंडोर के पास सन्तोषी माता का मन्दिर था, फिल्म के रिलीज होने के बाद लोगों को यह पता लगा कि इस नाम की देवी भी पुराणों में है। सन्तोषी माता फिल्म में सन्तोषी मां

का किरदार निभाने वाली अनीता गुहा ने भी स्वीकार किया था कि फिल्म रिलीज होने के बाद लोग उन्हें देवी मानने लगे थे और उनके दर्शन करने आते थे और अपने बच्चों को लोग उनकी गोद में आशीर्वाद लेने के लिए डाल देते थे।

इस फिल्म के प्रति लोगों की दीवानगी तो इस कदर थी कि जो लोग गांव से इस फिल्म को देखने आते थे, वह चप्पल, जूते सिनेमा हाल के बाहर उतार कर, हाथो में बकायदा पूजा थाली और फूल माला लेकर आते थे, और जब फिल्म में आरती या गाना होता था तो लोग पैसे चढ़ाते थे, जिसको थियटर में काम करने वाले कर्मचारी ने स्वीकार किया कि इससे उन लोगो के पास अच्छे खासे पैसे एकत्रित हो जाते थे। फिल्म समाप्त हो जाने के बाद लोग बाग प्रसाद बाटते थे और सन्तोषी माता की फ्रेम की हुई फोटो और शुक्रवार की व्रत कथा बेचने वाले दुकानदारों की दुकाने भी खुल गई थी। बहुत से लोगों ने शुक्रवार को खट्टा खाना ही छोड़ दिया था।

इस फिल्म की सफलता में उसके गीत और संगीत का भी बहुत बड़ा योगदान था। फिल्म में गीत कवि प्रदीप ने और फिल्म का संगीत सी अर्जुन ने दिया था और इस फिल्म के मधुर भजनों को मन्नाडे, महेन्द्र कपूर और उषा मंगेशकर ने गया था।

जहाँ तक इस फिल्म ने सफलता के कई सोपान तय किए, वही इसकी सफलता से अभिभूत होकर तमाम लोग जो इस फिल्म से जुड़े थे, उन्होंने तमाम मन्नते मांगी थी जो पूरी नहीं कर सके। फलस्वरूप उन्हें इसकी कीमत भी चुकानी पड़ी, अभिनेता अनीता गुहा को सफेद दाग की बीमारी हो गई, लीड एक्टर कानन कौशल का भी कैरियर फिल्म के बाद खत्म हो गया था, फिल्म के प्रोडयूसर सतराम रोहडा फिल्म की इतनी कमाई के बाद भी दिवालिया घोषित हो गए थे। फिल्म के डिस्ट्रीब्यूटर केदार नाथ अग्रवाल ने भी अपने भाइयों पर आरोप लगाया कि वे कमाई की रकम बीच में ही ले उड़े है, बाद में उन्हें भी फालिज मार गया। जबकि लखनऊ में जय हिन्द सिनेमा फिल्म की इतनी कमाई हुई कि इसके मालिकों ने बाद में एक और सिनेमा हाल 'जय भारत' खोल दिया, हालांकि बाद में वह भी बन्द हो गया और इसकी जगह व्यवसायिक काम्पलेक्स खुल गया।

निखिल रस्तोगी
लखनऊ

होलिकोत्सव समाचार

रंग पंचमी पर रस्तोगी होली मिलन समारोह

रस्तोगी स्वास्थ परामर्श केंद्र की ओर से बाजार खाला स्थित परिसर में रविवार को होली मिलन समारोह मनाया गया। इस समारोह में हरिश्चंद्र वंशी समाज, हरिश्चंद्र दर्पण समिति और स्टार्टअप कमिटी ने भी सहयोग किया। कार्यक्रम में फाग गीत गाए गए और एक–दूसरे को गुलाल लगाकर होली की बधाई दीं।

रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र खालाबाजार लखनऊ में रविवार दिनांक 12 मार्च को रंग पंचमी तिथि पर भक्तिपूर्णवातावरण में होली मिलन समारोह का आयोजन हुआ। सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र जी की भव्य मूर्ति के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। रागिनी जी द्वारा हरिश्चन्द्र स्तुति, अनिल जी द्वारा जोशीले राष्ट्रगीत एवं सतीश जी द्वारा मॉ की महिमा का बखान करते गीत की भावभीनी प्रस्तुति से सभागार आनन्द में डूब गया। ओमप्रकाश जी ने एवं संजीव जी (गुड्डू) ने अपनी प्रस्तुति से सभी को गुदगुदा दिया। रेखा श्रीवास्तव एवं सखियों द्वारा प्रस्तुत होली गीत ने पूरे सदन को होली मय होकर थिरकने को मजबूर कर दिया। रीतेश जी एवं रागिनी जी ने स्व रचित कविता के गायन से सबको मुग्ध कर दिया। धर्मेन्द्र जी ने अपने चुटकुलों से सभी को हँसने के लिए मजबूर कर दिया। व्यवस्थापक बालकृष्ण जी ने सभी आगुंतको का स्वागत करते हुये उनको जलपान के लिए आमंत्रित किया। मंच पर हरिश्चन्द्र वंशीय समाज के उपाध्यक्ष श्री संजीव रस्तोगी, रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श समिति के उपाध्यक्ष श्री विष्णु बल्लभ रस्तोगी एवं हरिश्चन्द्र दर्पण समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश रस्तोगी जी उपस्थित थे। मंच का संचालन रीतेश रस्तोगी एडवोकेट ने किया। हरिश्चन्द्र वंशीय समाज के वरिष्ठ संरक्षक श्री हरीजीवन जी कार्यक्रम के मुख्य संयोजक रहे। कार्यक्रम में वरिष्ठ समाज सेवी लालचंद जी, सत्य प्रकाश जी, मदन मोहन जी, विनीत जी, प्रदीप जी, रस्तोगी स्टार्टअप के अध्यक्ष सुधांशु जी की गरिमामय उपस्थित रही। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति करने वाले सभी महानुभावों का दुपट्टा उढ़ाकर अभिनंदन किया गया।

प्रस्तुति : – **बाल कृष्ण रस्तोगी,**
सोंधी टोला, चौक, लखनऊ

रंग पंचमी पर सखियों ने गाए होली गीत

जासं, लखनऊ : बाजारखाला के रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। रेखा श्रीवास्तव एवं सखियों द्वारा प्रस्तुत होली गीत ने पूरे सदन को थिरकने पर मजबूर कर दिया। रीतेश एवं रागिनी ने आत्मरचित कविता के गायन से सबको मुग्ध कर दिया। धर्मेंद्र ने चुटकुलों से सभी को खूब हंसाया। मंच पर हरिश्चंद्र वंशीय समाज के उपाध्यक्ष संजीव रस्तोगी, रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श समिति के उपाध्यक्ष विष्णु बल्लभ रस्तोगी, हरिश्चंद्र दर्पण समिति के अध्यक्ष गिरीश रस्तोगी, रीतेश रस्तोगी, हरिजीवन, लालचंद, मदन मोहन, सुधांशु व अन्य उपस्थित रहे।

गीता सत्संग भवन राजाबाजार में मंगलवार 7 मार्च को होली मिलन कार्यक्रम। सतीश जी द्वारा मधुर संगीत की प्रस्तुति। त्योहार के अनुरुप ठंडाई एवं स्वादिष्ट गुझिया का रसास्वादन।

रंग पंचमी पर हुआ रस्तोगी होली मिलन समारोह

लखनऊ,स्वरूप संवाददाता। रस्तोगी स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र खालाबाजार में रविवार को रंग पंचमी तिथि पर भक्तिपूर्ण वातावरण में होली मिलन समारोह का आयोजन हुआ। सत्यवादी

महाराजा हरिश्चन्द्र जी की भव्य मूर्ति के सम्मुख दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। रागिनी द्वारा हरिश्चन्द्र स्तुति, अनिल द्वारा जोशीले राष्ट्रगीत एवं सतीश द्वारा मॉ की महिमा का बखान करते गीत की भावभीनी प्रस्तुति से सभागार आनन्द में डूब गया। ओमप्रकाश ने एवं संजीव (गुड्डू) ने अपनी प्रस्तुति से सभी को गुदगुदा दिया। रेखा श्रीवास्तव एवं सखियों द्वारा प्रस्तुत होली गीत ने पूरे सदन को होली मय होकर थिरकने को मजबूर कर दिया। रीतेश और रागिनी ने आत्मरचित कविता के गायन से सबको मुग्ध कर दिया। धर्मेन्द्र ने अपने चुटकुलों से सभी को हँसने के लिए मजबूर कर दिया।

वरिष्ठ जन सम्मान उनके आवास पर

श्रीमती प्रेमा को सम्मानित करते हुए श्रीमती अलका जी

श्रीमती मानवी को सम्मानित करते हुए बाल कृष्णजी

श्री प्रयाग नारायण रस्तोगी को सम्मानित करते हुए धर्मेन्द्र नाथ जी

यशोदा देवी बाल शिक्षा निकेतन में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

दीपावली के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताएं एवं दीपावली पूजन

समय–समय पर विद्यालय में बच्चोंकी बहुमुखी प्रतिभा को उजाकर करने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। इस वर्ष भी दीपावली के अवसर पर विद्यालय में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिए ''दिया डेकोरेशन'' और कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए ''फेस्टून प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जिसमें सभी बच्चों ने उत्साह

पूर्वक भाग लिया। जहाँ एक ओर कक्षा 1 से 5 तक के बच्चे दिये सजाने के लिए लालायित दिख रहे थे वहीं दूसरी ओर कक्षा 6 से 8 तक के बच्चे बंदनवार बनाने के लिए उत्सुक थे। सभी बच्चों ने सुन्दर–सुन्दर दिये व बंदनवार बनाकर अपनी कलात्मकता का परिचय दिया।

साथ ही साथ विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों के लिए ''रंगोली प्रतियोगिता'' का भी आयोजन किया गया, जिसमें सभी बच्चों ने प्राकृतिक, चटकीले व आकर्षक रंगों का प्रयोग करके सुन्दर एवं मनमोहक रंगोली बनाई। बच्चों के द्वारा उकेरी गयी रंगोली की खूबसूरत कलाकारी देखते ही बनती थी।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

प्रत्येक बच्चे में अद्वितीय प्रतिभा होती है, बस जरूरत होती है उन प्रतिभाओं को निखारने की। इन्हीं छिपी प्रतिभाओं को दर्शाने हेतु यशोदा देवी बाल शिक्षा निकेतन विद्यालय में

''किड्स–जोन'' के नन्हें–मुन्ने बच्चों के लिए ''फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया जिमसें मॉन्टो, नर्सरी व के.जी. कक्षाओं के बच्चों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। रंग–बिरंगी वेशभूषा में सजे बच्चों ने परी, राधा–कृष्ण, राम–सीता, एयर होस्टेस, डॉक्टर, ट्रैफिक लाइट, स्पाइडर मैन, भारत माता, पायलट आदि पात्रों को जीवंत कर दिया।

बाल दिवस

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है बाल दिवस यानि बच्चों का दिन। यह देश के बच्चों को समर्पित एक ऐसा दिन है जिस दिन बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू का जन्म हुआ था। वे बच्चों से बहुत लगाव रखते थे, इसलिए बच्चे उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कह कर पुकारते थे। हम सभी जानते हैं कि ये बच्चे ही देश का उज्जवल भविष्य हैं, उन्हों ढेर सारे प्यार, लगाव और उचित मार्ग

दर्शन की आवश्यकता होती है। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए य.दे.बा.शिक्षा निकेतन के प्रांगण में बाल दिवस का आयोजन ''स्पोर्ट्स डे'' के रूप में किया गया जिसमें मॉन्टो से लेकर कक्षा आठ तक के सभी बच्चे, विद्यालय के प्रबंधक, प्रधानाचार्या जी एवं समस्त शिक्षिकाओं के साथ–साथ विधायक अंजनी कुमार श्रीवास्तव व बल्लभ संकल्प ट्रस्ट की कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती नेहा रस्तोगी जी भी उपस्थित थी। 'स्पोर्ट्स डे'' के सुअवसर पर विद्यालय की ओर से सभी बच्चों के लिए बहुत सी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

तत्पश्चात् श्री अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने ''नशा उन्मूलन आन्दोलन'' के तहत सभी बच्चों को नशा न करने तथा अने वाली नयी पीढ़ी को भी नशे से दूर रखने की शपथ दिलाई।

तदुपरान्त श्रीमती नेहा रस्तोगी ने सभी बच्चों को उपहार प्रदान किए और अन्त में विद्यालय की ओर से भी सभी बच्चों को उपहार प्रदान किए गए।

प्रस्तुति
श्रीमती अंजली रस्तोगी
इंचार्ज–किड्स जोन, य.दे.बा.शि.नि., अशर्फाबाद, लखनऊ।

मंदिरों से बेकार फूलों को रीसायकल कर अगरबत्ती हेल्पअसग्रीन (HelpUsGreen)

करण रस्तोगी – मैंने हेल्प अस ग्रीन के साथ सहानुभूति सीखी।

हर साल करीब 80 लाख टन बेकार फूलों को गंगा नदी में बहा दिया जाता है। फूलों के कचरे को वैकल्पिक जैविक संसाधन में बदलने के उद्देश्य से करण रस्तोगी ने अपने दोस्त अंकित अग्रवाल के साथ मिल कर 2015 में हेल्पअसग्रीन (HelpUsGreen) की स्थापना की।

हेल्पअस ग्रीन, एक कंपनी जो कानपुर के 29 मंदिरों से हर दिन 800 किलोग्राम तक बेकार फूल इकट्ठा करती है, उन्हें रीसायकल करती है और उन्हें अगरबत्ती और जैविक वर्मीकम्पोस्ट (कीड़ों की विभिन्न प्रजातियों का उपयोग करके खाद बनाने की प्रक्रिया से बनाया जाता है) में बदल देती है।

संस्थापक, अंकित अग्रवाल और करण रस्तोगी ने इस प्रक्रिया के लिए ''फ्लावरसाइकल'' शब्द को सफलतापूर्वक ट्रेडमार्क किया है। अंकित अग्रवाल और करण रस्तोगी की मुलाकात कानपुर के एक ट्यूशन सेंटर में हुई थी। इसके बाद वे उच्च शिक्षा और नौकरी के सामान्य रास्ते पर चल पड़े। अपने शहर के प्यार और बदलाव लाने वाले बनने के सपने ने उन्हें अपनी नौकरी छोड़ दी और कानपुर वापस आ गए।

ये जोड़ी 2015 में कानपुर के बिठूर में गंगा के तट पर मंदिरों का दौरा कर रही थी, जब उन्हें फूलों के कचरे को रिसाइकिल करने का विचार आया। अग्रवाल कहते हैं, ''पवित्र नदी की सफाई के अभियान में औद्योगिक कचरे के विपरीत फूलों से होने वाले प्रदूषण को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है.'' और सिर्फ नदी में सड़ने वाले फूल ही नहीं बल्कि उन पर इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक भी हैं, जो समुद्री जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ ही समय बाद, हेल्पअसग्रीन को लॉन्च करने के लिए दोनों ने अपनी नौकरी छोड़ दी। रस्तोगी कहते हैं, ''जब हमने शुरुआत की, तो सभी ने सोचा कि हम पागल हैं।'' उन्होंने 72,000 रुपये के शुरुआती निवेश के साथ शुरुआत की, और दो महीने बाद, अपने पहले उत्पाद के साथ बाहर आए, एक वर्मीकम्पोस्ट जिसे उन्होंने ''मिट्टी'' (डपजजप) कहा। वर्मीकम्पोस्ट में 17 प्राकृतिक अवयवों का मिश्रण होता है, जिसमें एक स्थानीय कॉफी श्रृंखला द्वारा छोड़े गए कॉफी भी शामिल हैं।

बाद में, उनकी कंपनी ने कानपुर के सरसोल गांव में पर्यावरण के अनुकूल अगरबत्ती, (कोयले के बिना) बनाना भी शुरू किया। और हेल्प अस ग्रीन ने अपने उत्पादों को तुलसी के बीजों से भरे कागज में बेचना शुरू कर दिया था, जो अगरबत्ती के इस्तेमाल के बाद बोया जा सकता था।

For young entrepreneurs Ankit Agarwal and Karan Rastogi, this desire 'to do good' gave birth to an innovative brand - Fragrance of Flowercycling - https://www.helpusgreen.com

हमें यह जानकारी हमारे कानपुर सम्भाग से श्री सुमित रस्तोगी जी ने भेजी।

यदि आपके पास भी कोई ऐसी जानकारी उपलब्ध है जो महाराजा हरिश्चंद्र समाज का नाम गौरवान्वित करे, तो हमें हमारे वाहट्सएप् 919555446150 पर 2 फोटो के साथ तुरंत भेजें।

महत्वपूर्ण निर्णय

वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण

हरिश्चन्द्र दर्पण समिति' के सभी वार्षिक सदस्यों से अनुरोध है कि वर्ष पूरा होने पर अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करा लें। वर्तमान में वार्षिक सदस्यता शुल्क लखनऊ के लिए 250 रु. तथा लखनऊ से बाहर के लिए 350 रु. है। हरिश्चन्द्र दर्पण समिति के वार्षिक सदस्यों को 'रोहिताश्व पत्र' (त्रैमासिक) के चार अंक नि:शुल्क भेंट किये जाते हैं।लखनऊ निवासी सदस्यों के लिए 5 वर्ष का शुल्क रु. 1000/– एवं लखनऊ से बाहर वालों केलिए रु. 1400/–मात्र है।

संरक्षक सदस्य

'हरिश्चन्द्र दर्पण समिति' के संरक्षक सदस्य बनने का शुल्क 5100 रू. है। समाज के सभी गणमान्य सदस्यों से अनुरोध है कि वे संरक्षक सदस्य बनकर पत्रिका के आर्थिक पक्ष को सुदृढ़ करें। सभी संरक्षक सदस्यों के नाम पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रकाशित किये जायेंगे एवं उन्हें पत्रिका आजीवन नि:शुल्क प्राप्त होती रहेगी।

– विनय कृष्ण रस्तोगी
मंत्री, हरिश्चन्द्र दर्पण समिति, लखनऊ

एक विन्रम निवेदन –
स्वजातीय समाज की बालिकाओं से
(नि:शुल्क ट्रेनिंग शेयर ट्रेडिंग की)

अगर आप हाई स्कूल या इंटर की छात्राएं है, तो आप अपने बोर्ड की परीक्षाओं से मुक्ति पा चुकी होंगी। अब आप के पास वक्त ही वक्त होगा। इस वक्त को आप शेयर – ट्रेडिंग सीखने में बिताये ।

समाज की ऐसी बालिकाएं जो अनाथ हो, या जिनके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो और घर पर कंप्यूटर न हो, उनको यह ट्रेनिंग अवश्य लेनी चाहिए। मैं आप को आप के पैरो पर खड़े होने में सहयोग करूँगा ।

कंप्यूटर हमारा होगा, पूंजी हमारी होगी पर PROFIT आप का होगा। याद रखिये – यह सट्टेबाज़ी की फील्ड नहीं है। यह SUPERSKILL की फील्ड है। एक महीने की ट्रेनिंग ही आप में आत्मविश्वास पैदा कर देगी। चूं कि मेरे पास कंप्यूटर एक ही है अतः एक महीने में एक ही को सिखाया जा सकता है।

आप अपना आवेदन अपनी नवीनतम फोटो, आयु, पारिवारिक पृष्ठभूमि का विवरण देते हुए निम्न ईमेल पर भेजे।

सुधीर रस्तोगी

भूले बिसरे बाल गीत (संकलन)

जागो प्यारे

उठो लाल अब आँखे खोलो।
पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।
बीती रात कमल–दल फूले।
उनके ऊपर भौंरे झूले।।
चिड़ियाँ चहक उठी पेड़ो पर।
बहने लगी हवा अति सुन्दर।।
नभ में प्यारी लाली छायी।
धरती ने प्यारी छवि पायी।।
भोर हुआ सूरज उग आया।
जल में पड़ी सुनहरी छाया।।
ऐसा सुन्दर समय न खोओ।
मेरे प्यारे अब मत सोओ।।
–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

मुन्नी, मुन्नी, ओढ़े चुन्नी

मुन्नी, मुन्नी, ओढ़े चुन्नी
गुड़िया खूब सजाई।
किस गुड्डे के साथ हुई तय
इसकी आज सगाई।
मुन्नी, मुन्नी, ओढ़े चुन्नी
कौन खुशी की बात है।
आज तुम्हारी गुड़िया प्यारी
की क्या चढ़ी बरात है।

तितली

दूर देश से आती तितली
चंचल पंख हिलाती,
फूल–फूल कली–कली पर
इतराती इठलाती।
कितने सुन्दर है पर इसके,
जगमग रंग–रंगीले,
लाल हरे बैंगनी बसन्ती,
काले नीले पीले।
बच्चों ने जब देखी इसकी
खुशियाँ खेल निराले,
छोड़छाड़ कर खेल खिलौने
दौड़ पड़े मतवाले।
भाग रहे हैं पीछे–पीछे,
घबराये ललचाये,
सब हैं आँख जमाये इस पर,
सब हैं हाथ उठाये।
अब पकड़ी तब पकड़ी तितली
कभी पास तक आती,
और कभी पर तेज हिलाकर
दूर बहुत उड़ जाती।

लाया हूँ जी मैं गुब्बारे

हरे, गुलाबी, लाल, बैंगनी,
नीले नीले, पीले पीले।
लाया हूँ जी मैं गुब्बारे,
प्यारे प्यारे ये चमकीले।।
दस पैसे में एक मिलेगा,
मन चाहे जैसा ले लो तुम।
आसमान के तारे हैं ये,
गुब्बारे, इनसे खेलो तुम।।
यह लो मीरा, यह लो हीरा,
देखो तो यह सुन्दर कैसा।
रूठो मत, लो रेखा रानी,
घर से ले आओ दस पैसा।।
अच्छा जी अब जाता हूँ मैं,
फिर आऊँगा, गाँव तुम्हारे।
पर न भूलना रंग–बिरंगे,
ये मेरे गुब्बारे प्यारे।।

अम्मा जरा देख तो ऊपर

अम्मा जरा देख तो ऊपर,
चले आ रहे हैं बादल।
गरज रहे हैं, बरस रहे हैं,
दीख रहा है जल ही जल।।
हवा चल रही क्या पुरवाई,
झूल रही है डाली–डाली।
ऊपर काली घटा घिरी है,
नीचे फैली हरयाली।।
भीम रहे हैं श्वेत, बाग, वन,
भीग रहे हैं घर आँगन।
बाहर निकलूँ , मैं भी भीगूँ,
चाह रहा है मेरा मन।।

भालू, मेढ़क और गधे का गान

लाठी लेकर भालू आया,
छम छम छम, छम छम छम।
ढोल बजाता मेढ़क आया,
ढम ढम ढम, ढम ढम ढम।
मेढ़क ने ली मीठी तान,
और गधे ने गाया गान।

सूरज निकला

सूरज निकला चिड़ियाँ बोली,
कलियों ने भी आँखे खोली।
आसमान में छाई लाली,
हवा बही सुख देने वाली।
नन्हीं–नन्ही किरणें आईं,
फूल हंसे कलियाँ मुसकाई।।

प्रकृति की सीख

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ–उठ, गिर–गिर, तरल तरंग।
भर लो, भर लो, अपने मन में,
मीठी–मीठी मृदुल उमंग।।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।।
–सोहन लाल द्विवेदी

गौरैया

रोज सवेरे आँगन मेरे,
इक गौरैया आती है।
चहक–चहक कर,
फुदक–फुदक कर,
जमकर शोर मचाती है।
सारे घर को जगा–जगा कर,
अपनी शान दिखाती है।
अम्मा दाना–पानी देती,
खा पी कर उड़ जाती है।
रोज सवेरे आँगन मेरे,
इक गौरैया आती है।

बढ़े चलो

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
साथ में ध्वजा रहे, बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं
दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो
धीर, तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो
सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर हटो नही
तुम निडर डटो नहीं
वीर तुम बढ़े चलो
धीर, तुम बढ़े चलो।
प्रात हो कि रात हो
संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो
चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो
धीर, तुम बढ़े चलो।
–द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

संकलनकर्ता –
प्रकाश चन्द्र रस्तोगी,
समर बिहार, आलमबाग, लखनऊ।

समाचार दर्शन

हरिश्चन्द्रवंशीय गौरव

श्री रितेश रस्तोगी

वाली मस्जिद के प्रकरण में
म की रिवीजन अर्जी खारिज

नऊः टीले वाली मस्जिद में निचली अदालत के के विरुद्ध दाखिल रिवीजन सत्र अदालत ने खारिज

निचली अदालत के आदेश के विरुद्ध दाखिल की थी अर्जी, एडीजे ने निचली अदालत के आदेश को वाजिब करार दिया

हनुमान प्रसाद रस्तोगी गर्ल्स इंटर कालेज में विज्ञान प्रदर्शनी

हनुमान प्रसाद रस्तोगी गर्ल्स इंटर कॉलेज सुभाष मार्ग में दिनांक 28– 12–22 को विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें उप शिक्षा निदेशक, षष्ठ मण्डल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विद्यालय के नवनिर्वाचित प्रबंधक श्री कृष्ण जीवन रस्तोगी, उपाध्यक्ष आई. पी. श्रीवास्तव, सदस्य विनीत रस्तोगी एवं सचिन रस्तोगी विज्ञान प्रदर्शनी के उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे। विद्यालय प्रबंधक श्री कृष्ण जीवन रस्तोगी ने फीता काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में 6 से 10 तक की छात्राओं ने प्रतिभाग किया। सभी कक्षाओं की छात्राओं ने एक से बढ़कर एक सराहनीय मॉडल प्रस्तुत किए एवं बारीकी से उनके बारे में बताया। विज्ञान प्रदर्शनी में कक्षा 10 की एकांशी का गणितीय मॉडल एवं आयुषी के मानव शरीर के विभिन्न अंगों पर आधारित मॉडल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

श्रीमती मीता श्रीवास्तव एवं रेनू वर्मा ने मॉडलों का मूल्यांकन किया। मुख्य अतिथि उप शिक्षा निदेशक महोदय ने छात्राओं की वैज्ञानिक सोच को सराहते हुए कहा कि इसी प्रकार छोटे–छोटे प्रयासों से आगे चलकर बड़ी वैज्ञानिक खोजें संभव होती हैं। आज हम जिन सभी सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं वह आप जैसे ही नन्हे–मुन्ने वैज्ञानिकों की देन है। प्रदर्शनी का संयोजन श्रीमती शम्मी नाग प्रवक्ता एवं सुश्री वन्दिता पांडे ने किया।

इस अवसर पर छात्राओं एवं शिक्षिकाओं के प्रयास को सराहनीय बताते हुए प्रधानाचार्या श्रीमती अपर्णा त्रिपाठी ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अपर्णा त्रिपाठी
प्रधानाचार्या, हनुमान प्रसाद रस्तोगी गर्ल्स इण्टर कालेज
सुभाष मार्ग, लखनऊ

कु0 आन्या का जन्मदिन

लखनऊ हैवलक रोड निवासी श्रीमती मधु गोयल ने अपनी पौत्री आन्या का जन्मदिन दिनांक 22 नवम्बर 2022 को हजरतगंज स्थित प्रतिष्ठत रायल कैफे रेस्टोरेन्ट में अत्यन्त धूमधाम से हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया। समारोह में आन्या के नानाजी श्री सत्य प्रकाश रस्तोगी (वरिष्ठ समाज सेवी) मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

आन्या के माता–पिता डॉ. सरिता रस्तोगी व डॉ. नितिन गोयल विगत कई वर्षो से U.K. में निवास कर रहे है, तथा दोनों

वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ के रूप में वहाँ सेवारत है। संदर्भित अवधि में अपनी पुत्री आन्या सहित डॉ. दम्पत्ति लखनऊ अपने परिवारी जनों से मिलने हेतु आये हुए थे।

संदर्भित मांगलिक समारोह में आन्या के नानाजी के तीनों भाई परिवार सहित, दादी जी की बहन सुधा जी एवं भतीजी मोना अपने पति डॉ. अनिल जी व दोनों पुत्रियों सहित आन्या के मौसी–मौसा रितु व राजकमल अपने दोनों पुत्रों सहित तथा डॉ. नितिन के एक अभिन्न मित्र सम्मिलित हुए जिससे आयोजन अत्यन्त भव्य हो गया।

केक काटने की रस्म अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। सभी उपस्थित अतिथियों ने आन्या को अपने शुभाशीर्वाद से अभिसिंचित किया। इस विशिष्ट मांगलिक अवसर पर आन्या की दादी जी श्रीमती मधु व नानाजी श्री सत्य प्रकाश रस्तोगी जी की गरिमामयी उपस्थिति एवं उनका विशेष स्नेहाशीष प्राप्त होना आन्या के लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात रही।

समारोह रात 10 बजे तक चला जिसमें सभी उपस्थित अतिथियों की सहभागिता रही। इसे मनोरंजक एवं सफल बनाने में मौसी रितु के दोनो पुत्रों व बुआ मोना की दोनों पुत्रियों का विशेष योगदान रहा।

निवास : दशाश्वमेश एपार्टमेन्ट, हैवलक रोड, लखनऊ,
मो. 9415088928

प्रस्तुति
सत्य प्रकाश रस्तोगी, लखनऊ

हरिश्चन्द्रवंशीय गौरव

चि0 अर्नव गोयल (UK)

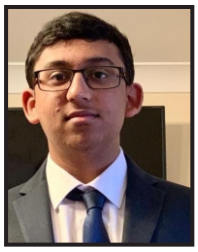

श्री सत्य प्रकाश रस्तोगी जी के नाती तथा डॉ. सारिका रस्तोगी एवं श्री नितिन गोयल के सुपुत्र चि. अर्नव गोयल ने यू.के. बोर्ड द्वारा संचालित इन्टरमीडिएट की परीक्षा वर्ष 2022 में सभी विषयों में A+ ग्रेड प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

अपनी बुद्धिमत्ता एवं विशिष्ट योग्यता के कारण यू.के. के प्रतिष्ठित संस्थान इम्पीरियल कॉलेज ऑफ लंदन की प्रवेश परीक्षा में चि. अर्नव ने सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप उक्त कालेज में मेकेनिकल इंजीनियरिंग के अध्ययन हेतु उनका चयन हो गया।

अर्नव प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। 13 वर्ष की अल्पायु में हायर 10 सोसायटी MENSA की सदस्यता प्राप्त कर चुके हैं ।

अध्ययनके अतिरिक्त पियानो बजाने एवं स्वीमिंग में उनकी बचपन से रुचि रही है। पियानो में रायल कॉलेज ऑफ म्यूजिक द्वारा प्रमाणित ग्रेड 7 तक की (कुल 8 ग्रेड में से) परीक्षा विशेष योग्यता सहित उत्तीर्ण की तथा स्वीमिंग में भी सभी श्रेणी का प्रशिक्षण पूर्ण कर जीवन सुरक्षा ट्रेनिंग भी प्राप्त की है।

19 वर्षीय अर्नव फार्मूला वन कार रेसिंग में भी रुचि रखते हैं तथा इस क्षेत्र में भी आगे बढ़ने के इच्छुक हैं।

UK में भारतीय समाज में द्वारा आयोजित सांस्कृतिक गतिविधियों में भी वे भाग लेते रहते हैं।

हरिश्चन्द्र दर्पण समिति उक्त विशिष्ट उपलब्धियों के लिए अर्नव व उनके परिवार को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

प्रस्तुति

सत्य प्रकाश रस्तोगी, लखनऊ

हरिश्चन्द्रवंशीय गौरव

चि0 सक्षम रस्तोगी

राज्य सरकार की ओर से दिनांक 27 जनवरी 2023 को सैनिक स्कूल के प्रांगण में प्रदेश की मेधावी बच्चों को सम्मानित करने के उद्देश्य से एक समारोह का आयोजन किया गया।

उक्त विशिष्ट समारोह में सक्षम रस्तोगी को ICSE बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 10 की परीक्षा में पूरे भारत में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय योगी आदित्य नाथ जी ने अपने कर कमलों द्वारा रुपये एक लाख का चेक एवं लैपटाप प्रदान कर सम्मानित किया।

सक्षम रस्तोगी लखनऊ बाग मक्का राजा बाजार निवासी श्रीमती नेहा एवं श्री शोभित रस्तोगी के सुपुत्र तथा स्व. पूनम एवं श्री दिनेश (बांके) रस्तोगी के सुपौत्र हैं। वह लखनऊ के प्रतिष्ठित काल्विन ताल्लुकेदार कालेज के छात्र हैं। सक्षम ने हाई स्कूल परीक्षा में 99.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर यह प्रतिष्ठा प्राप्त की साथ ही अपने माता–पिता सहित पूरे परिवार व हरश्चिन्द्र वंशीय समाज को गौरवान्वित किया है।

इस क्रम में यह भी उल्लेखनीय है कि सक्षम रस्तोगी को इस असाधारण सफलता हेतु माता–पिता व परिवार सहित हरिश्चन्द्र स्वास्थ्य परीक्षण समिति के विगत 15 अगस्त 2022 के वार्षिक समारोह में सम्मानित किया जा चुका है।

प्रस्तुति

सत्य प्रकाश रस्तोगी

लखनऊ

विवाह समाचार

लखनऊ सुभाष मार्ग निवासी श्रीमती गौरी एवं श्री विशाल रस्तोगी की सुपुत्री आयु अदिति (सुपौत्री स्व. किरन व स्व. महेन्द्र कुमार रस्तोगी–मोतीलाल रस्तोगी बैंकर्स परिवार) का शुभ पाणिग्रहण संस्कार दिल्ली निवासी श्रीमती रूबी एवं श्री सुशील रस्तोगी के सुपुत्र चि. शौर्य के साथ दिनांक 9 दिसम्बर 2022 को निरालानगर स्थित Regrant होटल में मंत्रोच्चार के साथ अत्यन्त धूमधाम से सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस मांगलिक अवसर पर वर–वधू के परिवार जन के अलावा बड़ी संख्या में संगे सम्बन्धी व इष्ट मित्र नव युगल को अपने स्नेहित आशीष से अभिसिंचित करने हेतु उपस्थित हुए जिससे आयोजन अत्यन्त भव्य हो गया।

वधू अदिति की बुआ परदादी श्रीमती चुन्नी देवी अस्वस्थता वश समारोह में शामिल न हो सकीं परन्तु उनका भी अतिविशिष्ट स्नेहाशीष नवयुगल को प्राप्त होना समारोह की अद्भुत व दुर्लभ उपलब्धि रही जिस कारण यह आयोजन स्मरणीय रहेगा।

लखनऊ राजा बाजार निवासी श्रीमती उमा एवं श्री रामकृष्ण रस्तोगी के सुपुत्र चि. रिषभ (सुपौत्र स्व. सावित्री देवी एवं स्व. कैलाश चन्द्र रस्तोगी) का शुभ विवाह संस्कार गोंडा निवासी श्रीमती सरिता एवं श्री महेश अग्रवाल की सुपुत्री आयु दिशा के साथ दिनांक 26 जनवरी 2023 को जी रेस्ट रिजार्ट एण्ड होस्टल में मंत्रोच्चार के साथ अत्यन्त धूमधाम से हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस पावन व विशिष्ट आयोजन में वर–वधू के परिवार जन के अलावा बन्धु बान्धव व मित्रगण बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए जिसमें समारोह की शोभा में कई गुना अभिवृद्धि हुई। सभी अतिथियों ने नवयुगल को अपने स्नेहाशीष से अभिसिंचित करते हुए उनके सुखद दाम्पत्य जीवन हेतु मंगल कामना की।

प्रस्तुति :

सत्य प्रकाश रस्तोगी

लखनऊ

वास्तु के छोटे–छोटे टिप

यदि आपके घर की वास्तु ठीक नही है, तो जीवन में कोई न कोई छोटी–बड़ी समस्या या परेशानी लगी ही रहती है। घर में सुख–शांति व समृद्धि का अभाव बना ही रहता है, तो वास्तु के इन छोटे–छोटे टिप्स को अपनाकर आप अच्छा अनुभव कर सकते है।

– अमावस्या के दिन घर में डली वाला नमक रात्रि में प्रत्येक कोने में छुआकर डाल दें। अगले दिन सफाई करके उसे बाहर फेंक दें। ऐसा करने से अच्छी ऊर्जा का संचार होता है, और घर के सदस्यों के बीच तालमेल बना रहता है।

– घर में यदि किसी का स्वभाव अत्याधिक क्रोधपूर्ण है या बात–बात पर क्रोध आ जाता है, तो ऐसे व्यक्ति को चाँदी के गिलास में पानी व दूध का सेवन करना चाहिये। तनावग्रस्त व्यक्ति को भी यह प्रयोग करना चाहिये।

– घर में बन्द पड़ी घड़ी न रखें। घड़ी को घर में उत्तर या पूर्व दिशा की दीवार पर लगायें। कभी भी दरवाजे के ऊपर की दीवार पर घड़ी न लगायें।

– गौमूत्र में किसी भी प्रकार के कीटाणुओं को नष्ट करने की चमत्कारिक शक्ति है। वास्तु में गौमूत्र का विशेष महत्व है। घर को शुद्ध व पवित्र करने के लिये, प्रातः काल सूर्योदय के समय गौमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में मुख्य–द्वार से शुरू करके मुख्य द्वार पर ही खत्म करने से बुरी–शक्तियों व नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव खत्म होता है। गौमूत्र घर में छिड़कने से केतु, शुक्र व बुध ग्रह के अशुभ प्रभावों में भी कमी आती है।

– शंख की ध्वनि जीवाणुओं–कीटाणुओं को नष्ट करने का सर्वोत्तम साधन है। शंखधोष गूंजने के स्थान पर दुष्टात्मायें प्रवेश नहीं कर सकती। शंख में रखे जल में कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति होती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार शंख में रखा जल छिड़कने से वातावरण शुद्ध होता है।

–गार्डनिंग करना एक अच्छी उपचार पद्धति है। इससे घर में ऑक्सीजन की मात्रा अच्छी रहती है। वातावरण भी स्वच्छ रहता है। नियमित रूप से पेड़–पौधों की देखभाल करने से व्यक्ति के धैर्य व आतमविश्वास में वृद्धि होती है। गार्डनिंग करने से व्यक्ति तनावमुक्त रहता है। बुध, शुक्र व चन्द्रमा आदि ग्रहों के दोषों में भी कमी आती है।

– घर में एकत्रित नकारात्मक ऊर्जा घर में कलह, स्वास्थ्य हानि व धन हानि का कारण बन जाती है। नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिये एक काँच की कटोरी में जल लेकर उसे 3 से 4 घण्टे सूर्य की रोशनी में रख दें। फिर उसमें थोड़ा सा गंगा जल व गौमूत्र डालकर अशोक के (3 या 5) पत्ते या आम के पत्ते से भगवान का नाम लेते हुये पूरे घर में छिड़क दें।

– लगातार 12 रविवार 108 बार गायत्री मंत्र का जाप करके एक माला हवन करने से भगवान आदित्य की कृपा से रोगों का नाश होता है। हवन में प्रयोग की जाने वाली ईंटों को यदि आप घर बनवाने में प्रयोग करते हैं, तो इससे वास्तु दोषों का प्रभाव कम होता है।

– सकारात्मक ऊर्जा के लिये घर में नमक व नीबू के पानी का पोंछा लगाना चाहिये। गुरूवार को नमक का पोछा न लगायें।

शरीर में पॉजिटिव लेयर बनाने के लिये नहाने के पानी में थोड़ा सा नमक व दो–बूँद नींबू डालकर नहाना चाहिये।

– धार्मिक मान्यता के अनुसार घर में किसी भी तरह की नकारात्मक ऊर्जा होने पर हवन करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है और घर का वातावरण भी शुद्ध होता है। हवन और यज्ञ का महत्व हमारी संस्कृति में अत्यन्त प्राचीनकाल से है। हवन तन और मन को शुद्ध करने के साथ वातावरण को भी शुद्ध करता है। हवन के धुयें से संजीवनी शक्ति का संचार होता है। हवन के माध्यम से बीमारियों और विषाणुओं से छुटकारा पाने का जिक्र ऋग्वेद में भी है। हवन से हर प्रकार के 94 प्रतिशत जीवाणुओं का नाश होता है। घर की शुद्धि तथा सेहत के लिये हर घर में हवन करना चाहिये। हवन में मंत्र जाप करने से अत्यधिक सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।

– यदि घर में वास्तुदोष हो तो घर में नकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है, इसे दूर करने के लिये 50 ग्राम फिटकरी का टुकड़ा घर के प्रत्येक कमरे में रखें। इससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहेगा। घर में शनिवार व अमावस्या को फिटकरी के पानी से धुलाई करने से व पोंछा लगाने से भी घर में पॉजिटिव एनर्जी बनी रहती है।

– जिस कमरे में शुद्ध वायु आने–जाने के लिये खिड़की या रोशनदान आदि न हो वहाँ काँच के बर्तन में शुद्ध कपूर रखने से शुद्ध वायु का संचार होता है और वास्तुदोष भी कम होता है।

– सुबह–शाम देसी कपूर जलाने से हवा में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। बीमारियों के इन्फेक्शन से बचने के लिये भी कपूर जलाना चाहिये। कपूर जलाने से वायु स्वच्छ होती है और नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है। वैक्टीरिया व कीटाणुओं का प्रवेश नहीं होता।

कपूर को बारीक पीसकर पानी में कपूर और एक चम्मच गौमूत्र डालकर पोंछा लगाने से नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

यह सभी उपाय व वास्तु–टिप अत्यन्त ही सरल है, जिनको अपनाकर आप अपने जीवन में सुख–शांति को आकर्षित कर सकते हैं। घर में सकारात्मकता का प्रवाह होने से सुख–शांति व समृद्धि का लाभ मिलने लगता है।

डॉ. नमिता रस्तोगी

(वास्तु–विशेषज्ञ, रेकी मास्टर, क्रिस्टल हीलर, टेरौ–कार्ड रीडर, अंकशास्त्री, लाल–किताब ज्योतिष)

448/1445 न्यू नगरिया, ठाकुरगंज, लखनऊ

मो. : 8957135940

त्रुटि सुधार

अंक 38, पृष्ठ सं. 76 : 'उपाय शुरू करने में सावधानियाँ' के अन्तर्गत सातवें उपाय को निम्न तरह से पढें

चौथ, चौदस व नवमी तिथि को शुरू न करें।

उपरोक्त त्रुटि हेतु खेद है।

नाटक

एक गुमनाम क्रांतिकारी

पृष्ठभूमि : अण्डमान द्वीप समूह के एक द्वीप माउंट हैरियट के होपटाउन जैट्टी में एक सरकारी बोर्ड लगा है। जिस पर अंकित है–––

यह वही स्थान है जहां 8फरवरी 1872के सायं 7बजे वायसराय लॉर्ड मेयो , एक सजायाफ्ता कैदी शेर अली खान के हमले के शिकार हुए। इस हमले में उनकी मृत्यु हो गई। शेर अली खान को 11मार्च 1872को वाइपर आइलैंड में फांसी दे दी गई।

पार्श्व स्वर : एक गुमनाम क्रांतिकारी... जिसके बलिदान की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई।न देश ने उसे याद रखा और न ही स्वाधीनता समर का इतिहास लिखने वालों के दृष्टिपथ में वह आ सका। वायसराय लॉर्ड मेयो से जुड़ी अनेकों निशानियां कई शहरों में अब भी मिल जाएंगी। अकेले प्रयागराज में ही उसके नाम पर मेयो रोड, मेयो हाल, मेयो होस्टल जैसे कई स्थान हैं। किंतु इस शहीद के स्मृति चिन्ह मात्र अण्डमान में ही मिलेंगे, वह भी खण्डहरों के रुप में

पात्र परिचय :

मनोहर लाल, 30 वर्ष , क्रांतिकारी
मांगेराम, 35 ,, , , ,
हीरा सिंह, 25 ,, , , ,
शेर अली खान, 29,, ,, ,,
खैबर दर्रे के जमरूद गांव का निवासी... पंजाब
माउंटेड पुलिस का पठान सिपाही
...अण्डमान जेल का कैदी न.15557
लार्ड मेयो, ब्रितानिया शासन का चतुर्थ वायसराय
जनरल स्टुवर्ड, सुपरिटेंडेंट अण्डमान
इडेन, ब्रितानिया अधिकारी

परिदृश्य क्रमांक 1 :

अमृतसर में मुख्य मार्ग से कुछ हटकर एक बहुत लंबी व संकरी गली के अंतिम छोर पर बनी एक विशालाकार हवेली में एक छोटा सा कक्ष... जिसमें खाद्य सामग्री सहित कुछ पात्र अल्मारी में रखे हैं। दीवार पर सीसे के आवरण में कैद भारत माता का चित्र लगा है। उस पर ताजे पुष्पों की माला टंगी है। एक तख्त बिछा है। तख्त पर अधलेटा एक क्रांतिकारी मनोहर लाल 'दि पायोनियर' नामक समाचार पत्र पढ़ रहा है। तभी बंद कपाटों को खोलकर एक दूसरा क्रांतिकारी जिसकी आंखें क्रोधाधिकता में दहक रही हैं, हड़बड़ाया हुआ सा उस कक्ष में प्रविष्ट होता है।

मांगेराम– जय भारत माता भाई!

मनोहर लाल– जय भारत माता भाई! पर तुम इतना हड़बड़ा क्यों रहे हो? और तुम्हारी सांस भी फूल रही है? आखिर हुआ क्या है?

मांगेराम– ये मुसलमान भी ना...कभी देशभक्त नहीं हो सकते। जिस धरती का अन्न जल ग्रहण कर ये सांसें लेते हैं उसी धरती माता को गाली देते इन्हें शर्म नहीं आती?

मनोहर लाल– ये पहेलियां सी क्यों बुझा रहे हो? साफ – साफ क्यों नहीं बताते कि हुआ क्या है?मांगेराम– आज मैं और हीरा सिंह छद्मवेश में थाने की गतिविधियों की टोह ले रहे थे। क्योंकि अन्य दिनों की अपेक्षा आज थाने में सरगर्मियां कुछ अधिक थीं। शायद कोई अधिकारी थाने का निरीक्षण करने आ रहा था। थाने के आसपास सड़कों को स्वच्छ कर पानी का छिड़काव किया गया था, मुख्य द्वार को पुष्प श्रृंखलाओं से सज्जित किया गया था और भीतर अनेकों सिपाही सावधान की मुद्रा में खड़े थे

मनोहर लाल– फिर क्या हुआ? शीघ्र बताओ न? उत्सुकता क्यों बढ़ा रहे हो?

मांगेराम– जरा सांस तो ले लूं... थोड़ा धैर्य रखिए, सब बताता हूं।

मनोहर लाल– चलो– चलो बहुत रख लिया धैर्य...अब जल्दी से पुनः शुरू हो जाइए!

मांगेराम–हमारे देखते ही देखते वहां कई चमचमाती गाड़ियों का काफिला आकर रुका। जल्दी ही हमें पता चल गया कि हमारे देश में कार्यरत ब्रिटिश इक्कीस वायसराय में से चतुर्थ श्रेणी का वायसराय लॉर्ड मेयो थाने का निरीक्षण करने आया है। थाने का सारा अमला उसके चारों ओर नाचने लगा था।

मनोहर लाल– तो इसमें नयी कौन सी बात हुई? ऐसा तो अक्सर होता ही है कि जब भी कहीं कोई अधिकारी दौरे पर पहुंचता है तो अधीनस्थ लोग उसकी जी हुजूरी में उसके चारों ओर नाचने लगते हैं।

मांगेराम– भाई थोड़ा धैर्य तो रखिए, ऐसी नयी बात बताऊंगा कि तुम चौंक पड़ोगे।

मनोहर लाल–ऐसा क्या हुआ? पहेलियां ही बुझाते रहोगे या कुछ आगे भी बताओगे?

मांगेराम–मैंने अक्सर देखा है कि ये स्साले ब्रिटिश अधिकारी न तो अंग्रेज सिपाहियों को कुछ कहते हैं और न ही मुसलमान कर्मचारियों को डांट– फटकार लगाते हैं। लेकिन मैंने उस थाने में अजीब ही मंजर देखा... एक मुस्लिम दीवान व अंग्रेज दारोगा ने एक पठान सिपाही को इंगित करते हुए न जाने वायसराय के कानों में धीरे से क्या कहा कि वह उस पठान सिपाही पर बरस पड़ा...सबके सामने उस बेचारे को ब्लडी फूल कहकर बुरी तरह अपमानित किया और बुरी तरह फटकारा भी। जबकि वह बेचारा भीगी बिल्ली की तरह सब कुछ चुपचाप सहता रहा।

मनोहर लाल– ये लोग हैं भी इसी दुत्कार फटकार के लायक। इन लोगों के रक्त में देशप्रेम की धारा तो बिल्कुल भी नहीं बहती। अंग्रेजों के पिट्ठू बने रहते हैं और हिंदुओं को अपना दुश्मन समझते हैं। आज हम भारतीयों की इन अंग्रेजों और मुसलमानों के कारण ऐसी दुर्दशा हो रही है कि देख–देखकर भी रोना आता है। और ये अंग्रेज तो जैसा उत्पीड़न भारतीयों का करते हैं कि मन करता है इन सबको गोलियों से भून दिया जाए। न तो हमारा धन–माल सुरक्षित है और न ही घरों में बहू बेटियों का मान सम्मान सुरक्षित रह गया है। हम हिन्दू दिन रात खून के आंसू रोया करते हैं, परंतु इन मुसलमानों के चेहरों पर लेशमात्र भी शिकन नहीं दिखाई देती...जैसे यह देश उनका हो ही न, जैसे इस मातृभूमि के प्रति उनका कोई कर्तव्य हो ही न। तुमने देखा है कभी किसी मुसलमान को इस धरती माता को शीश झुकाते?... जिसकी सोंधी मिट्टी में पल्लवित पोषित होकर वे निरंतर फल–फूल रहे हैं, जिस देश की पावन वायु में वे श्वासें ले रहे हैं क्या उसके प्रति वे कोई उपकार प्रकट करते हैं? जिस धरती माता का अन्न –जल ग्रहण कर वे अपने जीवन का अस्तित्व बनाए हुए हैं क्या उस धरती माता के प्रति उनका कोई कर्तव्य नहीं?

(बोलते–बोलते उसका चेहरा तमतमाने लगता है, होंठ सूखने से लगते हैं। मांगेराम उसके सामने पानी का गिलास कर देता है)

मांगेराम–लो भाई थोड़ा पानी पी लो! तुम्हारा गला सूख रहा है।

मनोहर लाल (पानी पीकर गिलास एक ओर रखते हुए)–हां तो आगे बताओ फिर क्या हुआ?

मांगेराम–आगे के वृत्तांत के लिए मैं हीरा सिंह को वहीं छोड़ आया हूं। वह पता लगाकर ही आएगा कि वायसराय उस पठान पर क्यों आग बबूला हो रहा था? आखिर हमारा लक्ष्य भी तो तभी सिद्ध होगा जब हमें थाने के भीतर की गतिविधियों का पता चलेगा।

मनोहर लाल–कौन सा लक्ष्य भाई?

(मांगेराम मुंह पर अंगुली रखकर धीरे बोलने का संकेत करता है)

मांगेराम– धीरे बोलिए भाई! दीवारों के भी कान होते हैं। हीरा सिंह के आते ही लक्ष्य का भी पता चल जाएगा। संक्षेप में यह समझ लीजिए कि हमें अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को सुचारू रखने के लिए हथियारों की भी आवश्यकता होगी और धन–माल की भी।

मनोहर लाल–– समझ गया...सब कुछ समझ गया।

(फिर दोनों उसी तख्त पर लेट जाते हैं और धीमें –धीमें न जाने क्या फुसफुसाते रहते हैं?)

परिदृश्य क्रमांक 2 :

रात्रि का झुरमुटा घिरने लगा है। कक्ष में मिट्टी के तेल की डिबिया जला दी गई है। और एक शुद्ध घृत के दीपक से मनोहर लाल व मांगेराम दोनों भारत माता के चित्र के सामने खड़े होकर आरती गा रहे हैं३

जय भारत माता...तेरी जय भारत माता !!

कोटि–कोटि पुत्रों की जननी, सुख समृद्धि की दाता !

जो भी तेरा अर्चन करता, अमृत का वर्षण पाता !

जय भारत माता...तेरी जय भारत माता !!

(तभी हीरा सिंह के साथ एक लम्बे –चौड़े व्यक्तित्व व लम्बी दाढ़ी वाला सलवार कमीज पहने पठान जैसा व्यक्ति वहां प्रवेश करता है)

हीरा सिंह–जय भारत माता की भाइयों!

मांगेराम वह मनोहर लाल–जय भारत माता की!

(दोनों अनजान पठान व्यक्ति को देखकर चौंक पड़ते हैं। पठान उनसे दृष्टि विनिमय होते ही अभिवादन की मुद्रा में दायां हाथ माथे से लगा लेता है)शेर अली खान है भाइयों! पंजाब माउंटेड पुलिस का सिपाही है। देशप्रेम की ज्वाला रगों में हिलोरे मार रही है। इसीलिए भारत माता को कोई अपशब्द कहे तो इससे सहन नहीं हो पाता।इसकी आंखों में क्रोधाग्नि धधकने लगती है और यह मरने मारने पर उतारू हो जाता है। इसकी इसी मानसिकता के कारण थाने के अन्य मुसलमान सिपाही इससे ईर्ष्या रखते हैं और अधिकारियों से इसकी चुगली करते रहते हैं।आज भी इस बेचारे को वायसराय ने जमकर लताड़ लगाई।

मनोहर लाल (विस्मय से उसे निहारते हुए)–एक मुसलमान होकर भी... देशभक्ति?

शेर अली खान–सारे ही मुसलमान एक जैसे नहीं होते भाईजान! कुछ फरेबी , मक्कार और दगाबाज होते हैं तो कुछ निहायत ही ईमानदार व भरोसेमंद भी होते हैं। सबको एक ही तराजू पर तोलना या फिर शक की निगाहों से देखना सरासर ग़लत है।

मनोहर लाल–खैर छोड़ो इन बातों को! यह बताओ कि आज थाने में क्या हुआ था?

शेर अली खान– थाने के खास हाल में विक्टोरिया महारानी की एक बड़ी सी तस्वीर लगी है। सारे फसाद की जड़ वही है। अफसरों की ओर से फरमान जारी किया गया है कि हर किसी को उसके सामने सिर झुकाना जरूरी है। यूं समझिए कि थाने के कायदे–कानून का वह एक जरूरी हिस्सा है। जबकि मैंने उसे मानने से इंकार करते हुए साफ–साफ कह दिया कि मेरा सिर या तो अल्लाह पाक के सामने झुकता है या फिर अपनी मादरे वतन के सामने। और सच बात तो यह है कि एक दिन मुझसे विक्टोरिया की शान के खिलाफ गुस्ताखी भी हो गई थी। मेरे अपने एक मुसलमान दोस्त दीवान दिलबाग के सामने मेरी जुबान से विक्टोरिया के लिए गाली निकल गई थी

(एकाएक चुप होकर कुछ सोचने लगता है कि इन लोगों के सामने सब कुछ सच–सच बताना चाहिए अथवा नहीं?)

मनोहर लाल–फिर क्या हुआ जल्दी से बताइए न? क्यों अधीरता बढ़ा रहे हो खान भाई?

शेर अली खान–होना क्या था... दिलबाग ने मेरी चुगली कोतवाल अल्बर्ट से कर दी। कोतवाल ने पहले तो खुद ही मुझे डांट–फटकार लगाई... मुझे भी गालियां दीं और मेरी भारत माता को भी नहीं बख्शा... भारत माता को भी गाली दे दी। और जब आज वायसराय दौरे पर थाने में आया तो उस हरामजादे कोतवाल ने उसके भी कान भर दिये। उसने मुझसे सबके सामने बेइज्जत करते हुए पूछा––टुम ओनरेबिल विक्टोरिया क्वीन को अपना हैड क्यों नहीं झुकाटा? जबकि यह सब फुलिश के रुल्स

हीरा सिंह (पठान का परिचय कराते हुए)–– भाई का नाम एंड रैगुलेशन का एक नैसेसरी पार्ट है।

मैने जवाब दिया–– मी लार्ड ! मैं भारत माता का सच्चा सपूत हूं। मेरा सिर या तो अल्लाह पाक के सामने झुकता है या फिर अपनी मादरे वतन के आगे। रही नौकरी की बात तो जितनी तनख्वाह पाता हूं उतना काम भी करता हूं। फिर मैं किसी और के सामने क्यों झुकूं?

गुस्से में लार्ड मेयो बहुत जोर से चिल्लाया–– साइलैंट इंडियन बिच के बास्टर्ड...यू ब्लडी फूल. ..योर इंडियन मदर की तो.....

मैं भी उसकी आंखों में आंखें डालकर गुर्राया–– सर आप मुझे चाहे जितनी गाली दे लीजिए ! पर मेरी भारत माता को कोई गंदा लफ्ज़ जुबान से मत निकालिए!

उसकी भूरी आंखों से चिंगारियां झरने लगीं–– क्या कर लेगा टू इंडियन डर्टी बिच के डर्टी पप्पी? हम बार–बार कहेगा योर इंडियन मदर इज लाइक डर्टी बिच।

मेरा गुस्सा काबू से बाहर होने लगा–– मी लार्ड! यदि आपने आगे कुछ कहा तो मुझसे आपकी शान में गुस्ताख़ी हो जाएगी। आपके मुंह से जुबान खींच लूंगा मैं।

'ओ ब्लडी फूल टेरी इटनी हिम्मट?' वह बहुत जोर से गरजा। फिर वह कोतवाल की ओर घूम गया–– सस्पेंड करो इसे! वरडी उतार लो और जेल में बंद कर डो ! स्साले इंडियन , नमकहराम, हमारा ही नमक खाटा और हम पर ही गुर्राटा।

(बोलते–बोलते आवेश में थरथराने लगता है शेर अली खान , और प्रतिक्रिया जानने के लिए मनोहर लाल और मांगेराम के चेहरों को निहारने लगता है कि वे उसकी बात को ध्यान से सुन भी रहे हैं

अथवा नहीं?)

मनोहर लाल व मांगेराम (एक साथ)–फिर ? फिर क्या हुआ ? कैसे बचाव किया तुमने अपना ?

शेर अली खान– कोतवाल व कुछ सिपाही मेरी ओर बढ़े तो मैंने अपनी बंदूक चारों ओर घुमाकर उन्हें पीछे हटने को मजबूर कर दिया और अपनी बंदूक उनके ऊपर फेंककर थाने की चारदीवारी लांघकर फरार हो गया।

मनोहर लाल– बहुत हिम्मती हो तुम तो! किसी ने पीछा नहीं किया तुम्हारा? पुलिस की वर्दी में तो बहुत आसानी से पहचानने में आ रहे होंगे तुम?

शेर अली खान– बहुत दूर तक पीछा किया गया मेरा, परंतु मैं एक संकरी गली में घुसा तो यह हीरा सिंह फरिश्ता बनकर मेरे सामने चला आया। इसने अपने सिर पर लपेटी चादर मुझे उढ़ाई और फिर तंग गलियों की भूल–भुलैया में अंग्रेज़ सिपाहियों को चकमा देकर एक गुप्त स्थान पर पहुंचने में कामयाब रहे। वहां से कपड़े बदल कर आपके पास चले आए।

मनोहर लाल– तो यहाँ क्यों चले आए तुम? पुलिस तुम्हारा पीछा करती हुई यहां तक पंहुच गई तो?

शेर अली खान– मैं खुद यहां नहीं आया भाईजान बल्कि आपके साथी हीरा सिंह द्वारा यहां लाया गया हूं। हीरा सिंह ने मुझसे कहा है कि हमारे संगठन में शामिल होकर हमारे साथ काम करो तुम। हम भी तुम्हारा सहयोग करेंगे।

मनोहर लाल– हमसे क्या सहयोग चाहते हो तुम?

शेर अली खान– पनाह... अंग्रेज सिपाहियों से बचाव..

मंजिल तक पहुंचने में मदद।

मनोहर लाल– क्या है तुम्हारी मंजिल?

शेर अली खान– इन्तकाम...बदला... जिन्होंने मेरी भारत माता को गाली दी है उनसे इन्तकाम.....

मनोहर लाल– तुम्हारा विश्वास कैसे किया जाए कि तुम हमारे साथ छल–प्रपंच नहीं करोगे?

शेर अली खान– एक सच्चा पठान कभी झूठ नहीं बोलता। फिर भी आप जैसे भरोसा करना चाहें वैसे कर सकते हैं। कोई भी इम्तिहान जैसे चाहे वैसे ले सकते हैं।

मनोहर लाल– तो फिर खाओ कसम इस दीपक की लौ पर हथेली रखकर कि आज से अपना हर कदम भारत माता की रक्षा के लिए उठाओगे! भारत माता की लाज बचाने के लिए प्राण भी न्योछावर करने पड़ें तो पीछे नहीं हटोगे!

(शेर अली खान दीपक की लौ पर अपनी हथेली रखकर संकल्प दोहराता है। यहां तक कि उसकी हथेली जलने लगती है तब भी वह हाथ पीछे नहीं हटाता)

मनोहर लाल (चीखते हुए)– बस बस हो गया विश्वास। हथेली हटा लो वरना जल जाएगी।

(शेर अली खान हथेली हटा लेता है। हथेली का एक भाग जलकर काला पड़ने लगा है जिसमें भयंकर टीस व जलन मचने लगी है। शेर अली दांत भींचकर पीड़ा सहन करने की कोशिश कर रहा है।)

कुछ देर सबके मध्य एक सन्नाटा सा पसर जाता है, जैसे वहां कोई उपस्थित ही न हो। फिर.....

मनोहर लाल– अच्छा शेर अली यह बताओ कि अपना प्रतिशोध पूर्ण करने के लिए तुम्हारे पास क्या योजना है?

शेर अली खान– हर महीने की अंतिम तारीख को पूरे थाने की तनख्वाह के लिए लोहे के एक ताला लगे संदूक में जिला कोषागार से धन लाया जाता है । जो कि चार सिपाहियों व कोतवाल की सुरक्षा में आता है। उस मार्ग में घना जंगल भी पड़ता है।

मनोहर लाल– क्या उनके हाथों में अच्छी तरह के हथियार होते हैं?

शेर अली खान– बहुत अच्छी किस्म के भाई!... बहुत दूर तक मार करने वाली बंदूकें.....

मनोहर लाल– तो फिर खान भाई! मिलाओ हाथ से हाथ... कोतवाल तुम्हारा और हथियार हमारे... हथियारों की बहुत सख्त जरूरत है हमें।

मांगेराम और हीरा सिंह (खुशी से उछलते हुए)– और वो लोहे का संदूक हमारा... धन–माल की भी तो बहुत जरूरत है हमें।

(चारों परस्पर मिलकर मन्त्रणा करने लगते हैं.....)

फिर वे रातों रात उस स्थान का परित्याग कर देते हैं। क्योंकि पुलिस शेर अली को बहुत सरगर्मी से तलाश करती फिर रही है।

परिदृश्य क्रमांक 3 :

घनघोर जंगल के मध्य एक ऊंची समतल पहाड़ी पर चार डंडों को खड़ा कर ऊपर फूस का छप्पर डालकर एक झोंपड़ी बनाई गई है। झोंपड़ी में चटाइयां बिछी हैं तथा ओढ़ने की चादरें . खीं हैं। जग में पानी तथा एक गिलास भी रखा है। चारों ओर चार साधु बैठे हैं। उनके मध्य धूनी रमी हुई है। दूर से देखने पर प्रतीत होता है कि वे कोई पूजा पाठ कर रहे हैं। जबकि वास्तव में वे पूजा पाठ न कर किसी विषय पर विचार मंथन कर रहे हैं।उनकी चौंकन्नी निगाहें बार–बार अपने चारों ओर की टोह लेने लगती हैं। विशेषतया उनकी निगाह उस सड़क पर जाकर स्थिर हो जाती है जो इस पहाड़ी से नीचे बलखाती नागिन की तरह लहराती हुई कभी इधर कभी उधर, कभी नीचे कभी ऊपर घूमती चली गई है।

तभी उनमें से एक लम्बे–चौड़े डील डौल व लम्बी दाढ़ी वाला साधु पहाड़ी से नीचे उतरकर घने जंगल में कहीं गुम हो जाता है। अन्य तीनों साधु शंकित निगाहों से बड़ी अधीरता से उसकी प्रतीक्षा करने लगते हैं।

उन तीनों में से एक साधु– कहीं यह हमें फंसाने का कोई षड्यंत्र तो नहीं कर रहा?

दूसरा साधु–लगता तो मुझे भी ऐसा ही है। वरना यह हमें बताए बिना बार–बार कहां जाता है? और फिर लौटता भी बहुत–बहुत देर बाद है।पूछो तो कुछ भी बताता नहीं।

तीसरा साधु– भई देखो! मुझे तो मुसलमानों पर बिल्कुल भी भरोसा है नहीं। ये लोग चाहे कितनी ही कसमें–धरमें खाएं,कितने ही वादे करें, कितना भी विश्वास दिलाएं ...पर मुझे तो इन पर लेशमात्र भी यकीन नहीं होता।

पहला साधु– हाँ भाई! अब तो मेरा विश्वास भी डगमगाने लगा है। कई दिन हो गए नगर बस्ती से दूर इस घने जंगल में डेरा डाले हुए। कभी बेर खाकर पेट भरना पड़ता है तो कभी बिस्कुटों से ही काम चलाना पड़ता है। और कभी–कभी तो पानी पर ही संतोष करना पड़ रहा है। हरपल निगाहें टकटकी बांधे उस सड़क को निहारती रहती हैं जिस पर शिकार के गुजरने की आशंका है... पर अभी तो शिकार का कुछ पता ठिकाना है नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि कहीं यह अपने शिकार की ओट में हमारा ही शिकार करने की चाल चल रहा हो?

दूसरा– इसकी तो ऐसी की तैसी। आने तो दो जरा इसे। इसकी लंबी दाढ़ी खींचकर पेट का सारा भेद न उगलवा लिया तो मेरा भी नाम मांगेराम नहीं।

तीसरा– और यदि इसके विश्वासघात पर मैंने इसे इसी मिट्टी में दफन न कर दिया तो मेरा भी नाम हीरा सिंह नहीं। तुम दोनों पर तो मैं रत्तीभर भी आंच आने नहीं दे सकता। आखिर तुम्हारे पास उसे लेकर भी तो मैं ही आया था। वरना क्या तो वह तुम दोनों को पहचानता और क्या तुम दोनों उसे जान पाते?

(तीनों हृदय पटल पर उमड़ –घुमड़ रहे आशंकाओं के बादलों के बीच इधर से उधर डोल ही रहे थे कि उस पहाड़ी से नीचे दूर कहीं लंबे–लंबे डग भरता हुआ वह लंबी दाढ़ी वाला पठान आता हुआ दिखाई देने लगा।)

मांगेराम– आ तो रहा है... शायद इस बार कोई सूचना लाए ?

हीरा सिंह– मैं तो साफ–साफ बता रहा हूं कि यदि इस बार उसने अपने शिकार की कोई खैर–खबर नहीं दी तो मैं वापस लौट जाऊंगा।जिसे मेरे साथ चलना हो चले, वरना मैं अकेला ही चला जाऊंगा। यहां इस बियाबान जंगल में भूखे प्यासे रहकर उस शिकार की प्रतीक्षा में वक्त बरबाद करना बेवकूफी है जिसका न तो कोई अता–पता है और न ही कोई ओर–छोर।

मनोहर लाल– धैर्य भाइयों धैर्य... मातृभूमि की रक्षा का संकल्प लिया है तो धैर्य रखना ही होगा। ज्यादा अधीर बनोगे तो किसी निष्कर्ष पर नहीं पंहुच सकोगे। खुद तो डूबोगे ही मुझे भी साथ लेकर डूबोगे। हड़बड़ी में उठाया गया कोई भी कदम कभी सार्थक परिणाम नहीं दे सकता।

(तभी हांफता हुआ पठान उनके समीप आ पंहुचता है)

शेर अली खान (हड़बड़ाया हुआ स्वर)–– भाइयों इंतजार के लम्हे खत्म हुए। शिकार नजर आ गया है।

मनोहर लाल– कहां? कहां ? ... कैसे?... कहां नजर आ गया शिकार? हमें तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा?

शेर अली खान– भाईजान! यहां से दाईं ओर कुछ नीचे उतरने पर एक पतली सी पगडंडी के पार काफी नीचे वह नदिया दिखाई दे जाती है जिसके किनारे बनी सड़क से गुजरकर वह मोटर हमारी ओर धीरे–धीरे बढ़ती चली आ रही है जिसमें हमारा शिकार है।

मनोहर लाल–फिर कैसे उसका शिकार करना है? जल्दी बताओ कहीं शिकार हाथ से निकल न जाए?

शेर अली खान–– भाईजान! बौखलाइए मत! अभी हमारे शिकार को हमारे जाल तक पहुंचने में एक घंटे से ज्यादा लगेगा। क्योंकि टेढ़े–मेढ़े, ऊँचे–नीचे पहाड़ी रास्तों पर चलने में काफी वक्त लगता है।

मनोहर लाल–– फिर भी यह योजना तो बना ही लीजिए कि हममें से किसे क्या– क्या करना है? ताकि समय पर कोई चूक न होने पाए।

शेर अली खान–यहँ से नीचे उतरकर उस सड़क का वह मोड़ दिखाई देने लगता है जहां से हमारे शिकार की मोटर गुजरेगी। बस उसी मोड़ पर हमारा जाल तैयार रहेगा...हम उस मोड़ पर बड़े–बड़े पत्थर रख देंगे जिससे वह मोटर रुकने को मजबूर हो जाए। हम सब इधर – उधर छिप जाएंगे। मोटर के रुकते ही हम सब फूर्ति से उन पर हमला कर देंगे। ध्यान रहे गोरा कोतवाल मेरा शिकार है... केवल मेरा शिकार। उसने सबके सामने मेरी भारत माता को गाली देकर मुझे भी बेइज्जत किया है और मेरी भारत मां को भी लांछित किया है, इसलिए उससे इन्तकाम मैं लूंगा। और चारों सिपाहियों व धन–माल के बक्से पर आपका हक...आप जैसे चाहें वैसे करें!

(शेर अली एक बार फिर अपनी जेब में छिपाए सब्जी काटने वाले चाकू की धार पत्थर पर घिसकर पैनी करता है)

शेर अली खान–– देखो भाईजान! अब तो यह हथियार हमें धोखा नहीं देगा न ?

मनोहर लाल–– नहीं–नहीं ... बस वार अचूक होना चाहिए!...और हीरा सिंह तुम?

(हीरा सिंह को चारों ओर खोजते हुए)

अरे यह हीरा सिंह कहां गया?

मांगेराम–– नीचे सड़क की टोह लेने गया था, वह देखो!... आ रहा है।

हीरा सिंह–– (नीचे से ही)–– भाइयों जल्दी करो! समय ज्यादा नहीं है। शिकार आने वाला है।(सभी जल्दी– जल्दी नीचे उतर कर सड़क के मोड़ पर बड़े–बड़े पत्थर रखकर रास्ता अवरूद्ध कर देते हैं। और स्वयं वृक्षों व झाड़ियों की ओट में छिप जाते हैं।)

(कुछ देर बाद गोरे कोतवाल की मोटर गाड़ी वहां आती है। और रास्ता अवरूद्ध देख रुक जाती है।)

गोरा कोतवाल–– सोल्जर्स डेखो ! रास्टा बिग स्टोन्स से बन्ड है। जल्डी से हटाओ !...बी क्विक !

(चारों सिपाही बंदूकें गाड़ी में रखकर पत्थर हटाने में जुट जाते हैं। कोतवाल गाड़ी में अकेला रह जाता है। तभी विद्युत्गति से शेर अली उछलकर उसके सामने आ खड़ा होता है और तेज धार वाला चाकू उसके वक्ष में घोंप देता है। मनोहर लाल व मांगेराम सिपाहियों की बंदूकें उठाकर उन्हीं पर आक्रमण कर देते हैं। दो सिपाही तत्काल धराशायी हो जाते हैं तथा दो खाई में कूदकर भाग जाते हैं।

हीरा सिंह धन–माल का संदूक सिर पर रखकर भाग लेता है। जबकि मनोहर लाल व मांगेराम बंदूकें संभालकर घने जंगल में कहीं गुम हो जाते हैं। शेर अली अकेला रह जाता है।

कुछ देर बाद शेर अली सड़क–सड़क, जंगल–जंगल दौड़ता–भागता नीचे बह रही नदी तक आता है। तथा नदी पार कर ब्रितानिया पुलिस की पकड़ से बहुत दूर निकल जाता है।)

परिदृश्य क्रमांक 4 :

ठाकुर रण विजय सिंह की विशालाकार हवेली... सूर्योदय की स्वर्णिम रश्मियां हवेली के भीतर प्रविष्ट होना ही चाहती हैं... हवेली में जागरण प्रारंभ हो चुका है... हवेली के बाहर हवेली से सटा इष्ट महादेव का बहुत सुंदर देवालय है। देवालय की स्वच्छता तथा अन्य व्यवस्थाओं का दायित्व ठाकुर साहब की पच्चीस वर्षीय विधवा पुत्रवधू कमलनयन देवी का है। निद्रा देवी के आगोश से बाहर निकलते ही सर्वप्रथम वह अपने इष्टदेव के दायित्व ही निपटाती है।

आज भी अन्य दिनों की भांति वह हवेली से निकलकर देवालय में प्रविष्ट हुई तो यह देखकर चौंक पड़ती है कि प्रांगण में एक गेरुआ किंतु मैले–कुचैले से वस्त्र पहने व्यक्ति सोया पड़ा है।

कमलनयन देवी–– आप कौन हैं भाई? और यहां कैसे?

व्यक्ति (अलसाई और उनींदी आंखें मसलते हुए)–– देवी! मैं एक राह भटका हुआ साधु हूं। चलते–चलते थक गया था। मंदिर दिखाई पड़ा तो दीवार फांदकर यहीं आ गया और यहीं लेट रहा। सोचा... यह तो भगवान का मंदिर है यहां तो हर किसी को पनाह मिलती है..... यदि मैंने गलत सोचकर गलत किया तो चला जाता हूं, कहीं और आसरा ढूंढ़ लूंगा।

कमलनयन देवी–– नहीं–नहीं भाई! ऐसी बात नहीं है। यह भगवान का घर है यहां हर किसी को आश्रय मिलता है। आप भी जब तक जी चाहे तब तक रहिए! किंतु अपना नाम तो बता दीजिए?

व्यक्ति–– साधु का कोई नाम नहीं होता देवी ! फिर भी आप मुझे साधु सिंह कहकर बुला सकती हैं।

कमलनयन देवी–– कहां के रहने वाले हैं आप?

साधु सिंह–– साधु का कोई एक स्थान नहीं होता , कल कहीं और था ,आज यहां हूं, कल का क्या पता कहां जाना पड़े? वैसे यदि आप अनुमति दें तो इस मंदिर की व्यवस्था का दायित्वमैं स्वयं संभाल सकता हूं। आपको भी कुछ राहत मिल जाएगी। इतनी सुबह–सुबह इतना सारा कार्य करना पड़ता है आपको।... और मुझे भी कुछ समय के लिए सुरक्षित ठिकाना मिल जाएगा।

कमलनयन देवी (निगाह झुकाए पैर के अंगूठे से फर्श कुरेदते हुए)–– यह अनुमति तो ठाकुर साहब अर्थात मेरे ससुर जी

ही दे सकते हैं। वैसे मैं उन्हें बता दूंगी आपकी नेकनीयत के बारे में।

(कहकर हवेली के भीतर चली जाती है। और कुछ देर बाद लौटती है तो ठाकुर साहब के साथ)

ठाकुर साहब (बिज्जू जैसी चमकीली आंखों से साधु को घूरते हुए)–– साधु! ठाकुर रणविजय सिंह नाम है हमारा। इलाके के बड़े–बड़े लोग हमारे नाम से कांपते हैं। अंग्रेज अधिकारी तक हमारी हवेली में बिना हमारी परमिशन के प्रवेश की हिम्मत नहीं कर सकते। इसलिए ध्यान रहे हमारे साथ कोई छल न हो, कोई प्रपंच न हो, कोई धोखा न हो। सब कुछ सच–सच बताना। कोई गड़बड़ी हुई तो हम सफाई का अवसर नहीं देंगे, सीधे तुम्हारी खाल उधेड़कर भुसा भर देंगे।

(साधु सिंह कृतज्ञ भाव से सिर झुकाए हाथ जोड़ लेता है)

साधु सिंह–– मुझ पर भरोसा रखें ठाकुर साहब।

ठाकुर साहब–– ठीक है जब तक जी चाहे मंदिर की सेवा करो! और जब जाना चाहो तो हमें बता देना, हम जाने की व्यवस्था कर देंगे। और तब तक का जो भी वेतन बनता होगा एक साथ दे देंगे।

साधु सिंह बड़ी श्रद्धा, बड़ी लगन, बड़ी निष्ठा से देव स्थान की सेवा करने लगता है। उसके माथे पर चंदन का मोटा सा लेप पुता रहता है। और नासिका के अग्रभाग से मस्तक के ऊपर तक रक्तिम रोली का लंबा सा तिलक खिंचा रहता है। एक भगवा चादर से वह अपनी देह तथा चेहरे को ढके रहता है। वह बहुत कम किंतु बहुत मधुर बोलता है। अधिकांश प्रत्युत्तर तो वह हाथ के संकेतों से ही निपटाता है। दूर–दूरस्थ क्षेत्रों से लोग पूजा पाठ करने आते हैं तो वह सभी को प्रसाद स्वरूप कुछ न कुछ भेंटकर ही वापस भेजता है।

खाली समय में वह नेत्र मूंदे साधना की मुद्रा में सिद्धासन में बैठा रहता है। अंधभक्त लोग उसे अपनी हस्तरेखाएं दिखाकर अपना भविष्य पूछते हैं तो वह पहले तो हस्तरेखाएं परखता है फिर मस्तक को पढ़ने का अभिनय करता है और आंखें बन्द कर कुछ भी बता देता है।

अब इसे ईश्वरीय संयोग माना जाए या कुछ और कि उसकी अधिकांश भविष्य वाणियां सत्य सी ही प्रतीत होती हैं।

अतएव उसकी सिद्धि व मधुराचरण की चर्चा दूर –दूर तक फैलने लगी है। पता नहीं कहां –कहां से लोग उसकी शरण में आते रहते हैं। और मोटी दक्षिणा से उसकी झोली भरते रहते हैं।

कुछ दिन बाद शिवरात्रि का पर्व आता है तो देवालय में जलार्चन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। साधु सिंह बड़ी श्रद्धा व उल्लास से उन्हें जलाभिषेक कराने में व्यस्त है कि उसी भीड़ में एक श्रद्धालु का फुसफुसाहट भरा स्वर सुनकर चौंक पड़ता है–– साधु सिंह तुम्हारा वास्तविक नाम क्या है?

साधु सिंह कनखियों से उसे पहचानते ही बौखला जाता है। उसके माथे पर स्वेदबिंदु झिलमिलाने लगते हैं। किंतु शीघ्र ही संभलकर वह अपना चेहरा चादर से ढक लेता है।

साधु सिंह (अत्यधिक धीमें किंतु तिलमिलाहट भरे स्वर में)–– आपको नाम से क्या लेना–देना? जिस कार्य के लिए आए हैं शीघ्र कीजिए और जाइए! और भी बहुत सारे लोग आपके पीछे खड़े हैं।

(और वह फिर से जलाभिषेक का संकल्प कराने में व्यस्त हो जाता है)

पार्श्व स्वर :

अगले दिन की सुबह भानु महाराज की सुनहरी रश्मियां उस इष्ट महादेव के देवालय में उतरीं तो अपने साथ एक भूकम्प भी अनेकों प्रतियां लहरा रही थीं और उनमें एक प्रमुख समाचार सभी को झकझोर रहा था––

ठाकुर रणविजय सिंह के मंदिर में कई माह से पुजारी के रूप में नियुक्त साधु सिंह निकला कोतवाल अल्बर्ट सहित दो सिपाहियों का हत्यारा पंजाब माउंटेड पुलिस का पठान सिपाही 'शेर अली खान' मंदिर से रात्रि में किया गया गिरफ्तार... उसके ही थाने के एक मुस्लिम दीवान दिलबाग ने दिया सुराग

परिदृश्य क्रमांक 5 :

मई 1871..... चतुर्थ वायसराय लॉर्ड मेयो का कलकत्ता स्थित कार्यालय :

लार्ड मेयो (एक विशेष अधिकारी जनरल स्टुवर्ड के कन्धे पर हाथ रखकर)–माई डीयर आफिसर स्टुवर्ड! यू आर माई वैरी बिलिवेबिल एंड इंटेलिजेंट आफिसर।आई एम वैरी हैप्पी बाइ योर वर्क कैपेसिटी।सो आई वांट टू गिव ए वैरी इंपोर्टेंट चार्ज ओफ अंडमान जेल।

जनरल स्टुवर्ड (सैल्यूट की मुद्रा में)–– एज योर आर्डर सर!

लार्ड मेयो–– नाउ यू आर दि सुपरिटेंडेंट ओफ अंडमान!

जनरल स्टुवर्ड–– ओ के सर ! माई प्लीजर सर!

लार्ड मेयो–– मैं चाहटा हूं कि अंडमान में खटरनाक राजनीटिक अपराढियों को कैड करने के उद्धेश्य से पारंपरिक जेल जैसी व्यवस्थाएं बनाई जाएं। टाकि इन इंडियन कैडियों को भयानक से भयानक पनिशमेंट डिया जा सके... ऐसा भयानक पनिशमेंट कि ये जिंडा वापस न लौट सकें... ऐसा पनिशमेंट कि वे ब्रिटिश अढिकारियों का विरोढ करने का विचार भी मन में न ला सकें... ऐसा कठोर पनिशमेंट कि ये इंडियन क्रांटिकारी हमारे विरोढ में सिर उठाना भूल जाएं। विरोढ में उठते ही इनके सिर

कुचल दिए जाने चाहिए।

जनरल स्टुवर्ड–– ओ के सर! ऐसा ही होगा। मैं आपकी उम्मीडों पर खरा उटरने का प्रयास करुंगा।

लार्ड मेयो–– एक बाट और जनरल स्टुवर्ड! वहां एक खटरनाक कैडी शेर अली खान भी है। वह हमारे एक आफिसर कोटवाल अल्बर्ट तथा डो कांस्टेबल्स का काटिल है। इसी जुर्म में वह उमर कैड की सजा काट रहा है। उसे बिल्कुल छूट न डी जाए! उस पर बहुट ज्याडा सख्टी बरटी जाए! ओ के?

जनरल स्टुवर्ड–– ओ के सर !...सर! ओनली वन रिक्वेस्ट?

लार्ड मेयो–– वाट जनरल? जल्डी बोलो ?

जनरल स्टुवर्ड–– सर एक बार आप भी वहां आकर अंडमान की भयावह कंडीशंस का इंस्पेक्शन जरुर करें!

लार्ड मेयो–– ओ के जनरल! बहुट जल्डी मैं भी वहां का इंस्पेक्शन करुंगा।

जनरल स्टुवर्ड–– थैंक यू सर!

सैल्यूट कर अण्डमान के लिए प्रस्थान कर देता है३

परिदृश्य क्रमांक 6 :

अण्डमान द्वीप समूह में शेर अली खान ने स्वयं को जेल अधिकारियों की दृष्टि में एक शान्त,सरल व व्यवहार कुशल कैदी के रूप में स्थापित कर लिया है। अपने मृदुल आचरण व विनोदी स्वभाव से वह सबको हंसा–हंसा कर लोट–पोट करता रहता है। खुश होकर जेल प्रशासन ने उसे नाई अर्थात बाल काटने व दाढ़ी बनाने का कार्य सौंप दिया है। जिससे वह अण्डमान द्वीप समूह के किसी भी द्वीप पर सरलता से आ जा सकता है।

24 जनवरी 1872 :

वायसराय लॉर्ड मेयो के दो स्टीमर 'ग्लासगो' व 'ढाका' कोलकाता बंदरगाह से रंगून प्रस्थान करते हैं। वापसी में 8फरवरी 1872 को सुबह 9.30बजे जैसे ही दोनों स्टीमर पोर्ट ब्लेयर बंदरगाह पर लगते हैं तो शाही बिगुल बज उठता है। और तोपों की सलामी

दी जाती है।

यह आवाज समीपवर्ती टापू 'होपटाउन' पर शेर अली खान के कानों में भी पड़ती है। अनायास उसके मुंह से निकल पड़ता है–– आ गया मेरा शिकार! मेरी भारत माता को गाली देने वाले कुत्ते तुझसे इंतकाम लेने का वक्त आ गया है।

वह सब्जी काटने वाला चाकू जेब से निकालता है और पत्थर पर घिसकर उसकी धार तेज करने लगता है।

उधर हथियारबंद पुलिस दस्तों से घिरा लार्ड मेयो पैदल ही रौश, वाइपर और चैथम द्वीपों का दौरा करता है।

और फिर सायं काल 5 बजे––

लार्ड मेयो–– जनरल स्टुवर्ड! अभी टो केवल फाइव पी एम हुए हैं। कम से कम एक घंटा डिन बाकी है। क्यों न होपटाउन ड्वीप स्थित माउंट हैरियट पहाड़ी पर चढ़कर सन सैट (सूर्यास्त) का आनंद उठाया जाए।

जनरल स्टुवर्ड–– किंतु सर! सुरक्षा कारणों से मैं आपको इस समय वहां ले जाना उचित नहीं समझटा।

लार्ड मेयो–– कोई बाट नहीं, मैं नहीं समझटा कि सुरक्षा टुकड़ियों के होटे हुए मुझे वहां कोई खटरा होगा।

जनरल स्टुवर्ड–– ओ के सर! एज योर विश सर! आपके लिए खच्चर की व्यवस्था की जा रही है और फिर सुरक्षा टुकड़ियों से घिरा लार्ड मेयो खच्चर की पीठ पर बैठकर माउंट हैरियट पहाड़ी की चोटी पर पहुंच जाता है। और सूर्यास्त के नयनाभिराम दृश्य का बड़ी तन्मयता से अवलोकन करने लगता है। आनंदातिरेक में बार बार उसके मुंह से अनायास निकल पड़ता है–– ओह माई गॉड!किटना सुंडर,किटना मनमोहक, किटना अड्भुट नजारा नेचर का!

पहाड़ी की चोटी से नीचे उतरने तक 7बज चुके हैं। और अंधकार का स्याह झुरमुटा भी पहाड़ियों को अपनी चादर में लपेट चुका है। जनरल स्टुवर्ड सुरक्षा टुकड़ियों के साथ तीव्र गति से आगे बढ़कर समुद्र में खड़ी लांच की व्यवस्था देखने लगता है।उसकी कोशिश लार्ड मेयो को शीघ्रतातिशीघ्र वहां से सुरक्षित निकाल ले जाने की है। इसी कसमकस में लार्ड मेयो पीछे रह जाता है।

तभी अंधकार का आश्रय लेकर कोई साया विद्युत्स्फूर्ति से उसके समीप पहुंचता है और तीव्र गति से चाकू का अचूक वार उसके वक्ष पर करके गायब हो जाता है।

लार्ड मेयो नीचे गिर जाता है और जोर से चिल्लाता है––

लार्ड मेयो–– डेखो! डेखो! किसी ने मुझ पर नाइफ का वार किया है। लेकिन कोई चिन्टा की बाट नहीं, ज्याडा चोट नहीं है। सिंपल ड्रेसिंग से ठीक हो जाएगी।

जनरल स्टुवर्ड (भागकर आते हुए)–– हम आपको कुछ नहीं होने डेंगे सर! हमारे डाक्टर अभी आपको ट्रीटमेंट डेंगे।

लार्ड मेयो–– मेरा सिर घूम रहा है और आंखों के आगे अन्धेरा छाटा जा रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे मेरी आंखें कोई जबरडस्टी बन्ड किए दे रहा हो।

लार्ड मेयो को तत्काल स्टीम लांच पर लाकर लिटा दिया जाता है। डाक्टर्स निरीक्षण परीक्षण करते हैं। और मृत घोषित कर देते हैं।

उधर सुरक्षा अधिकारी स्फूर्ति से हत्यारे को पकड़ लेते हैं। और पहचानते ही चौंक पड़ते हैं... क्योंकि वह सीधा सादा और सच्चा दिखाई देने वाला पठान शेर अली खान है।

9 फरवरी 1872 :

लार्ड मेयो के शव को उसके स्टीमर 'ग्लासगो' पर लाया जाता है। वहीं रस्सियों से बंधे शेर अली खान को भी लाया जाता है। और वहीं ब्रिटिश मजिस्ट्रेट इडेन उस पर मुकदमे की कार्यवाही करता है––

ब्रिटिश मजिस्ट्रेट इडेन–– शेर अली खान! टुमने हमारे वायसराय की हट्या क्यों की?

शेर अली खान–– क्योंकि इसने मेरी भारत माता को गाली दी थी।

इडेन–– कब डी ठी गाली?

शेर अली–– तीन साल पहले जब मैं अमृतसर के थाने में सिपाही था, यह वहां मुआयने के लिए आया था। तब कोतवाल ने भी गाली दी थी मुझे। उसे तो मैंने तभी कुछ दिन बाद ही निपटा दिया था। तभी इसने भी मेरी भारत माता को बेइज्जत किया था। मैंने तभी कसम खाई थी कि मौका मिलते ही इसे भी मार डालूंगा।इडेन–– क्या टुम्हें ओनरेबिल वायसराय का मर्डर करटे डर नहीं लगा?

शेर अली–– अल्लाह का नेक बन्दा नेक काम करते हुए कभी किसी से नहीं डरता।

इडेन–– इस अपराढ का पनिशमेंट जानटे हो?

शेर अली–– जानता हूँ।... फांसी से अधिक कुछ नहीं।

इडेन–– कोई अन्टिम इच्छा?

शेर अली–– मैंने भारतीयों के दुश्मन को मार डाला...तो मुझे इसी दुश्मन लार्ड मेयो के हत्यारे के रूप में अखबारों में जगह मिले।

इडेन–मैं इस खटरनाक अपराढी शेर अली खान को फांसी की सजा मुकर्रर करटा हूँ।

जनरल स्टुवर्ड–और मैं इस सजा का अनुमोडन करटा हूँ कि जल्डी से जल्डी इस खटरनाक मुजरिम शेर अली खान को फांसी पर लटका दिया जाए!

और फिर 11मार्च 1872 को शेर अली खान को वाइपर द्वीप पर फांसी के फंदे पर लटका दिया गया।

पार्श्व स्वर–

अण्डमान द्वीप समूह के 'वाइपर द्वीप' पर वह जर्जर भवन आज भी खण्डहर के रूप में स्थित है जहां इस गुमनाम क्रांतिकारी शेर अली खान को चतुर्थ वायसराय लॉर्ड मेयो की हत्या के आरोप में उसी दिन हत्या का मुकदमा चलाकर सायंकाल तक फांसी का दंड निर्धारित कर दिया गया। और फिर हत्या अभियोग के एक माह उपरांत ही उसे फांसी पर लटका दिया गया।

लेकिन उस भवन में जहां उसे फांसी पर लटकाया गया था, भीतर तक पहुंचना अत्यधिक दुष्कर है। क्योंकि गोबर, कीचड़, जालों और चमगादड़ों ने उसमें अपना बसेरा कर लिया है।

डा. अशोक रस्तोगी

1902, अग्रवाल हाइट्स, राजनगर एक्सटेंशन,
गाजियाबाद–201017
मो. : 9411012039, 8077945148

हरिश्चन्द्रवंशीय समाज – समाचार पत्रों की नजर में

At 79, scientist-turned-artiste still pursues his passion-- acting!

Aakash Ghosh
aakash.ghosh@htlive.com

LUCKNOW: At 79, when most people lead a retired life, former senior CDRI scientist and actor Anil Rastogi is still pursuing his passion—acting--contributing in all available mediums, including stage, radio, television, cinema and OTTs and yearning for more on a daily basis.

Shuffling the pages of an album and looking through old photographs of early days in his old but beautiful house on Subhash Marg, he recalls his first play at the age of 20, first film and TV serial at the age of 44 and becoming a household name at the age of 69.

He is among the very few who followed their acting passion despite having a secure career. He joined CSIR-Central Drug Research Institute in 1962 as a junior fellow and went on to become the institute's head of biochemistry department and directors grade scientist later, having trained multiple young researchers under him before he retired in 2003.

Even today, after having performed in over 900 shows of 95 plays across the country, 55 films and 11 OTT shows, Rastogi's thirst for more work is unquenched. However, the Lucknow-born actor says he had never intended to become an actor. "My goal during my service period was to become a scientist and conduct research. Acting just happened, which brought me national and international recognition," he said.

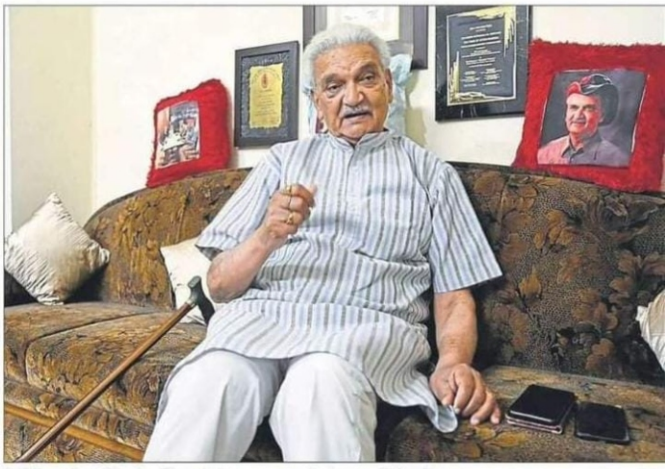

Anil Rastogi says his scientific work has never come in the way of his acting. DEEPAK GUPTA/HT

THE LUCKNOW-BORN ARTISTE SAYS HE HAD NEVER INTENDED TO BECOME AN ACTOR, ACTING JUST HAPPENED.

SCIENTIFIC CAREER

Rastogi completed his M Sc in biochemistry. "In 1962, I attended a civic gathering at CDRI for cosmonaut Uri Gagarin. I decided to come here (to the institute), and by God's grace, I was given a fellowship, after which I worked for 41 years in the same position. I retired as the head of biochemistry and scientist G (director's grade). I travelled to Germany, Denmark and other countries on multiple occasions. I've published 100 research papers and my PhD students are doing well in prestigious universities," he said.

ACTING CAREER

"In 1964, I was organizing an exhibition. For the first time, I performed a play called 'Banaspati Shayar' (fake poet), which received a lot of praise and inspired me. The same director began to promote me. KV Chandra was a big director back then and I got the character of chowkidar in his play 'Jai Somnath,' where I had to only stand at the gate, but as luck would have it, I graduated to being the major villain. For the first time, I was noticed in this performance," he says. With the establishment of the Darpan theatre group in 1971, he made his stage debut as the lead in BV Karanth's 'Haya Vadan' (1972), alongside Vijay Vastav and Shobhna Jagdish. He became Darpan's secretary in 1978 and continued on the post till 2017. "I worked a lot and took Darpan across the country. I continue to take it forward as general secretary even today," he added.

His big screen journey started with Sudhir Mishra's directorial debut 'Yeh Woh Manzil to Nahi' in 1986. Then he did 'Khoon Baha Ganga Main' (1988), 'Chintoo Ji' (2009), 'Main, Meri Patni Aur Woh' (2005) and a few other films.

But the major break came with the 2012 film 'Ishaqzaade'," which he considers as the game changer.

Kavita Chaudhury's serial 'Udaan', daily soap Na Bole Tum Naa Maine Kuch Kaha (season 2) and films like 'Batla House' (2019) and 'Mukti Bhawan' (2016) brought him international recognition. 'Mukti Bhawan' won 132 international awards.

Rastogi was also seen in movies like 'Gangaa' (2020), 'The Accidental Prime Minister' (2019) and 'Guddu Rangeela' (2015) among others and several recent OTT shows such as 'Aashram' (Season 1,2,3) (2020), 'Raktanchal' Season 2 (2022), 'Mumbai Diaries' (2021), 'The Suitable Boy' (2020) and 'Shiksha Mandal' (2022).

The actor will soon be seen in upcoming projects such as 'Bindia' with Richa Chaddha, 'Taali' with Sushmita Sen and 'Capsule Gill' with Akshay Kumar and Parineeti Chopra.

Rastogi takes inspiration from theatre veteran Raj Bisaria (83) who is still going strong. The actor credits his success to his wife Sudha Rastogi, his entire family, his institute and his fans for his success. He says his scientific work has never come in the way of his acting.

Rastogi is also the recipient of several awards, including UP Sangeet Natak Academy Award (1984), UP Sangeet Natak Academy Fellow (2008), Yash Bharti (2017) and Awadh Samman (2019). He is also a social worker who contributes his earnings to social causes. He provides free medication and other medical help to underprivileged patients in KGMU, Lucknow.

WRITE IN

Know anyone who is an elderly, but still committed to a cause, endowed with intellectual agility and exemplifies the spirit of 'to strive, to seek, to find, and not to yield'? Write in to saron@hindustantimes.com with details of such untiring crusaders of excellence.

डॉ. अनिल रस्तोगी
हिन्दुस्तान टाईम्स

हिन्दुस्तान टाईम्स

करों का बोझ

वर्तमान राजनीतिक सत्ता का एकमात्र लक्ष्य येन केन प्रकारेण व्यापक ''कर राजस्व संग्रह'' है और आर्थिक रणनीतिकार पूंजीवाद को ही बढ़ा रहे हैं जिससे मध्य वर्ग की दुर्गति बढ़ती जा रही है। संरक्षित पूंजीवादी नीतियों से न केवल महंगाई ही बेलगाम हुई है, अपितु सामान्य जनजीवन पर भी गहरा असर पड़ा है। भारी भरकम रोड टैक्स, टोल टैक्स और वाहन रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा करने के बाबजूद टूटी हुई सड़कों से गुजरते हुए न जाने कितने लोग रोजाना चोट खाते हैं लेकिन हाई सिक्योरिटी प्लेट प्राथमिकता है। शिक्षा, इलाज कराना साधारण मिडिल क्लास के लिए मुश्किल होता जा रहा है लेकिन इस दिशा में कोई प्रयास नहीं हो रहे। सरकार गैरजरूरी खर्चों पर रोक लगाए।

रचना रस्तोगी, लखनऊ

दैनिक जागरण, लखनऊ 18-2-23

नगर आर्य समाज का यज्ञ के साथ मना वार्षिकोत्सव

जासं, लखनऊ: नगर आर्य समाज नकाबगंज के 129 वें वार्षिकोत्सव यज्ञ के साथ शुरू हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम में आर्य जगत की विदुषी डा. श्रुतिकीर्ति, रवींद्र आर्य शरीक हुए। सुबह ऋषि दयानंद और शिवरात्रि पर्व पर विशेष व्याख्यान हुआ। संचालन और आयोजन प्रधान अजय कुमार श्रीवास्तव, रितेश रस्तोगी, राधा केसरवानी, आर्य संजय कुमार का रहा।

दैनिक जागरण, लखनऊ 20-2-23

जीत की नींव है बूथ सशक्तिकरण अभियान : रस्तोगी

श्रावस्ती (एसएनबी)। भारतीय जनता पार्टी जिला इकाई द्वारा बूथ सशक्तिकरण अभियान को लेकर जिला कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिलाध्यक्ष महेश मिश्रा ओम की अध्यक्षता में सम्पन्न जिला कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में जिला प्रभारी राहुल राज रस्तोगी उपस्थित रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में लोकसभा संयोजक शंकर दयाल पाण्डेय और विधायक श्रावस्ती प्रतिनिधि अवधेश कुमार पाण्डेय उपस्थित रहे।

कार्यशाला आयोजित

मंगलवार को भाजपा जिला कार्यालय भिनगा में बूथ सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत आयोजित जिला कार्यशाला में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष महेश मिश्रा ओम ने कहा कि हिम सभी कार्यकर्ताओं को बूथ तक संपर्क कर सरकार की उपलब्धियों को हर घर तक पहुंचाना है। मुख्यातिथि जिला प्रभारी राहुल राज रस्तोगी ने कहाकि बूथ सशक्तिकरण अभियान इस लोकसभा चुनाव की नींव है। जिले के सभी बूथों पर एक साथ विभिन्न कार्यक्रमों के तहत कार्यक्रम प्रारम्भ होने वाला है। इस अभियान के अन्तर्गत जिला से मण्डल, मण्डल से शक्तिकेन्द्र, शक्तिकेन्द्र से बूथ और बूथ से पन्ना प्रमुख तक कार्यकर्ता कार्य करेंगे एयर संगठन के द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार संपर्क, प्रवास व संवाद करेंगे। लोकसभा संयोजक शंकर दयाल पाण्डेय ने कहाकि बूथ सशक्तिकरण अभियान सशक्त मण्डल सक्रिय बूथ की अवधारणा को धरातल पर चरित्रार्थ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

विधायक श्रावस्ती प्रतिनिधि अवधेश कुमार पाण्डेय ने कहाकि हर कार्यकर्ता को बूथ सशक्तिकरण अभियान के आवंटित को मण्डल व शक्तिकेन्द्र स्तर पर आवंटित कर पूरी ऊर्जा के साथ लगकर सफल बनाना है। प्रोजेक्टर के माध्यम से स्लाइड चलाकर अभियान के तकनीकी बिंदुओं को भी कार्यकर्ताओं को समझाया गया। जिला कार्यशाला का संचालन जिला महामंत्री पुरुषोत्तम कौशल ने किया। कार्यशाला में जिला महामंत्री दिवाकर शुक्ला, रमन सिंह, प्रेम सिंह नायक, जिला उपाध्यक्ष पूजा पाण्डेय, स्वाति तिवारी, सरिता सिंह, रणबीर सिंह, प्रहलाद शुक्ला, जिला मीडिया प्रभारी संजू तिवारी, नेकराम पाण्डेय, ज्ञान वर्मा, अनिल मिश्रा तथा अन्य जिला पदाधिकारी व मण्डल अध्यक्ष उपस्थित रहे।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते मुख्य अतिथि राहुल राज रस्तोगी।

खेल जगत

क्या विराट सचिन के रिकार्ड तोड़ेंगे ?

भारत के भूतपूर्व प्रारम्भिक बल्लेबाज गौतम गंभीर ने विराट को सचिन के सम्मुख कमतर ऑकते हुये कहा है कि सचिन के समय बल्लेबाज अधिक कठिन परिस्थितियों में खेलते थे। सचिन ने शतको का शतक लगाकर एक अभेद्य सा दिखने वाला किला खड़ा कर दिया है। उन्होनें टेस्ट मैच में 51 एवं एक दिवसीय में 49 शतक बनाये थे। तिरुवनंतपुरम में 15 जनवरी को श्रीलंका के विरुद्ध तीसरे एक दिवसीय मैच में विराट ने नाबाद 166 रन की पारी खेलकर अपना 46 वॉ शतक बनाया। इन 46 शतकों के लिये विराट ने 268 मैच खेले। जबकि सचिन को इतने ही शतक बनाने में विराट से 163 मैच अधिक, कुल 431 मैच खेलने पड़े थे। प्रत्येक शतक के लिये सचिन को 9.37 पारी खेलनी पड़ी तो विराट को केवल 5. 83। सचिन का एक दिवसीय मैचों में औसत 44.83 का है तो विराट का कहीं ज्यादा 51.5। सचिन ने 463 मैच में 18426 रन बनाए हैं तो विराट ने मात्र 268 मैच में ही 12754 रन बना दिये हैं। विराट ने पिछले 4 मैचों में 3 शतक लगा दिये हैं। यदि वे ऐसा ही खेलते रहे तो संभवतः एक दिवसीय मैचों में सर्वाधिक शतको एवं रनों का रिकॉर्ड उन्ही के नाम हो जायेगा। घरेलू मैदान पर सचिन के 20 शतक के रिकॉर्ड को विराट ने 21 शतक बना कर तोड़ दिया है। श्रीलंका के विरुद्ध 10 शतक बनाकर उन्होने किसी एक देश के विरुद्ध सर्वाधिक शतक बनाने का रिकॉर्ड तोड़ दिया है, पूर्व में यह सचिन के नाम था। विराट ने 20 बार मैन आफ सिरीज बनकर सचिन की बराबरी कर ली है। टी–20 में भी वह कुछ शतक लगाकर शतकों के शतक के लक्ष्य को पार कर सकते हैं।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी, लखनऊ

कलयुग की महिमा

टोपी पड़ी गाँव के नीचे
जूता सर पर नाच रहा है
कलियुग की महिमा यह देखो
गदहा पँजीरी फाँक रहा है।

धनपति खाली हाथ खड़ा है
निर्धन सिक्के बाँट रहा है
यह फेर दिनन का कैसा रामा
राजा कौवे हाँक रहा है।

पंडित लिये कटोरा फिरते
मुल्ला अपनी हाँक रहा है
एक अजूबा हमने देखा
मँगू गीता बाँच रहा है।

सूरज छिपता छिपता घूमे
चन्दा तारे बाँट रहा है
यह कैसी अनहोनी भैया
बादल चाँदी काट रहा है।

विद्यापति मुँह बाये खड़ा है
लँगड़ा पर्वत लाँघ रहा है
यह कैसा अचरज मोरी मैया
अँधरा सबकुछ देख रहा है।

रत्नाकर निश्चेष्ट पड़ा है
पोखर कल–कल नाच रहा है
यह कैसा कलियुग है आया
तृण आँधी को बाँध रहा है।

अन्धानुकरण

देखकर अनदेखा करने लगे हैं लोग,
शायद अब अन्धे होनें लगे हैं लोग।

अभिमान के पाँवों तले कुचल कर,
स्वाभिमान को भूलने लगे हैं लोग।

जाम से जाम टकराते हुये अब,
झुककर प्रणाम करना भूलने लगे हैं लोग।

दिखावटी चमक–दमक में खोकर,
अदब–कायदा सब भूलने लगे हैं
लोग।पश्चिम के अन्धानुकरण में अब,
पूरब को भूलने लगे हैं लोग।।

पैसा हाय पैसा.....

पैसे की माया है पैसा ही काया है,
पैसा ही पैसा तो सृष्टि में छाया है।

पैसा ही शक्ति है पैसा ही भक्ति है,
पैसे बिन घर की बिटिया भी बिकती है।

पैसा ही रोटी है पैसा ही बोटी है,
पैसे बिन इंसा की किस्मत भी खोटी है।

पैसा ही रिश्ता है पैसा ही नाता है,
पैसे बिन इंसा को कुछ भी न भाता है।

पैसा ही आत्मा है पैसा ही परमात्मा है,
पैसा ही करता है रिश्तों का खात्मा है।

पैसा ही पिता है पैसा ही माता है,
पैसे बिन भाई बन्धु न कोई भ्राता है।

पैसा ही पूजा है पैसा ही देवता है,
पैसे बिन ईश्वर का दर्शन न होता है।

पैसा ही सूक्ति है पैसा ही मुक्ति है,
पैसे बिन ईश्वर की सृष्टि भी रुकती है ।।

डॉ. लक्ष्मी रस्तोगी
12, चोपड़ी टोला, चौक, लखनऊ
4, ब्रजधाम कॉलोनी, सीतापुर रोड, लखनऊ
मो. : 9839330470, 9415758696

उदास चिड़िया

लिखा पढ़ा, सब धरा का धरा।
फुनगी पर बैठी, चिड़िया उदास है।

बेटी के हाथ कैसे हों पीले,
बूढ़ी आंखों में आस है।

बारात आयी चली भी गयी।
सिक्कों में खनक कम थी
बिटिया कुंआरी ही रह गयी।

हवन कुंड की अधजली लकड़ियां,
तमाशाइओं के चेहरे काले कर गयी।
बिटिया कुंआरी रह गयी।

अरविन्द रस्तोगी
मशकगंज, लखनऊ

बाल मंच

नीचे दिये गये दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूंढो और पता लगाओ कितने बुद्धिमान हो :–

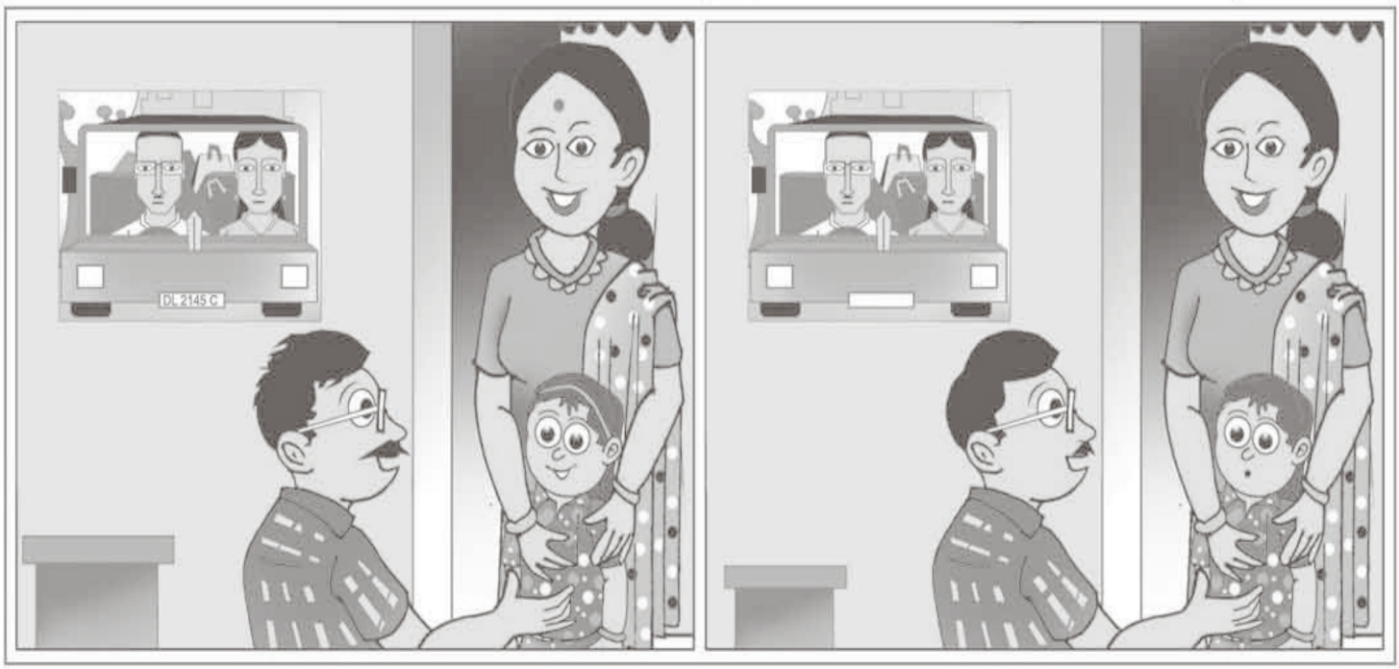

1. तस्वीर वाली गाड़ी में कम उपहार हैं. 2. नंबर प्लेट खाली है. 3. मम्मी की बिंदी गायब है. 4. पापा के बाल में अंतर है. 5. उनकी मूंछ में भी अंतर है. 6.. उनके पीछे का टेबुल छोटा है. 7. बच्ची हंस नही रही है. 8. उसका रिबन भी गायब है.

BABBLE	CONVEY	MUMBLE	STUTTER
BLURT	DRAWL	REMARK	WHINE
CHATTER	EXPRESS	SHOUT	WHISPER
COMMENT	GOSSIP	STAMMER	YELL

E	U	N	S	R	E	T	T	A	H	C	K	R	B
Z	X	E	B	T	B	C	U	Y	C	F	T	E	Z
M	L	P	W	A	U	G	O	S	S	I	P	M	P
B	W	U	R	H	X	T	N	R	Z	T	S	A	X
A	A	Z	T	E	I	U	T	A	J	I	B	R	U
B	R	G	W	X	S	N	B	E	X	Y	M	K	R
B	D	J	T	K	T	S	E	S	R	I	Q	N	Z
L	C	Z	U	T	A	Q	J	N	Q	V	Q	Y	M
E	M	Z	O	N	G	F	E	L	R	T	A	P	U
Y	M	E	H	E	Q	L	B	Z	U	W	L	A	F
E	P	W	S	M	B	B	M	Y	W	W	S	T	Z
V	F	E	R	M	V	E	A	V	O	M	L	R	D
N	U	W	U	O	S	T	A	M	M	E	R	U	C
O	P	M	U	C	F	Y	E	L	L	M	K	L	N
C	R	E	P	S	I	H	W	S	U	I	A	B	P
H	B	M	F	C	R	W	I	H	M	X	S	K	C

सूडोकू : क्रमांक–28

							2	
	6		1	8				9
		5			4	7		
	3				7	6		
	1						4	
		2	5				8	
		8	2			1		
4				3	9		5	
	7							

सुडोकू क्रमांक–27 का सही उत्तर देने वाले पाठक का नाम
प्रगति रस्तोगी, लखनऊ

प्रिय बच्चों, इस स्तम्भ में आप भी अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु सम्पादक, रोहिताश्व पत्र के पते पर प्रेषित कर सकते हैं। आपकी रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।